वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

जुलाई-अगस्त 2025



क्रांतिकारी शहीद उधम सिंह (6)



अंधविश्वास और आत्म विश्वास (9)



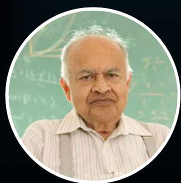
क्या हवा से प्रगट हुई फातिमा शेख (16)



सोशल मीडिया और किशोर (19)



अनन्या की उड़ान (26)



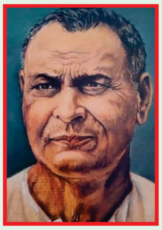
डा. जयंत नार्लीकर को अंतिम सलाम! (45)

30/-

" हमारे समय का इतिहास बस यही न रह जाए कि हम धीरे-धीरे मरने को ही जीना समझ बैठें..." -पाश

मजहब का सच्चा स्वरूप

– राहुल संकरताइन



धर्म या मजहब का वास्तविक स्वरूप क्या है? धर्म मानव जाति की बाल्यावस्था की मानसिक कमजोरियों तथा उससे उत्पन्न मिथकों एवं मान्यताओं का समुच्चय है। यदि इसमें और कुछ है तो वह है पुरोहितों एवं शासकों का धोखा जिससे वे अपनी भेडों को अपने पाले से बाहर नहीं जाने देना चाहते। मनुष्य की मानसिक विकास के साथ-साथ धर्म ने चाहे कितने ही रूप बदल लिए हों, कितने ही नाम बदल लिए हों, फिर भी उनके आंतरिक स्वरूप में भी कोई परिवर्तन नहीं आया है, वे आज भी वैसे ही हैं। हजारों मूर्खतापूर्ण विश्वासों के समर्थन के रूप में जैसे कि वे पाँच हजार वर्ष पहले थे। सूत्र वहीं है, सिर्फ व्याख्या बदलते गए हैं। वही भूत, प्रेत, तांत्रिक वर्ग जिनको देखकर शिक्षित वर्ग घृणा करता है, चाहे आज भी बुद्धिहीन मिल जातें हैं जो अपनी बातों को सही साबित करने के लिए नए रूप से धर्म ग्रंथो के लच्छेदार शब्दों और विज्ञान का लेपन करके प्रस्तुत करतें हैं तब बड़े-बड़े दिमागों वाले अपनी समझ को बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। यदि आप धर्मों के इतिहास, उनके भूत और वर्तमान को ध्यान से पढगे तो आपको पता चल जाएगा कि मूर्ख या पागल ही धर्म में पहले नंबर पर पहुँच सकते हैं।

अपना कर्तव्य

–लाला हरदयाल



अपने धर्म और राजनीति में बुद्धिमान और स्वतंत्र होना और पूँजीवाद या नकली समाजवाद के स्वार्थी पुजारी और षड्यंत्रकारी राजनेताओं द्वारा धोखा न खाना एक महान उद्देश्य है। आज अधिकांश पुरुष और महिलाएं ने तो स्वतंत्र हैं और न ही बुद्धिमान है। वे उन पतंगों की तरह हैं जिन्हें पुजारी या राजनेता अपनी इच्छा अनुसार उड़ाते हैं और डोर हमेशा अपने हाथ में रखते हैं। उन्हें विज्ञान, इतिहास और अर्थशास्त्र का ज्ञान नहीं है। इसीलिए उन्हें लूटा जाता है और मूर्ख बनाया जाता है। मानव जाति की आधी बुराइयों की जड़ अज्ञानता है। शेष आधी बुराइयाँ स्वार्थ से उत्पन्न होतीं हैं। ज्ञान और नैतिकता समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। वे वास्तव में एक-दूसरे पर निर्भर हैं। लेसिंग ने कहा है, ज्ञान का उदेश्य सत्य है और सत्य के लिए विवेक की आवश्यकता होती है। फारसी कवि शेख सादी सभी को निरंतर उत्साह के साथ ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमें ज्ञान की खोज के लिए मोमबत्ती की तरह पिघलना चाहिए। यह आपका कर्तव्य है, भले ही आपको पूरी पृथ्वी की यात्रा करनी पड़े, ओडीसियस की तरह सोचना, डूबते सितारे की तरह, मानव मन की सीमा से परे ज्ञान की तलाश करना।

मुख्य संपादक
कुलजीत डँगर खेड़ा
kuljittarkshil@gmail.com
9781925566
संपादकी मंडल
गुरमीत अम्बाला
tarksheeleditor@gmail.com
94160 36203
जसवंत मोहाली (98555-30721)
अजायब जलालाना (94167 24331)
कृष्ण कायत (98961 05643)

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार बाई, वैनकुवर
+1 672 558-5757
बीरबल भदौड़, कैलगिरी
+ 1 204 894-4371
बलदेव रहिपा, टरांटो
+ 1 41 688 17202
अच्छर सिंह खरलवीर (U.K.)
+ 1 44 748 635 1185
अवतार गोंदारा (U.S.A.)
+ 1 (559) 375-2589

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 150/- रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

राजिन्दर भदौड़, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की तरफ से तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट (जलन्धर) से मुद्रित करके मुख्य कार्यालय तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.), बरनाला, (पंजाब) से तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण के लिए जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रेस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर
+91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए :

www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.wordpress.com
सर्च करें: tarksheel :
www.archive.org
Readwhere.com

संपादकीय

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। यह मानव व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और स्वस्थ लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी है। हम दुनिया में घटित हो रही विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक घटनाओं को मीडिया की खिड़की से देख सकते हैं।

भारत में आधुनिक मीडिया की शुरुआत 1780 ई. में हुई जब पहला अखबार 'बंगाल गज़ट' प्रकाशित हुआ । उस समय से लेकर अब तक मीडिया ने अनेकों प्रकार के उतार-चढ़ाव के रंग देखे हैं। समय-समय पर सत्ता पर काबिज पक्ष ने इस पर पूर्ण या अंशिक रूप में अंकुश लगाया।अगर वर्तमान समय की बात करें तो इसकी गिरावट चरम सीमा पर है। इस गिरावट का कारण इस पर राजनीतिक और कार्पोरेट जगत का नियंत्रण और अधिक पैसा कमाने की लालसा है। आज फर्जी खबरों का प्रचार- प्रसार आम बात है। जब हम कोई खबर देखते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे ये खबर न होकर सत्ता पक्ष का विज्ञापन हो। राजनितिक लोग हर तरह के मीडिया का प्रयोग जनमत को प्रभावित करने या समुदायों का ध्रुवीकृत करने के लिए अकसर ही करतें हैं।अधिकतर चैनल मालिकों, संपादकों और पत्रकारों का ध्यान पैसा और टी आर पी को बटोरने में लगा हुआ है और खोजी पत्रकारिता कहीं पंख लगाकर उड़ गई है। इन मुद्दों के कारण पत्रकारिता की तटस्थता कमजोर हो रही है। टी. वी. चैनलों पर सनसनीखेज, अपराध जगत, अंधविश्वास फैलाने वाले , सेलीब्रिटी गपशप, ब्रेकिंग न्यूज़ आदि में तथ्यों को तोड़-मरोड़ के पेश किया जाता है, जिस से सच्चाई विकृत होती है। अधिकतर मीडिया संस्थान बिना उचित जाँच पड़ताल के असत्यापित या पक्षपातपूर्ण दावे प्रस्तुत करते हैं। लगभग सभी चैनल शाम के समय 'प्राइम टाइम' के नाम से प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं। प्रख्यात यूट्यूबर ध्रुव राठी ने भारत में सबसे ज़्यादा टी. आर. पी. वाले चार चैनलों- ज़ी न्यूज़, आज तक, इंडिया टी. वी. और न्यूज़ -18 के 'प्राइम टाइम' कार्यक्रमों की लगभग दो महीनों की एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट पेश की है। इस रिपोर्ट में इन सभी चैनलों के 50-50 'प्राइम टाइम' कार्यक्रमों का विश्लेषण किया गया,जिस में देखा गया कि अधिकतर कार्यक्रमों में सांप्रदायिकता भड़काने वाले मुद्दे, विपक्ष की निंदा, मोदी जी प्रशंसा, पाकिस्तान का भंडी प्रचार आदि मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया और हैरानी की बात यह है कि इन प्रोग्रामों में बहुत कम सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा हुई । इस रिपोर्ट से पता चलता कि हमारा मीडिया कितना रसातल की ओर जा रहा है।

'World Press Freedom Index' के मुताबिक भारत, पत्रकारों के लिए सबसे खतरनाक देशों में से एक है। विशेषकर भ्रष्टाचार, सत्ता पक्ष के खिलाफ बोलने या अपराध को उजागर करने जैसे मुद्दों पर रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों को कानूनी उत्पीड़न, राजद्रोह, मानहानि और आतंकवाद विरोधी कानूनों का इस्तेमाल करके जेलों में डाल दिया जाता है। बहुत सारे सच्च की आवाज़ बुलंद करने वाले पत्रकारों को मौत के घाट भी उतार दिया गया हैं, जिसमें गौरी लंकेश, संदीप कोठारी, रामचंद्र छत्रपति, मुकेश चंद्राकर आदि अनेकों के नाम लिए जा सकतें हैं।

इस सब के बावजूद कुछ स्वतंत्र पत्रकार और मंच अभी भी मौजूद हैं जो सार्वजनिक मुद्दों को आम जनता के सामने रखते हैं और मुख्यधारा के मीडिया को चुनौती दे रहें हैं । स्वतंत्र पत्रकारिता को मजबूत करना और मीडिया की जवाबदेही को लागू करना स्वस्थ लोकतंत्र के लिए अतिआवश्यक है

मनुष्य जीवन



- राजिन्दर भदौड़

(हमारे दिमागों में बचपन से ही यह बात भर दी जाती है कि हमारा जीवन भगवान की ओर से दिया गया एक उपहार है। हमारी सांसे सीमित है। जब यह सीमित साँसे समाप्त हो गई तो भगवान विशेष जमदूत के जरिए हमें ऊपर बुला लेगा और हमें हमारे कर्मों के मुताबिक स्वर्ग या नर्क की सीट मिल जाएगी। इस बात में कितनी सच्चाई है, हमें इस की पुरी सच्चाई का पता इस निबंध को पढ़ने के बाद चल जाएगा। आखिर मनुष्य कहाँ से आता है और मृत्यु के बाद कहाँ चला जाता है ????)

हम क्या हैं? जीवन में हम जो दुःख और सुख अनुभव करते हैं, उसके क्या कारण हैं? हम कितने समय तक जीवित रह सकते हैं? हमारी बीमारियों के कारण क्या हैं? हम कहाँ से आये हैं और मरने के बाद कहाँ जाते हैं? ऐसे कई प्रश्न हैं, जिनकी वास्तविकता को यदि हम समझ लें तो बहुत सी समस्याओं को समझा और सुलझाया जा सकता है।

हमारे समाज के मन में एक बात बैठ गई है कि मानव जीवन ऊपर वाले (ईश्वर) की ओर से एक उपहार है। कोई भी व्यक्ति ईश्वर द्वारा गिनकर दी गई साँसों की पूँजी (गिनती) से अधिक या कम नहीं ले सकता। जीवन तब समाप्त हो जाता है जब दिन पूरे हो जाते हैं और ऊपर से बुलावा आ जाता है। जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाने के लिए या अगले जन्म में स्वर्ग में स्थायी निवास प्राप्त करने के लिए भजन-कीर्तन या किसी डेरे/साधु से जुड़ना आवश्यक है। इस जरूरत की तलाश में हम किसी धार्मिक स्थल, किसी डेरे, किसी बाबा (एजेंट) की तलाश करते हैं जो हमें ईश्वर से मिला दे और ऊपर से अपनी सिफारिश करके हमें 'स्वर्ग' की किसी अच्छी कॉलोनी में फ्लैट दिला दे। इसी कारण से, औसत व्यक्ति अगले जीवन की सुख-सुविधाएं प्राप्त करने के लिए स्वयं को आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से जोखिम में डाल देता है। इस जन्म की कठिनाइयां उसे छोटी या अल्पकालिक लगती हैं, क्योंकि मृत्यु के बाद लाखों-करोड़ों वर्षों के लिए व्यवस्थाएं करनी होती हैं। इस जीवन में जो कुछ भी प्राप्त हो रहा है उसे पूर्वजन्मों के कर्मों का फल मानकर वह अपनी अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति को त्याग देता है। उनके मन में इस जीवन की कठिनाइयों पर काबू पाने के बारे में प्रश्न गायब हो जाते हैं। मजदूर वर्ग को लूटने के लिए चालाक और लुटेरे वर्ग ने उनके मन में यह बात डाल दी है कि अगले जन्म में अगर सुख-सुविधाएं चाहिए तो दान-पुण्य, भक्ति, पूजा-पाठ करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि जो लोग दूसरों के श्रम पर पलते हैं, उन्होंने श्रमिकों के मन में यह उपदेश डाला है कि जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे दान कर दो और अगले जन्म में सुख-सुविधाओं का आनंद उठाओ। दूसरों को उपदेश देने वाले लोग इस जन्म में सभी सुख-सुविधाओं का आनंद लेने के साथ-साथ अपनी सुरक्षा के लिए सशस्त्र अंगरक्षक भी रखते हैं।

एक बाबा, लोगों को यह कहकर गुमराह करता है कि जब दी गई श्वासों की संख्या पूरी हो जाती है, तो धर्मराज के जमदूत हमारी आत्मा को धर्मराज के पास ले जाते हैं और धर्मराज पृथ्वी पर उसके द्वारा किए गए कर्मों का लेखा-जोखा लेते हैं, और परिणामस्वरूप उसे नर्क या स्वर्ग भेज देते हैं। सवाल यह उठना चाहिए कि जब ऊपर वाले के लिखे बिना पत्ता भी नहीं हिलता तो धर्मराज को भी ऊपर वाले से हिसाब मांगना चाहिए। इन उपदेशकों के अनुसार बुरे कर्मों के कारण नरक की यातनाएं भुगतने के लिए तैयार किए जाने का भय इस प्रकार है कि वहां उन्हें उबलते तेल के कड़ाहों में डाल दिया जाता है, आग से गर्म लाल-लाल खंभों से लिपटा दिया जाता है, खून की बहती नदियों में डुबोया जाता है तथा सुई के छेद से गुजारा जाता है। कोई सोचता है कि इतने बड़े शरीर को सुई के छेद्र से होकर गुजरना बहुत कठिन होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि उनके अनुसार आत्मा अमर है और उस पर अग्नि, जल आदि किसी भी चीज का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फिर शरीर को जला दिया जाता है या जमीन में दबा दिया जाता है, तब

धर्मराज दंड किसे देते हैं? यह दुष्प्रचार समाज को डराने के लिए किया जाता है ताकि हम स्वर्ग जाने की लालसा में बहककर, अपने खून-पसीने से कमाए गए धन से इस जीवन को आसान बनाने के बजाय, दान के रूप में इन लुटेरों को लुटा देते हैं। दूसरा बाबा/तांत्रिक यह कहकर भरमातें हैं कि आपके परिवार के दुखों और कष्टों का कारण आपका कोई मृत पूर्वज है, जिसकी आत्मा की अभी तक मुक्ति नहीं हुई है, तथा वो उनसे पूजा करवाना चाहता है। फिर सवाल यह उठता है कि बाबाओं की शिक्षा के अनुसार जब हमारा पूर्वज मर गया, उनकी आत्मा को भी जमदूत धर्मराज के पास ले गए थे। धर्मराज ने उन्हें उनके कर्मों के अनुसार नरक/स्वर्ग भेजा था, तो वे पृथ्वी पर वापस कैसे आये?

एक बहुत ही रोचक सच्चा उदाहरण

मैं और मेरे अन्य रिश्तेदार, हमारी रिश्तेदारी के परिवार के एक शराबी व्यक्ति को समझाने के लिए एकत्र हुए, क्योंकि परिवार के मुखिया की शराब पीने की आदत के कारण पूरा परिवार कष्ट झेल रहा था। घर में हर दिन कोहराम मचा रहता था, बच्चे दिन-रात डर में रहते थे और आर्थिक और सामाजिक रूप से स्थिति बहुत खराब थी। हर कोई यथासंभव तर्क देकर समझाने की कोशिश कर रहा था। कुछ देर के लिए उस शराबी ने सबको चुप करवा दिया। वो कहने लगा, ''मैं शराब को हाथ भी नहीं लगाउँगा, कोई बुरा काम भी नहीं करुँगा, अगर इस जन्म में मेरे भाग्य में जो लिखा है उसे मैं पूरा नहीं करूँगा तो अगले जन्म में धर्मराज मुझे ऐसा करने पर मजबूर करेंगे। मेरा यह जीवन तो बर्बाद हो ही गया, मैं अपना अगला जन्म क्यों बर्बाद करूं?''

यही विचार इस पूरी भ्रष्ट व्यवस्था के जीवन को लम्बा करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। बीमारी है तो दुर्भाग्य है, रोजगार नहीं है तो दुर्भाग्य है, शिक्षा नहीं है तो दुर्भाग्य है, गरीबी है तो दुर्भाग्य है, महिलाओं, बच्चों, दलितों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार है तो यह ऊपर वाले की वजह से है।

दुर्घटनाओं में मौतें हो रही हैं, तो ऊपर से निमंत्रण आया है, वगैरह।

आगे सजीव जगत के संबंध में हमारा मानना है कि सजीव जगत ब्रह्मांड के विकास के साथ अस्तित्व में आया है। पृथ्वी का निर्माण हुआ, जो पहले आग का गोला था, फिर धीरे-धीरे ठंडा हो गया। जब यह ठंडा हो गया तो इस पर। पानी की उत्पत्ति हुई। पहले पानी में एक कोशिकीय सूक्ष्मजीवों, फिर धीरे-धीरे बहु कोशिकीय सूक्ष्मजीवों की उत्पत्ति हुई। फिर रीड़धारी, रीड़धारु चतुष्पाद, स्तनधारी आदि पैदा हुए। मनुष्य इस सृष्टि के विकास की सर्वोच्च उपज है, लेकिन मानव विकास की दृष्टि से हम अभी भी बहुत पिछड़े हुए हैं। मानव सहित सम्पूर्ण पर्यावरण, इस ब्रह्मांड में हो रहे भौतिक, रासायनिक और जैविक परिवर्तनों का परिणाम है। प्रत्येक जीवित वस्तु का औसत जीवनकाल यह है कि कोई भी जीवित वस्तु जितनी तेजी से बढ़ती/विकसित होती है, उतनी ही जल्दी उसका अंत हो जाता है। सभी जीव जन्म के समय से ही प्रकृति से वायु, जल, एवं आहार ग्रहण कर बड़े होते हैं तथा अपने जीवन काल के अंत में, मृत्यु के पश्चात, विभिन्न प्रकार की गैसों/पदार्थों में परिवर्तित होकर इसी प्रकृति में समाहित हो जाते हैं।

जब तक हमारा समाज सत्य जानने के मार्ग पर नहीं चलेगा, तब तक हम यहां मौजूद दयनीय जीवन स्थितियों से छुटकारा नहीं पा सकेंगे। हम जिस वातावरण में रहते हैं, उसमें अगर हमें हवा, पानी, भोजन और रचनात्मक सोच जैसी बुनियादी जरूरतें नहीं मिलतीं, तो हम मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं रह सकते। यदि हम प्रदूषित वातावरण में रहेंगे, तो हमें बीमारियाँ अधिक तेजी से और अधिक बार होंगी, जिसके कारण हम प्राकृतिक जीवन जीने के बजाय जल्दी मर जायेंगे। अतः सही मायनों में यदि हम अपना भविष्य (आने वाला समय, मृत्यु के बाद का समय नहीं) सुधारना चाहते हैं। यदि हम लंबा जीवन जीना चाहते हैं, और यदि हमारी भावी पीढ़ियां (बच्चे) स्वस्थ और अच्छा जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन में सभी प्रकार के प्रदूषण और खराब जीवन स्थितियों को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

जिन विकसित देशों ने ऐसे वास्तविक कारणों की पहचान कर ली है, उन्होंने अपने सड़क निर्माण और यातायात नियमों को गंभीरता से लागू किया है, पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाया है तथा खाद्य उत्पादों को मिलावट/विषाक्तता से मुक्त किया है, जिसके परिणाम स्वरूप वहां की जनसंख्या भारत की जनसंख्या से औसतन15-20 वर्ष अधिक जीवित रहती है।

बौद्धिक दरिद्रता



- गुरचरन नूरपुर

जब सुकरात वृद्ध हो गए तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, ''पूरे एथेंस में प्रचार करो कि सुकरात से बड़ा कोई अज्ञानी नहीं है।'' शिष्यों ने पूछा, ''आप क्या कह रहे हैं? लोग तो सोचते हैं कि सुकरात जितना बुद्धिमान और ज्ञानी कोई नहीं है? लेकिन आप कह रहे हैं कि मुझ जैसा अज्ञानी कोई नहीं है?''

सुकरात ने कहा, ''हाँ, जब मैं नहीं जानता था, तो यह एक भ्रम था कि मैं बहुत कुछ जानता हूँ। अब जब मैं कुछ जानता हूँ, तो पता चला है कि मैं बहुत अज्ञानी व्यक्ति हूँ।''

ऐसा कहा जाता है कि उस दिन एथेंस के बुजुर्गों ने कहा था कि सुकरात को ज्ञान प्राप्त हो गया है।

ज्ञान जहाँ मानव मन के भीतर के अंधकार को मिटाने का कार्य करता है, वहीं यह, यह भी बताता है कि सदियों से मानव मन में बैठी रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और पुरातन अवधारणाओं की जंजीरें कितनी मजबूत हैं, जिन्होंने मनुष्य को पीढ़ी दर पीढ़ी बांधे रखा है। मनुष्य चाहे कितना भी उन्नत प्राणी क्यों न हो गया हो, उसमें सदियों पुरानी पाशविक प्रवृत्तियाँ आज भी विद्यमान हैं। शायद यही कारण है कि हमें जंजीरें पसंद हैं। पुरानी मान्यताएं चाहे कितनी भी खोखली क्यों न हों, उन्हें त्यागने का साहस मानव जाति में बहुत कम देखने को मिलता है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो ऐसा करने का साहस कर पाते हैं। पुराने समय में लोग सोचते थे कि बुरी नजर से बचने के लिए नई बनी झोपड़ी पर टूटा हुआ जुत्ता टांग देना चाहिए, लेकिन आज के पढ़े-लिखे लोग लाखों रुपए का मकान बनाकर भी बुरी नजर से बचने के उपाय ढूंढतें हैं। ये उपाए अब बाजार में नजरबट्टू के नाम से बेचे जा रहे हैं। बहुत से लोग तो अपने आप को पढ़ा लिखा कहते हैं मकान बनाने से पहले वो किसी तथाकथित ज्योतिषी या वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ के चरणों में जाते हैं, कि आखिर हमें इतना पैसा तो लगाना ही है तो मकान में किसी भी तरह की असुविधा नहीं होनी चाहिए। अब तो मामला इससे भी आगे बढ़ गया है, कुछ चतुर लोगों ने इंसान की दिमाग़ में पड़ी पुरानी रूढ़िवादी जंजीरों की पहचान कर ली है, उन्होंने इन झूठी, आधारहीन समस्याओं को रोकने के लिए टेलीविजन, युटयुब, फेसबुक इत्यादि पर सभी परेशानियों के समाधान के लिए अलग- अलग यंत्र बेचने शुरू कर दिए हैं। बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए मंत्र पढ़कर बनाए गए उपकरण भी एक फोन कॉल से आपके घर तक पहुँचाए जा सकते हैं। अशिक्षित लोग, जिनमें सोच और समझ की कमी है, इन झूठे उपायों के लिए पैसा देने को तैयार हैं। कोई रोकने वाला नहीं, सरकार, कानून सबके सामने यह धंदा खूब चल रहा है। न केवल वे लोग जो सदियों पुरानी झूठी मान्यताओं को लेकर चलते हैं, बल्कि वे शिक्षित लोग भी जो दूसरों को ज्ञान बांटते हैं वे भी इन शरारती तत्वों के शिकार हैं। इसमें न तो सरकारी नीति-निर्माताओं और न ही कानून को कोई दोष नजर आ रहा है। वे जानते हैं कि व्यक्ति को जिस प्रकार का बुद्धिहीन बनाने की आवश्यकता है, वही काम अपने-आप हो रहा है।

हमारे पाठ्यक्रम या सिलेबस में इस बात की कोई चिंता नहीं है कि स्वस्थ दिमाग वाला व्यक्ति पैदा होना चाहिए। बल्कि रूढ़िवाद की जड़ें और मजबूत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। यह कोशिश निरंतर चल रही है कि मानव बुद्धि को अधिकाधिक मूर्ख कैसे बनाया जाए ?

तथाकथित ज्ञानी, बाबा, स्वामी, प्रचारक लोग मानव को सभ्य बनाने का, यानी शिक्षित करने का ठेका ले रहे हैं। सुबह स्कूल में प्रवेश करते समय बच्चे को भजन पढ़ाए जाते हैं और पुस्तक में उसे न्यूटन और आइंस्टीन की पुस्तकों में लिखे सिद्धांतों को सिर्फ रट्टा लगवाया जाता है। बच्चे को शिक्षित करने का ठेका लेने वाले व्यक्ति (ठेकेदार) की मानसिकता व्यावसायिक हितों पर अटकी हुई है। इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके स्कूल या कॉलेज की नौकरी तक पहुँचे शिक्षक की मानसिकता भी पुरातनता से जुड़ी होती है। समाज की अच्छाई और बुराई का पूरा नियंत्रण व्यवसायियों के हाथों में जा रहा है। अच्छी सोच का विकास कैसे होना चाहिए? इस बात की कोई भी चिंता नहीं कर रहा। आज जब हम अपने समाज का विश्लेषण करते हैं, तो हमारे समय का सबसे बड़ा संकट यह है

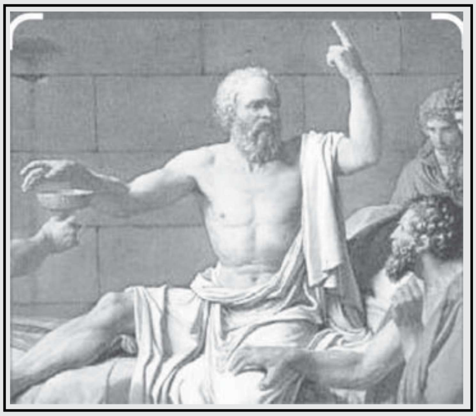
कि हमारे ग्रह पर जनसंख्या बढ़ रही है, लेकिन समझदार मनुष्यों की संख्या कम हो रही है। एक तरह से हम इस युग को मानवीय संकट का समय कह सकते हैं। हमारे पास बड़े-बड़े लेखक हैं, उपदेशक हैं, धर्मोपदेशक हैं, बड़ी-बड़ी संस्थाएं चलाने वाले लोग हैं, बहुसंख्यक संत हैं, हमारा नेतृत्व करने वाले हमारे सामाजिक और राजनीतिक नेता हैं, ये सब बहुत बड़ी संख्या में हैं, लेकिन फिर भी मानवता का संकट है। हमारी शिक्षा अच्छे मनुष्य पैदा करने की ओर नहीं, बल्कि यांत्रिक मस्तिष्क पैदा करने की ओर निर्देशित है। धर्म और कर्म के क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन करने वाले वे ही लोग हैं जिन्होंने हमें सदैव मोह माया को त्यागने की सलाह दी, लेकिन स्वयं के लिए ही सबसे अधिक माया का संचय किया। समस्या यह है कि यहां अच्छे लोगों की कदर नहीं हैं सत्य और अच्छाई के प्रति समाज का नज़रिया भी बदल रहा है।

विज्ञान के शुरुआती दिनों में यह माना जाता था कि अज्ञानता का अंधकार समाप्त हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ विज्ञान द्वारा निर्मित उपकरणों की मदद से अंधविश्वास पहले से कहीं अधिक तेजी से फैलाया जा रहा है। मानव मन को नियंत्रित करने के लिए कई तरीके ईजाद किए जा रहे हैं। उसके लिए झूठी समस्याएं पैदा की जा रही हैं, या यूं कहें कि उसे झूठी समस्याओं में फंसाया जा रहा है और इन झूठी समस्याओं के झूठे उपाए बेचे जा रहे हैं। परिणामस्वरूप, मनुष्य उत्तरोत्तर संवेदनहीन होता जा रहा है। टीवी चैनलों और शोशल मीडिया पर विज्ञान और पैसे के प्रभुत्व के कारण हमारे सामने चमत्कारी वस्तुओं का तथाकथित बाजार परोसा जा रहा है।

आज हमारा समाज अनेक प्रकार की बुराइयों, विसंगतियों, बीमारियों, कठिनाइयों एवं समस्याओं का शिकार हो रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा बौद्धिक पक्ष गहरे रसातल की ओर बढ़ रहा है। मनुष्य भावनाहीन होता जा रहा है। हमारे भीतर संवेदनशीलता कम होती जा रही है। यहाँ केवल अच्छा साहित्य ही मनुष्य को सर्वोत्तम एवं गहन मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। हमें जितना संभव हो सके उतना साहित्य पढ़ना चाहिए और अपने बच्चों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

साहित्य को केवल साहित्यिक गतिविधियों और आयोजनों तक सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि इसका विस्तार दूर-दूर तक करना चाहिए।आजकल साहित्य का सृजन केवल साहित्यकारों के लिए हो गया है, या यूं कहें कि साहित्यकारों तक ही सीमित हो गया है। साहित्यिक समितियों का कार्य केवल किसी की रचना को सुनना, उसे किसी और को पढ़कर सुनाना और फिर अगले दिन समाचार-पत्र में उसकी खबर प्रकाशित करवाने तक ही नहीं होना चाहिए। बल्कि, हमें अपने कार्य और विचारों को फैलाने की जरूरत है। आज लेखकों को किताबों से आगे सोचने की जरूरत है। नये और तर्कशील विचारों के प्रसार के लिए नये तरीके खोजने की आवश्यकता है। साहित्य मनुष्य के भीतर की भावनाओं और संवेदनाओं को जीवित रखने का कार्य करता है। यद्यपि पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है, परन्तु मनुष्य दिन-प्रतिदिन अकेला होता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में समाज को सही रास्ता दिखाने के लिए अच्छे साहित्य को लिखने की आवश्यकता है, तथा कूड़ा-कचरा हटाकर लोगों तक अच्छा साहित्य पहुंचाने की भी बहुत आवश्यकता है।

सुकरात



दुनिया भर के लोगों को संवाद का ढंग सिखाने वाले सुकरात, का जन्म 469 ईसा पूर्व ग्रीक के शहर एथेंस में हुआ। उन पर युवकों को बिगाड़ने (जो कि झूठ था), देवताओं को नकारने और नास्तिक होने का आरोप लगाते हुए, एथेंस की अदालत ने उन्हें जहर देकर मारने की सजा सुनाई। वे सदैव सत्य के मार्ग पर अडिग रहे और उन्होंने जहर का प्याला पीकर खुशी-खुशी अपने प्राण त्याग दिए।

शहीदी दिवस पर विशेष

क्रांतिकारी शहीद उधम सिंह

– राकेश कुमार

''अंग्रेजों के लिए भारतीयों को कुचल देना असंभव है। मैंने यह सब अपना रोष प्रकट करने के लिए किया है और अपने देश के अधिकारों को बहाल करने के लिए अगर मैं मर भी जाऊं तो कोई गम नहीं। मेरी इच्छा अपने देश को आजाद देखने की पूरी नहीं हुई, मैं अपने लोगों की खातिर मरना चाहूँगा बजाय इसके की अंग्रेजी आतंकवाद के प्रभाव में दययनीय हालात में जीना।''(उधम सिंह जी के पास अदालत में बयान देते समय जो कागज़ थे उनमें से एक अंश)



अक्सर यह कहा जाता है कि शहीद उधम सिंह ने जलियांवाला बाग का खूनी साका अपनी आँखों से देखा और 21 वर्ष तक उसका दर्द अपने मन में रखा और आखिरकार 13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटन हाल में माइकल ओ डायर की हत्या करके जलियांवाला बाग के शहीदों की मौत का बदला लिया।

गीतों, कविताओं, नाटकों और फिल्मों इत्यादि में भी यही दिखाया जा रहा है और उधम सिंह को एक ऐसे नायक के रूप में चरित्र किया जा रहा है जो माइकल ओ डायर को मारकर जलियां वाले बाग का बदला लेता है। यह बात उनके विचारों के मुताबिक सही नहीं है। इतिहास में कहीं पर भी उधम सिंह द्वारा कोई ऐसा शब्द नहीं लिखा गया है, जिसमें उन्होंने कहा हो कि मैंने जलियांवाला बाग का बदला लेने के लिए कैक्सटन हाल में ब्रिटिश अधिकारियों पर गोलियां चलाई।

जून 1997 में ब्रिटिश सरकार द्वारा शहीद उधम सिंह के केस से जुड़ी पांच फाइलें जारी करने के बाद शहीद उधम सिंह के जीवन के बारे में कुछ और तथ्य सामने आए हैं। इस बात का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि 13 –14 अप्रैल 1919 को उधम सिंह स्वयं जलियाँवाले बाग में मौजूद थे।

भारत सरकार के गृह विभाग ने रिपोर्ट में कहा है कि पूछताछ में इस बात की पुष्टि नहीं हुई कि वे उस वक्त अमृतसर में मौजूद थे या नहीं।

इस क्रूर घटना के लिए सीधे तौर पर माइकल ओ डायर नहीं बल्कि डायर दोषी था। 11 अप्रैल 1919 को अमृतसर शहर सेना को सौंप दिया गया था। सेना की कमान डायर के हाथ में थी। डायर ने स्वयं सैनिकों को लेकर जलियाँवाले बाग में लोगों पर गोलियां चलवा दी। हंटर कमेटी और सैन्य आयोग ने भी इस घटना के लिए डायर को दोषी ठहराया था।

प्रामाणिक तथ्य बताते हैं कि उधम सिंह गदर आंदोलन से जुड़े थे। वो भारत देश को ब्रिटिश साम्राज्य से आजाद देखना चाहते थे। वे हमेशा भारत के लोगों के अधिकारों और सामाजिक समानता की बात करते थे। उन्होंने भगत सिंह को अपना सबसे अच्छा दोस्त बताया है।

तथ्य बताते हैं कि जब उधम सिंह अमेरिका में थे तो वो गदर पार्टी के प्रभाव में आए। गदर पार्टी का उद्देश्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करवाना और स्वतंत्रता और समानता की नींव पर राष्ट्रीय लोकतंत्र की स्थापना करना था। अमेरिका में गदर पार्टी ने उन्हें अवैध अप्रवासियों को गदरियों के गुप्त स्थानों तक पहुंचाने और पार्टी के लिए धन इकट्ठा करने का कार्य सौंपा। 27 जुलाई 1927 को वे हवाई जहाज से अमेरिका से कराची आए और जब कराची में हुई तलाशी के दौरान उनके पास से गदर पार्टी का साहित्य जब्त किया गया तो उन पर जुर्माना लगाया गया।

डायरेक्टर इंटेलिजेंस ब्यूरो (गृह विभाग,भारत सरकार) की तरफ से वर्ष 1934 में गदर डायरेक्टरी जारी की गई थी जिसमें अमेरिका, यूरोप, अफगानिस्तान और भारत में गदर आंदोलन में भाग लेने वाले लोगों के नाम शामिल थे। इस डायरेक्टरी के पृष्ठ नंबर 267 में उधम सिंह के नाम का उल्लेख है जिसमें कहा गया है कि अमेरिका में रहने के दौरान वे गदर पार्टी के संपर्क में आए और उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर गदर पार्टी द्वारा प्रकाशित गदर की गूंज और अन्य विद्रोही साहित्य पढ़ने लगे। वे अगस्त 1927 में भारत आए और अवैध हथियार रखने के संदेह में उन्हें 30 अगस्त 1927 को अमृतसर में गिरफ्तार कर लिया गया। उनके पास से दो रिवाल्वर, एक पिस्तौल और गदर गूंज की कुछ प्रतियाँ बरामद हुई थी। उन पर शस्त्र अधिनियम की धारा 20 तहत मुकदमा चलाया गया और उनको 5 वर्ष की सख्त सजा हुई। उनका उद्देश्य भारतीयों पर शासन करने वाले यूरोपीय लोगों को मारना था और उन्हें बोल्शेविकों से सहानुभूति थी क्योंकि उनका उद्देश्य भारत को विदेशी कब्जे से मुक्त कराना था।

उधम सिंह ने नौजवान भारत सभा के सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा, ''क्रांति का अर्थ विदेशी खूनी जबड़ों से मुक्ति। लूट-पाट और उस व्यवस्था का अंत जो अमीरों को और अमीर बनने और गरीबों को गरीबी में पिसने के लिए मजबूर करती है। साम्राज्य व्यवस्था के कारण लाखों लोग मजदूरी, कुल्ली- गुल्ली, शिक्षा और इलाज की बुनियादी जरूरतों के लिए मोहताज हैं। कौन सा ऐसा पत्थर दिल मनुष्य है जिसका मजदूरों, किसानों की बेबसी और लाचारी को देखकर खून नहीं खौलेगा। वो अपनी जिंदगी और खून से पूँजीवाद का महल बनाता है और आप रात को भूखा, खुले आकाश की छत के नीचे सोता है। ऐसे निजाम को जलाकर खत्म क्यों नहीं कर दिया जाता? अब इंकलाब, इंकलाब के कगार पर खड़ा है यदि हम करोड़ों लोग अपने भाग्य के खुद करता बन जाएँ तो परिणाम एक क्रांति होगी और यह क्रांति हमारी स्वतंत्रता होगी।''

उधम सिंह ने कहा था, ''स्वतंत्रता की नींव क्रांति है। गुलामी के खिलाफ क्रांति मनुष्य का कर्तव्य है। यह मनुष्य की मानवता का आदर्श है, जो राष्ट्र अधीनता स्वीकार करके झुकता है, वो मृत्यु को स्वीकार करता है क्योंकि स्वतंत्रता ही जीवन है और गुलामी मृत्यु है। स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हम इसे हासिल करके रहेंगे। इस महान आदर्श को हासिल करने के लिए अपनी जवानी को भेंट करने से कम और क्या हो सकता है।''

13 मार्च 1940 को उधम सिंह ने लंडन के कैक्सटन हाल में केवल माइकल ओ डायर को ही नहीं बल्कि 4 अंग्रेज अधिकारियों माइकल ओ डायर, मारकुयस आफ जैटलैंड, लुईस डेन, लॉर्ड लैमिंगटन पर छः गोलियां चलाई जिसमें माइकल ओ डायर की मौके पर ही मृत्यु हो गई और अन्य घायल हो गए। ये सभी भारत के गवर्नर रह चुके थे और भारत की आजादी के विरोधी थे। जब उधम सिंह को मौके पर ही पकड़ लिया गया तब उसने पुछा कि जैटलैंड मर गया है या नहीं, यह भी मरना चाहिए था। मैंने उसे भी दो गोलियाँ मारी थी। माईकल ओ डायर ने पंजाब के गवर्नर रहते हुए विशेष अदालतों के माध्यम से करतार सिंह सराभा, विष्णु गणेश पिंगले, भाई जगत सिंह, भाई हरनाम सिंह सियालकोटी, डॉक्टर मथुरा दास और अन्य को फांसी दे दी थी। गदरियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई, काला पानी भेजा गया, कई लोगों की संपत्ति जब्त कर ली गई और उनको यातनाएं दी गई। गदरियों को पकड़वाने के लिए अंग्रेजों की सहायता करने वाले टोडियों को बड़े-बड़े पुरस्कार दिए गए, जमीन उपहार में दी गईं।

उधम सिंह के पकड़े जाने के बाद उसके पास से बरामद हुई साल 1940 की डायरी में लिखा हुआ था,

''मैने दुनिया देख ली है, बस एक ख्वाहिश रह गई है, मैं भारत को आजाद देखना चाहता हूँ।''

पकड़े जाने के बाद उन्होंने अपना नाम मोहम्मद सिंह आजाद बताया। वो बताते हैं कि यह नाम मुस्लिम-सिख-हिंदू एकता का प्रतीक है।

उधम सिंह, भगत सिंह को अपना सबसे अच्छा मित्र मानते थे। उन्होंने 30 मार्च 1940 और 5 अप्रैल 1940 को

ब्रिकस्टन जेल में अपने मित्र जौहल सिंह को लिखे पत्र में इस बात का जिक्र किया था।

उधम सिंह ने जेल में भगत सिंह और उनके साथियों के नक्शेकदम पर चलते हुए 42 दिनों की भूख हड़ताल रखी थी। उनका भूख हड़ताल करने का वास्तविक उद्देश्य दुनिया का ध्यान भारत की स्वतंत्रता की ओर आकर्षित करना और अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जा रहे अत्याचारों पर ध्यान केंद्रित करवाना था।

उधम सिंह के मुकदमे दौरान गदर पार्टी अमेरिका ने अजमेर सिंह के माध्यम से हर तरह से मदद की। अजमेर सिंह गदर पार्टी से जुड़े थे और कैलिफोर्निया के स्टाकटन में गुरुद्वारे के सचिव थे। यह अभियोजकों से टेलीग्राम के माध्यम से लगातार पूछ रहे थे कि आजाद को कानूनी दृष्टि से बचाने के लिए क्या किया जा रहा है उन्होंने ट्रायल के लिए पैसे भी भेजे।

उधम सिंह अदालत में अपने साथ आठ पृष्ठ लिख कर ले गए और उन पृष्ठों से 25 मिनट तक बोलते रहे।

उन्होंने अदालत में अपने बयान की शुरुआत ही ब्रिटिश साम्राज्य मुर्दाबाद,इंग्लैंड मुर्दाबाद, अंग्रेज लोकतंत्र मुर्दाबाद से की।

देश की आजादी के बारे में उन्होंने कहा, ''मैं मृत्यु दंड से नहीं डरता, यह मेरे लिए कुछ भी नहीं है, मुझे मरने की भी परवाह नहीं है। मैं एक उद्देश्य के लिए मर रहा हूँ, हम ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा उत्पीड़ित है, मुझे मरने पर गर्व है। मुझे अपनी जन्मभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए मरने पर गर्व होगा। मुझे आशा है कि जब मैं मर जाऊँगा तो मेरे हजारों देशवासी तुम गंदे कुत्तों को बाहर निकाल देंगे और मेरे देश को आजाद कराने के लिए आगे आएंगे।''

उधम सिंह के बारे में मौजूद प्रामाणिक तथ्य की स्पष्ट करते हैं कि उधम सिंह का लक्ष्य जलियांवाले बाग की खूनी घटना का बदला लेना नहीं था बल्कि अपने देश को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करवाना था और एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक और समानता पर आधारित न्यायपूर्ण भारत का निर्माण करना था। वे एक बोद्धिक, चिंतनशील क्रांतिकारी थे। जिन्होंने क्रांतिकारी विचारों को धारण किया।

गदरी गुलाब कौर

अमोलक सिंह



जब वह गदरी कारवां में शामिल हुईं तो उनके पति मान सिंह भी उनके साथ थे। जब गदर पार्टी के एक अनुशासित सिपाही के रूप में ''देश के लिए जाने'' का समय आया तो मान सिंह ने अपना मन बदल लिया। उन्होंने पति होने के नाते गुलाब कौर पर भी अंकुश लगाने की कोशिश की। गुलाब कौर गदर पार्टी के झंडे के प्रति पूरी निष्ठा से प्रतिबद्ध रहीं।

उन्होंने मान सिंह को बीच में टोकते हुए कहा, ''तुम कायर निकले हो। अभी भी समय है कि हम ग़दर पार्टी के झंडे नीचे एक साथ देश को आजाद करवाने की लड़ाई में शामिल होएं।'' जब उसने मना कर दिया तो गुलाब कौर ने कहा, ''आज से तुम्हारे और मेरे रास्ते अलग-अलग होंगे।'' बीबी गुलाब कौर ने जातिगत हितों से ऊपर उठकर स्वयं को लोगों के हितों के लिए समर्पित कर दिया।

उन्होंने ग़दर पार्टी के कार्यक्रम को अपने जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत बना लिया।उसने पार्टी के परिवार को अपना परिवार बना लिया जिसने हमारे प्यारे देश को सभी प्रकार के विदेशी और घरेलू शोषण से मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया।

वह पार्टी जिसने एकजुटता का झंडा बुलंद किया। हमारे देश की आजादी के लिए लड़ने वाली ग़दर गुलाब कौर का जीवन स्मरणीय है। ब्रिटिश सरकार द्वारा कारावास के दौरान वे जेल में कैंसर की लाइलाज बीमारी के शिकार हो गये। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने 28 जुलाई 1925 को स्वतंत्रता संग्राम के काफिले को अलविदा कह दिया।

अंधविश्वास और आत्मविश्वास

- हेम राज स्टेनो



अंधविश्वास और आत्मविश्वास दो अलग-अलग और एक दुसरे से विपरीत अवधारणाएँ हैं। जहां पहली व्यक्ति को बौद्धिक दरिद्रता की ओर धकेलती है। व्यक्ति की सोच को विचलित करती है। इस तरह की सोच रखने वाले व्यक्ति को जीवन भर खमियाजा भुगतना पड़ता है। वहीं दूसरी व्यक्ति में सकारात्मक सोच पैदा करती है। आत्मविश्वास व्यक्ति को कुछ नया करने की शक्ति, साहस और दृढ़ संकल्प देता है। इस निबंध से व्यक्ति के अंधविश्वासी होने की हानियाँ और आत्मविश्वासी होने के लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल करें।

अंधविश्वास क्या है ?

किसी भी बात या विचार पर बिना सोचे-समझे विश्वास कर लेना अंधविश्वास कहलाता है। अंधविश्वास का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? आइये इसे एक उदाहरण से समझते हैं। अतीत में जब कोई व्यक्ति चेचक का शिकार होता था, तो यह अंधविश्वास व्यापक रूप से फैल जाता था कि उस व्यक्ति को 'माता' निकली है। इसके उद्भव का कारण माता शीतला का क्रोध बताया गया। इस बीमारी से कितने लोग मरे? कुछ लोग चेहरे पर दाग-धब्बों के कारण बदसूरत दिखने लगे। यह विचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और फिर अगली पीढ़ी तक पहुंचता रहा। जेनर नामक वैज्ञानिक ने वैक्सीन (चेचक की दवा) के बारे में सोचा और उसका आविष्कार किया। इस दवा की वजह से अब उस बीमारी का नामोनिशान नहीं रहा, इस बीमारी से अब लोग न तो मरते हैं और न ही बदसूरत होते हैं। यदि जेनर भी इस अंधविश्वास का शिकार होता और मानता कि यह माता शीतला का प्रकोप है, तो क्या वह इस वैक्सीन का आविष्कार करके मानव जीवन बचा सकता था? नहीं बिलकुल नहीं। वो इस वैक्सीन का आविष्कार तभी कर सके जब वो उन अंधविश्वासों के दायरे से बाहर निकलकर सोचते थे जो उन्हें विरासत में मिले थे।

एक और उदाहरण लीजिए. हमारे दिपावली का त्यौहार मनाया जाता है। हमारे यहाँ अभी भी एक अंधविश्वास प्रचलित है कि दिवाली की रात घर का दरवाजा खुला रखना चाहिए। अगर आप पूछें क्यों? तो इसका उत्तर बहुत सरल है: दरवाजा खुला रखने से लक्ष्मी (माया) घर में आ जायेगी। जरा सोचिए, अगर दरवाजे खुले रखने से पैसा आता, तो जो परिवार गरीबी के कारण अपने दरवाजे लगवा ही नहीं पाते , उनके घर हमेशा खुले ही रहते हैं और माया दौड़कर उनके घर में प्रवेश कर जाती। लेकिन क्या कभी ऐसे गरीब घर में लक्ष्मी का प्रवेश हुआ? क्या उनकी गरीबी दूर हुई? उत्तर बिलकुल नहीं हुई।हमारे देश में एक मिथक यह भी प्रचलित है कि हमारी धरती बैल के सींग पर टिकी है। बूढ़े लोग बच्चों को यह कहानी सुनाया करते थे: "जब बैल को बोझ लगने लग जाता है, तो वह अपने सींग बदल लेता है, जिससे धरती पर भूकंप आ जाता है।" यह अंधविश्वासी कहानी पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। लोग बिना सोचे-समझे इस पर विश्वास करते रहे हैं। जो लोग इस अंधविश्वास के शिकार हो जाते हैं, उन्होंने कभी यह सोचने की कोशिश नहीं की कि धरती का भार उठाने वाला बैल कैसा होगा। दूसरी बात, यदि पृथ्वी बैल के सींग पर खड़ी है, तो बैल कहाँ खड़ा है? लोगों ने बस एक मिथक सुना और बिना सोचे समझे उस पर विश्वास कर लिया।

अब वैज्ञानिकों ने इस मिथक का खंडन कर दिया है। यह सिद्ध हो चुका है कि हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और अपनी धुरी पर भी घूमती है। इससे वैज्ञानिकों को ग्रहण के कारणों का भी पता चला। विज्ञान ने भूकंप के कारणों का भी पता लगा लिया है। यदि वैज्ञानिक आँख मूंदकर यह मान लेते कि पृथ्वी बैल के सींग पर टिकी है, तो वे न तो ग्रहणों और न ही भूकंपों का सटीक कारण बता सकते।

ऐसे अंधविश्वासों के जितने चाहे उतने उदाहरण दिए जा सकते हैं। यह सिलसिला और भी लम्बा होता जायेगा।

लेकिन यहाँ हमारा उद्देश्य अंधविश्वासों की किताब खोलना नहीं है। इन उदाहरणों को देने का हमारा एकमात्र उद्देश्य यह है कि अंधविश्वास मानव मन को सोचने से विचलित करता है। अगर कोई व्यक्ति अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करता तो वह व्यक्ति कैसा है? इसे पूरी तरह समझने के लिए, आइए एक उदाहरण लेते हैं। अगर कोई व्यक्ति गलती करता है तो दूसरा व्यक्ति उसका खंडन कर देता है और कहता है कि मर्द बनो, मर्द बनो। लेकिन अगर कोई जानवर किसी इंसान पर हमला करता है, तो क्या कभी किसी ने किसी इंसान को उस जानवर से यह कहते सुना है कि तुम भी जानवर बनों, जानवर? आपने उन्हें ऐसा कहते हुए नहीं सुना होगा। तो सोचिये, क्यों नहीं? क्योंकि मनुष्य में आत्मचिंतन के माध्यम से सही और गलत का निर्णय करने की बुद्धि होती है। लेकिन पशु जगत में यह नहीं होती। अब यदि मनुष्य सोचने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करता और केवल सुनी-सुनाई बातों पर ही विश्वास करता है, तो फिर मनुष्य और पशु में क्या अंतर रह गया? इस के बारे में पाठक अपने आप निर्णय ले।

अंधविश्वास के नाम पर लूटपाट :

हम सभी रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसी खबरें पढ़ते और सुनते रहते हैं कि किसी बाबा, तांत्रिक या देवी कहलाने वाली महिला ने किसी अंधविश्वासी व्यक्ति से लाखों रुपए ठग लिए। आज की सरकारें भी ऐसे अंधविश्वासों को बढ़ावा दे रही हैं। यदि आप टीवी का बटन दबाएंगे तो आप ऐसी अंधविश्वासी बातें आसानी से देख और सुन सकते हैं।

अंधविश्वासी व्यक्ति विचलित रहता है :

अंधविश्वासी व्यक्ति तो अपने अंधविश्वास का भी पूरी तरह पालन नहीं करता। इसका एक नमूना देखिये. जो लोग भाग्य में विश्वास करते हैं, वे आमतौर पर कहते हैं कि आप चाहे जो भी करें, जो भी घटित हो या आपके साथ घटित हो कर ही रहेगा, क्योंकि यह सब भाग्य में लिखा होता है। लेकिन जो लोग भाग्य में विश्वास करते हैं वे इस बात से सहमत नहीं होते। जैसे ऐसे लोग किसी बच्चे को डांटेंगे और कहेंगे कि अगर पढ़ेगा नहीं तो पास कैसे होगा? दूसरी ओर, वे कहेंगे कि यही उसका भाग्य है। उनसे पूछिए कि उनका भाग्य किसने लिखा है, तो उनका जवाब होगा कि किस्मत की देवी ने लिखा है। लेकिन अगर उनसे यह सवाल पूछा जाए कि अगर बच्चा पास नहीं होता तो उसे डांटा क्यों जाए? तब उनके पास कोई उत्तर नहीं होगा और वे बस आगे-पीछे देखने लग जाएंगे। अत: अंधविश्वास में फंसा व्यक्ति अपने अंधविश्वास पर भी भरोसा नहीं करता। यही कारण है कि अंधविश्वासी व्यक्ति अनिश्चित और विचलित रहता है।

अब बात करते हैं आत्मविश्वास के बारे में:

आत्मविश्वास क्या है? जब कोई व्यक्ति यह सोचता है कि भविष्य में वह जो भी करना चाहता है, उसे वह पूरा कर लेगा। इस प्रकार के विश्वास को आत्मविश्वास कहा जाता है। यह एक सकारात्मक विश्वास है। आत्मविश्वास किसी दैवी शक्ति पर आधारित नहीं है, न ही इसमें अहंकार का कोई तत्व होता है।

अतीत में आत्मविश्वास को किस प्रकार देखा जाता था? इस बारे में भी बात करना अच्छा रहेगा। पहले, आत्मविश्वास को ईश्वर का अनादर माना जाता था। उस समय यह माना जाता था कि जो व्यक्ति अपने आप पर इतना विश्वास करता है कि वह कुछ भी कर सकता है, उसका ईश्वर के प्रति कोई सम्मान नहीं होता। वह स्वयं को भगवान से भी बेहतर मानता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान ही सब कुछ करता है। इसका मतलब यह है कि आत्मविश्वास को अहंकारी विचार मानने का विचार प्रचलित था।

मानव बुद्धि के विकास के साथ, यह विचार कि आत्मविश्वास को ईश्वर के विरुद्ध अपवित्रत माना जाना , अपनी प्रासंगिकता खोने लगा। आत्मविश्वास को मनुष्य के अच्छे गुणों में शामिल किया जाने लगा। इसके इलावा, यह भी कहा गया कि किसी दैवीय शक्ति में विश्वास करने से व्यक्ति का आत्मविश्वास नष्ट हो जाता है। हमारे महान देश भक्त शहीद भगत सिंह ने भी लिखा है ''जब कोई व्यक्ति सोचता है कि जो कुछ भी है, ईश्वर ही सब कुछ है, मनुष्य कुछ भी नहीं है। वह तो मिट्टी का पुतला है। यह विचार मन में आते ही मनुष्य में आत्मविश्वास की भावना नष्ट हो जाती है। उसे लगने लगता है कि वह बहुत कमजोर है। उसे डर लगा रहता है। जब तक यह डर विद्यमान है, तब तक पूर्ण सुख और शांति नहीं मिल सकती।''

आइए अब देखें कि व्यवहार में आत्मविश्वास ने क्या किया है।

जब हवाई जहाज़ का आविष्कार नहीं हुआ था, तब मनुष्य आकाश में उड़ने के बारे में सोचता था। लेकिन अगर

किसी व्यक्ति में ऐसा करने का आत्मविश्वास न हो तो वह कोई रणनीति नहीं सोच पाता। लेकिन मनुष्य ने आत्मविश्वास के साथ हवाई जहाज बनाये। इसीलिए आज मनुष्य आकाश में उड़ता नजर आता है।

कठिनाई के समय में भी आत्मविश्वास से युक्त व्यक्ति कठिनाइयों का आसानी से सामना कर सकता है। इसका उदाहरण हम भगत सिंह के शब्दों को ले सकते हैं। जब पुलिस ने भगत सिंह को झूठे मामले में गिरफ्तार किया तो उन्होंने (पुलिस) उन पर हर तरह का दबाव बनाकर और लालच देकर उन्हें मनाने की कोशिश की। इस संबंध में भगत सिंह ने लिखा,

''कुछ पुलिस अधिकारी मुझे दोनों समय भगवान का नाम लेने के लिए प्रेरणे लगे।''। मैं नास्तिक था। मैं स्वयं यह निर्णय करना चाहता था कि यदि मैं शांति और खुशी के समय में नास्तिक होने का दावा कर सकता हूँ, तो क्या मैं ऐसे कठिन समय में भी अपने सिद्धांतों पर अडिग रह सकता हूँ। बहुत सोचने के बाद मैंने निर्णय लिया कि मैं न तो ईश्वर पर विश्वास कर सकता हूँ और न ही प्रार्थना कर सकता हूँ। मैंने कभी प्रार्थना नहीं की। यह एक परीक्षा का समय था और मैं इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।''

अत: हमारी चर्चा का सार यह है कि आत्मविश्वास और अंधविश्वास एक दूसरे से पूर्णत: विपरीत मान्यताएं हैं। आत्मविश्वास व्यक्ति को कुछ करने की प्रेरणा, साहस और दृढ़ संकल्प देता है, जबकि अंधविश्वास व्यक्ति के मन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चयी और साहसी रहता है। अंधविश्वासी व्यक्ति अपने अंधविश्वास पर पूरी तरह से कायम नहीं रह पाता और डगमगाता रहता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति कठिन समय से गुजरते हुए भी हतोत्साहित नहीं होता। अंधविश्वासी व्यक्ति की मानसिकता पतन की स्थिति में रहती है। आत्मविश्वासी व्यक्ति कोई भी निर्णय सोच-समझकर ही लेता है, जबकि अंधविश्वासी व्यक्ति आलस्य का शिकार रहता है। अंधविश्वास लोगों को सोच-समझकर निर्णय लेने से रोकता है। हमने यह भी देखा है कि जब कोई व्यक्ति अंधविश्वास से परे सोचता है, तभी वह कोई नया विचार और नया आविष्कार कर सकता है। ऐसा करने से ही मानव प्रगति प्राप्त हो सकती है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अंधविश्वास में फंसा रहेगा तो वह कोई नया विचार पैदा नहीं कर सकता। यदि कोई नया विचार न आए तो मनुष्य पुराने अंधविश्वासों के चंगुल में फंसा रह जाता है। इस तरह से मानव प्रगति का क्या होगा? इसीलिए शहीद भगत सिंह ने लिखा था कि अंधविश्वास व्यक्ति को पिछड़ा बनाता है। इसलिए हर व्यक्ति को पुराने अंधविश्वासों को त्यागकर आत्मविश्वासी बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए।

खबर सार

विज्ञान के युग में भी शिक्षित लोग अभी तक अंधविश्वास पर काबू नहीं पा सके हैं। अंधविश्वास का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक सरकारी कार्यालय में खोए रजिस्टर को ढूंढने के लिए सभी कर्मचारियों को दो मुट्ठी चावल कार्यालय में लाने का आदेश जारी किया गया। यह मामला उत्तराखंड से सामने आया है। यह आदेश चम्पावत जिले के लोहाघाट स्थित लोक निर्माण विभाग के राष्ट्रीय रक्षक दल प्रभाग कार्यालय के अभियंता द्वारा जारी किया गया है। ये आदेश सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। अंधविश्वासी इंजीनियर आशुतोष कुमार ने आदेश जारी कर दिया है। आदेश में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को शनिवार को अपने घर से कार्यालय आते समय दो मुट्ठी चावल लाने को कहा गया है। यह चावल भगवान को अर्पित किया जाएगा। जारी आदेशों में कहा गया है कि ब्लॉक में कार्यरत वरिष्ठ सहायक अभियंता जय प्रकाश की सेवा पुस्तिका गुम हो गई थी। काफी देर तक तलाश करने के बाद भी वह नहीं मिला, जिससे अंधविश्वासी सहायिका और जय प्रकाश दोनों मानसिक रूप से परेशान हो गए।

इस बीच अंधविश्वासी इंजीनियर ने एक अनोखा सुझाव देते हुए कहा कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने घर से दो मुट्ठी चावल लेकर आएं और उसे भगवान को अर्पित करें। इससे सेवा बिंदुओं के अभाव की समस्या का समाधान हो सकता है। पत्र में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से शनिवार को दो मुट्ठी चावल साथ लाने को कहा गया है।

विभाग के मुख्य अभियंता राजेश चंद ने अंधविश्वासी इंजीनियर को नोटिस जारी कर मामले पर जवाब मांगा है। उनसे तीन दिन के भीतर स्पष्टीकरण देने को कहा गया है।

नई दिल्ली, 17 मई, देश क्लिक ब्यूरो

....गोलियाँ, ...और गालियाँ



- राजपाल सिंह

पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए दुखद नरसंहार में मारे गए सभी व्यक्तियों की पीड़ा हर संवेदनशील इंसान को हुई, लेकिन इस घटना में सबसे ज्यादा दुखद तस्वीर नवविवाहित नरवाल जोड़े की थी। भारतीय नौसेना में लेफ्टिनेंट के पद पर कार्यरत विनय नरवाल और उनकी पत्नी हिमांशी नरवाल शादी के बाद हनीमून के लिए कश्मीर गए थे। जब विनय नरवाल की गोली मारकर हत्या की गई तो उसके शव के पास बैठी नवविवाहिता हिमांशी की तस्वीरें देखकर हर किसी का दिल पसीज गया। ऐसी त्रासदी के बाद, उसके प्रति कोई भी बुरा शब्द सोचना असंभव है। हर कोई उसके दुःख में डूबा हुआ था। लेकिन सांप्रदायिक भावनाओं से लिप्त लोगों के मन में इतना जहर भरा हुआ है कि उनमें किसी के लिए न तो दया है और न ही अच्छी भावनाएं। एक तरफ से विनय नरवाल आतंकियों की गोलीयों का शिकार हुआ और मारा गया और दूसरी तरफ हिमांशी कुछ दिनों बाद ही इन सांप्रदायिक तत्वों की गाली-गलौज का शिकार हुई। यह दूसरा हमला हिमांशी के लिए मानसिक रूप में बहुत ही दर्दनाक और विनाशकारी था। हमारे लिए यहां उन शब्दों को लिखना संभव नहीं है जो इंस्टाग्राम पर उनके बारे में लिखे गए थे। लेकिन मोटे तौर पर कहें तो उनका मतलब था, 'उसका पति मर गया, अब वह मुसलमानों के साथ ऐश करना चाहती है, उसे एक कश्मीरी पसंद आ गया है।' दिल्ली में पढ़ाई के दौरान उनकी कश्मीरियों से दोस्ती हुई और भी बहुत कुछ हुआ। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि कोई ऐसी त्रासदी से गुजर रही महिला के प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग कर सकता है। लेकिन इनका प्रयोग खुलेआम, बिना किसी शर्म या संकोच के किया गया।

हिमांशी पर इस घृणित हमले का कारण क्या था?

लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की मौत के बाद एक संस्था ने उनके परिवार के साथ मिलकर उनके 27वें जन्मदिन पर रक्त दान शिविर का आयोजन किया था, जो 1 मई को लगा था। इस मौके पर मौजूद पत्रकारों ने जब हिमांशी से पहलगाम की घटना पर उनकी प्रतिक्रिया पूछी तो हिमांशी ने कहा, ''इस घटना के लिए सभी मुसलमानों या कश्मीरियों को निशाना मत बनाइए। हम यह नहीं चाहते। हम शांति चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि हम न्याय चाहते हैं, लेकिन जिन लोगों ने यह कृत्य किया है, उन्हें ही सजा मिलनी चाहिए। (न कि सभी मुसलमान या कश्मीरी लोगो को।) लोग मुसलमानों और कश्मीरियों के खिलाफ जा रहे हैं। हम ऐसा नहीं चाहते। हम शांति चाहते हैं और केवल शांति। बेशक हम न्याय चाहते हैं।''

सांप्रदायिक और राष्ट्रवादी भावनाओं से ओतप्रोत लोग इस बात से नाराज थे कि बदला लेने की बात करने के बजाय उन्होंने यह क्यों कहा कि सभी मुसलमान और कश्मीरी दोषी नहीं हैं। उन्होंने हिमांशी के सोशल मीडिया अकाउंट को जाँचना शुरू किया और खोज की कि वह जेएनयू से पढी हैं।% विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान, वह सेकुलर विचारों की समर्थक थीं। उन्होंने आसिफा के पक्ष में एक याचिका पर भी हस्ताक्षर किये थे। उनकी सोच के मुताबिक उसके कश्मीरियों के साथ घनिष्ठ संबंध हैं और वो जेएनयू के टुकड़े-टुकड़े गैंग की सदस्य थी । इसीलिए उन्होंने ये सभी दोष हिमांशी पर थोप दीए, और उसके जीवन में चल रही बड़ी त्रासदी के बारे में सोचे बिना कि वो कितने बड़े दुखद समय में है, उन्होंने हिमांशी पर गालियों की बौछार करनी शुरू कर दी।

इसी प्रकार, केरल की एक अन्य पर्यटक लड़की आरती मेनन, जिसके पिता भी इस नरसंहार में मारे गए थे, भी इसी प्रकार की घृणित टिप्पणियों का शिकार हुई। उनका दोष यह था कि उन्होंने उन दो कश्मीरी लोगों की प्रशंसा की थी जिन्होंने इस घटना के बाद उनका अपनी बहनों की तरह समर्थन किया था। उन्होंने कहा कि जब तक उनके पिता का शव अस्पताल के मुर्दाघर से कोच्चि जाने वाले विमान तक नहीं ले जाया गया, तब तक उन्होंने उनका और उनके दोनों बच्चों का साथ दिया। उन्होंने कहा कि वह उन दो कश्मीरी मुसलमानों को अपना भाई मानती हैं।

इस गाली गलौच गिरोह का दुर्व्यवहार यहीं नहीं रुका। क्या उनमें इतनी नफरत है या फिर उन्हें अपने राजनीतिक संरक्षण का इतना घमंड है कि कुछ ही दिनों बाद उन्होंने भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री पर शोशल मीडिया के जरीए हमला कर दिया? विक्रम मिश्री ने पाकिस्तान या मुसलमानों के प्रति कोई सहानुभूति भी नहीं दिखाई थी। उनका कर्तव्य था कि

सरकार द्वारा देश को सूचित किया जाए कि दोनों देशों के बीच युद्ध रोकने का निर्णय लिया गया है और यह युद्ध विराम 10 मई को शाम 5 बजे से लागू होगा। (ट्रंप ने अपने ट्वीट के माध्यम से पहले ही यह बात कह दी थी।)

लेकिन उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस के एक घंटे के भीतर ही उन पर यह कह कर हमला किया जाने लगा कि युद्ध विराम की घोषणा करने के कारण वह देश के गद्दार हैं। अन्यथा भारत को पाकिस्तान को सबक सिखाना था । उनकी बेटी के बारे में भी जानकारी प्राप्त की गई, जो ब्रिटेन में थी। वह एक लॉ फर्म में कार्य करती हैं और यह रोहिंग्या मुसलमानों का केस लड़ रही है। इसलिए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि उनकी बेटी मुस्लिम समर्थक है और फिर उस लड़की के प्रति भी इसी तरह की गालियाँ शुरू हो गईं। अंततः विक्रम मिसरी ने अपना सोशल मीडिया 'एक्स' अकाउंट बंद कर दिया।

देश के सबसे वरिष्ठ अधिकारियों में से एक विक्रम मिसरी को ट्रोल किया जाना यह दर्शाता है कि सांप्रदायिक ताकतों की आईटी सेल कितना अंहकारा हुआ है। कितना मूर्ख है, कितना क्रर है, और कितना संवेदनाओं से रहित है। जब उन्हें सरकार का संरक्षण प्राप्त है तो ऐसा क्यों न हो? इस संरक्षण के स्पष्ट संकेत इस बात से मिलते हैं कि अपने वरिष्ठ अधिकारी के खिलाफ बहुत ही घटिया पोस्ट करने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं किया गया है। जबकि योगी और मोदी के खिलाफ साधारण टिप्पणी करने वालों को भी उठाकर जेल में डाल दिया जाता है। रवीश कुमार ने सवाल उठाया है कि आई ए एस और आई पी एस अफसरों की एसोसिएशन ने केवल विक्रम मिश्री के खिलाफ की गई ट्रोलिंग की निंदा की है, तथा कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की है। क्योंकि वे जानते हैं कि ये ट्रोल गिरोह सरकार द्वारा स्थापित घृणा गिरोह के सदस्य हैं।

कुछ साल पहले दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा गुरमेहर के खिलाफ भी इसी तरह की घृणित टिप्पणी की गई थी। उनके पिता कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे, लेकिन उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने उनके पिता को नहीं मारा, युद्ध ने उनके पिता को मार डाला। पाकिस्तान के प्रति नफरत फैलाकर युद्ध भड़काने के खिलाफ एक प्रदर्शन के दौरान, वह एक बैनर लेकर खड़ी थीं, जिस पर लिखा था – पाकिस्तान ने मेरे पिता को नहीं मारा, युद्ध ने उन्हें मारा है, जिसके कारण उन्हें घृणित टिप्पणियों का निशाना बनाया गया।

इस पूरी घटना से एक महत्वपूर्ण प्रश्न उभर कर आता है कि इस ट्रोलिंग हथियार से निपटने के लिए क्या किया जाना चाहिए। सही सोच वाले लोग हैं जो गोली, लाठी लगने के डर से चुप नहीं रहते मगर सोशल मीडिया पर सांप्रदायिक, धार्मिक और राष्ट्रवादी कट्टरपंथियों के कार्यों और शब्दों के बारे में कुछ भी कहने से हिचकिचाते हैं। कारण यह है कि इन सांप्रदायिक पार्टियों में आई.टी. सेल के रूप में ग्रुप बने हुए हैं जो किसी भी व्यक्ति की बेज्जती कर सकते हैं। ये लोग अपने से भिन्न विचार रखने वालों के साथ कोई तर्कसंगत बहस नहीं करते, बल्कि इसके बजाय आपत्तिजनक टिप्पणियां, अश्लील भाषा, उनके खिलाफ सीधे हमले, और यहां तक कि उनकी पत्नियों, बेटियों और परिवार की अन्य महिला सदस्यों की तस्वीरों को संपादित करके पोस्ट कर देते हैं। यह केवल हिंदू कट्टरपंथियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि खालिस्तानी और अन्य चरमपंथी भी विरोधी विचार रखने वालों को चुप कराने के लिए इस तरीके का इस्तेमाल करते हैं। कई अच्छे लोग उनके साथ दुर्व्यवहार और अभद्र भाषा का व्यवहार देखकर सच्च बोलने से हतोत्साहित हो जाते हैं। लेकिन इसका समाधान उनके सामने चुप रहना नहीं है। वे यही तो चाहते हैं। जवाब में, उन पर इसी तरह की गालियाँ बरसाना कोई समाधान नहीं है, क्योंकि हम सांप्रदायिक व्यक्ति के परिवार की महिलाओं के खिलाफ उनके कार्यों के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकते। इससे निपटने के लिए आपको अपनी बात कहते रहना होगा, बड़े पैमाने पर सही बात कहनी होगी और उसे बार-बार कहना होगा। जब भी किसी प्रगतिशील, मानवतावादी विचार वाले पोस्ट या व्यक्ति के विरुद्ध ऐसा हमला हो, तो हमें यथासंभव अधिक से अधिक तरीकों से अपने विचार व्यक्त करने चाहिए। सोशल मीडिया जनता की अदालत है, यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन लोगों की सोच को उजागर करें जो अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हैं, गलत बातें लिखते हैं और नफरत फैलाते हैं। हमें यथासंभव इन आई डी पर तार्किक रूप से पोस्ट और टिप्पणी करने की आवश्यकता है। इनके सांप्रदायिक संगठनों के आई.टी. सैल को उपयुक्त जवाब देना चाहिए। यह भी युद्ध का एक फ्रंट है।

छात्रावास का भूत

मा. अजायब जलालआना



सिरसा जिला के एक स्कूल के छात्रावास में पिछले तीन दिनों से लगातार छात्राएं भय के माहौल में रह रही थीं। हुआ यूँ कि अचानक एक छात्रा की तबियत खराब होने लगी, उसने अपनी सहेली को किसी विशेष धार्मिक प्रार्थना करने के लिए कहा। उस द्वारा प्रार्थना सुनाने के थोड़ी देर बाद लड़की की तबियत और भी खराब होने लगी।

वो होस्टल में चीखने लगी अपने रूम से बाहर निकल कर दौड़ने लगी, जो भी हाथ में आया उसे जोर से फैंकने लगी और अपने हाथों से सिर को पकड़ती हुई वो फर्श पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई उसे काफी देर के लिए दौरा पड़ा। स्टाफ़ सदस्यों द्वारा उस लड़की को उठाकर चारपाई पर लेटाया गया।

पूरे होस्टल में ये दृश्य देख सभी लड़कियां भयभीत हुईं।वो कुछ समझ नहीं पा रही थीं।

डॉक्टर बुलाया गया चैकअप के बाद उसे बुखार होने का पता चला।परन्तु वार्डन मैडम ने उससे जब प्यार से पूछा तो पीड़ित लड़की ने अपनी सहेली के मृत पिता के दिखाई देने की बात बताई गई।ऐसा कहने के बाद वह लड़की अब किसी से कोई बात भी नहीं कर रही थी,गुम-सुम रहने लगी,खाना पीना भी छोड़ दिया।

पूरा दिन उसकी निगरानी की गई उसके माता-पिता को बुलाया गया। लड़की अब भी ठीक नहीं थी पिता द्वारा अपनी लड़की को मोबाईल पर किसी धार्मिक व्यक्ति से प्रार्थना सुनवाई और मंत्र जाप करवाया गया।

शाम को वह लड़की वार्डन मैडम के पास ही थी उसके शरीर में फिर अचानक अकड़न आई।उसने बैड पर पड़े कपड़ों को अपने हाथों से जोर से पकड़ना शुरू किया,हाथों पैरों में अकड़न आने पर मैडम ने उस लड़की के शरीर को अपने हाथों से जोर से पकड़ा उसे काबू करने की कोशिश की गई जब जोर से झटका दिया तो वह थोड़ा आराम की स्थिति में वापिस लौटी।

मैडम द्वारा पूछने पर वह अपनी सहेली के पिता के दिखने की बात को फिर दोहरा रही थी। जिसकी मौत 2 महीने पहले ही हुई थी।

यह बात होस्टल के साथ स्कूल में भी फ़ैल चुकी थी। अब तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगी। लड़कियों में डर पैदा होने और उसे दूर करने के लिए ऐसी स्थिति में वार्डन द्वारा प्रिंसिपल को होस्टल में किसी धार्मिक अनुष्ठान करवाने का प्रस्ताव रखा गया। उसी स्कूल के स्टाफ सदस्यों में से एक तर्कशील सदस्य होने के कारण तर्कशील सोसाईटी कालांवाली से सहयोग लेने का प्रस्ताव रखा गया जिसे तुरन्त मानते हुए प्रिंसिपल ने हमें बुलाया।

हमारी तीन सदस्यों वाली टीम जिसमें मा. शमशेर चोरमार, मनजीत कौर और मैं शामिल था। जब हम होस्टल पहुँचे तो वास्तव में वहाँ डर का माहौल था! लड़कियां डरी, सहमी हुईं थी। हमने शुरू में ही उन बैठी छात्राओं से हाथ ऊपर उठाकर पूछा कि आपमें में से कितनी छात्राओं को डर लगता है? आधी से अधिक लड़कियों के हाथ ऊपर उठे हुए थे। हमारे द्वारा उन्हें आश्वासन दिया गया कि हम डर के बारे में दो घण्टों के बाद आपसे पुनः पूछेंगे तब तक आपका दृष्टिकोण बदल जाएगा और डर दूर भाग चुका होगा!

सबसे पहले अलग से उनकी वार्डन से पूरी कहानी को समझा गया। फिर उस लड़की को वार्डन रूम में बैठाकर बातचीत की गई। हमने निष्कर्ष निकाला जो उसकी पक्की सहेली थी उसके पिता की मौत हो गई थी जिस कारण वह अब स्कूल नहीं आ पा रही थी, जिससे उसे गहरा सदमा लगा था और सहेली की यादों में खोई-खोई रहती थी।घटना वाले दिन उसे सिर दर्द हुआ उसने अपनी अन्य सहेली से धार्मिक प्रार्थना सुनी, उसके बाद अपनी मर्जी से कोई दर्द निवारक गोली भी ली...जिससे वो ज्यादा बेचैन हुई और बुखार भी हुआ।

इसी अर्धचेतन अवस्था में उसने अपने आप को अजीब स्थिति में पाया और सहेली के पिता को भी देखने का एहसास किया। जिससे होस्टल की लड़कियों ने सुनी सुनाई बातों के आधार पर किसी भूत-प्रेत, ओपरी पराई का किया कराया समझ लिया जिससे पूरे होस्टल में डर का माहौल पैदा हो गया।

उस लड़की को सम्मोहन क्रिया से नींद में ले जाया गया और सहेली के मृत पिता को सदा सदा के लिए उसकी यादों में से दूर भेजने की कल्पनाओं को साकार होते हुए अहसास करवाया गया। और उसके जल्दी ठीक होने, खुश रहने, डर न लगने के आदेश प्रदान किये गए व इसके लिए उस पर पक्का पहरा लगा होने आदि व मनोवैज्ञान ढंग से लड़की में आत्मविश्वास पैदा करने के बाद... कुछ देर के लिए गहरी नींद में लेजाया गया...ये दृश्य उसकी वार्डन मैडम देखकर काफ़ी प्रभावित हुई। थोड़ी देर बाद उस लड़की को विशेष आवाज़ से उठाया गया और अब सब कुछ ठीक हो चुका था।

अब होस्टल की सभी लड़कियों को ऐसे केस जो पहले हल किये थे, उनकी केस हिस्ट्रियाँ सुनाई गई। तथा उन्हें कैसे हल किया गया, साथ ही बाल मनोविज्ञान का कंसैप्ट समझाया गया।

चेतन, अवचेतन तथा अर्धचेतन मन की अवस्थाओं की व्याख्या की गई। लड़कियों ने बहुत सारे सवाल भी किये लगातार 2 घण्टों तक चली इस सामूहिक बातचीत के बाद अब दोबारा हमने डर से ग्रस्त उन लड़कियों से हाथ ऊपर उठाने की बात पूछी तो अब किसी का भी हाथ नहीं उठा! वो अब बहुत खुश नज़र आ रही थीं, उनके चिहरे खिल चुके थे, वे जोर जोर से तालियां बजा रही थीं। वार्डन मैडम बोली आपने बहुत अच्छे से समझा दिया...मुझे पूरी उमीद है अब मेरी बच्चियाँ नहीं डरेंगी और न ही कोई धार्मिक अनुष्ठान कराने की जरूरत पड़ेगी!

उन्हें और काफ़ी क्रिएटिव सुझाव देते हुए.. लड़कियों को भूत-प्रेत के काल्पनिक डर से मुक्त करते हुए हमने होस्टल से विदा ली...

9416724331

तर्कशील सोसायटी के कदम

तर्कशील सोसायटी के उदय से पहले लोगों को मानसिक बीमारियों के बारे में बहुत कम जानकारी थी।

यदि हिस्टीरिया, सिज़ोफ्रेनिया या मानसिक तनाव जैसी मानसिक बीमारियों से ग्रस्त लोग अजीब व्यवहार करते थे तो उन्हें भूत से ग्रस्त माना जाता था। इसके समाधान के लिए ऐसे व्यक्तियों को किसी संत, बाबा या तांत्रिक के पास ले जाया जाता था, जो न केवल परिवार का आर्थिक शोषण करते थे, बल्कि मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति की हालत भी खराब कर देते थे। तर्कशील सोसाइटी ने इस बारे में लोगों में जागरूकता पैदा की और बताया कि जिस तरह शारीरिक बीमारियां होती हैं, उसी तरह मानसिक बीमारियां भी होती हैं, जिनके इलाज के लिए तांत्रिकों के बजाय किसी अच्छे मनोचिकित्सक के पास जाना चाहिए। तर्कशील सोसायटी के पास ऐसे कई मामले आने लगे, जिनमें उचित मार्गदर्शन देने के लिए सोसायटी ने यूनिट स्तर तक मानसिक रोग विभाग बनाया है। कुछ इकाइयों ने मानसिक रोग परामर्श केंद्र भी खोले हैं, जहां एक विशिष्ट दिन पर ऐसे मामलों के वास्तविक कारणों की जांच की जाती है तथा समस्या के समाधान के लिए परामर्श प्रदान किया जाता है। सोसाइटी के इस कार्य ने हजारों लोगों के घरों को भटकने और उजड़ने से बचाया है।



***

क्या हवा से प्रगट हुई फातिमा शेख ?

– जसवंत मोहाली



हम दिलीप मंडल द्वारा सावित्री बाई फुले की साथी रही फातिमा सेख के बारे में फैलाए गए झूठ को उजागर करने वाली एक रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं। यह प्रसिद्ध पत्रिका 'इंडिया टुडे' के हिंदी संस्करण के प्रबंधकी संपादक रह चुका है और सोशल मीडिया पर उसके तीन लाख फॉलोअर हैं। पहले वे दलितों व पिछड़े वर्गों के अधिकारों के पक्ष में निरंतर लिखते और बोलते थे, जिसके कारण इन वर्गों में उसका बहुत अच्छा प्रभाव और सम्मान था। अब उसे सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में मीडिया सलाहकार का पद दिया गया है।फातिमा शेख के बारे में दिलीप मंडल के विचार क्यों परिवर्तित हुए ? वास्तव में सच्चाई कया है? आओ इस रिर्पोट में जाने।

क्या आप फातिमा शेख के बारे में जानते हैं ? फातिमा शेख को पहली मुस्लिम शिक्षका माना जाता है। जब ज्योतिबा फूले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फूले ने लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया, तो यह कार्य, जो आज सरल लगता है, उस समय ज्योतिबा और उनके पिता के बीच टकराव का कारण बन गया। परिणामस्वरूप, फूले दंपत्ति को घर छोड़ना पड़ा और इस मुश्किल समय में ज्योतिबा फूले के मित्र उस्मान सेख और उनकी बहन फातिमा शेख ने उनका साथ दिया। इन चार लोगों ने अपने कुछ अन्य मित्रों के साथ मिलकर लड़कियों, विशेषकर निम्न जाति की लड़कियों को शिक्षित करने का कार्य तेज कर दिया। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'फूले' में सावित्रीबाई फूले और फातिमा शेख करीबी दोस्त हैं, जो विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक कार्यों के कारण सामाजिक दबाव के समय एक-दूसरे का साथ देतीं हैं। फातिमा शेख का जन्म 9 जनवरी, 1831 को हुआ था। 9 जनवरी, 2022 को गूगल ने अपना लोगो, जिसे गूगल डूडल कहा जाता है, फातिमा के 191वें जन्मदिन को समर्पित किया।



लेकिन आप यह सुनकर चौंक जाएंगे कि ''फातिमा शेख इतिहास में कभी हुई ही नहीं।'' यह मैं नहीं, दिलीप मंडल कहता हैं। क्या आप जानते हैं कि दिलीप मंडल कौन है? लेकिन पहले, आइए उसका बयान पढ़ें जो दिलीप मंडल ने 9 और 11 जनवरी 2025 को फातिमा के जन्मदिन के अवसर पर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर दिया था-

''मैंने एक पात्र का सृजन किया और उसका नाम फातिमा शेख रखा। कृपया मुझे माफ़ करें। सच तो यह है कि फातिमा शेख कभी हुई ही नहीं । वह कोई ऐतिहासिक पात्र नहीं है। यह मेरी गलती है कि मैंने उसे हवा से ही प्रगट कर लिया और मैंने यह जानबूझ कर किया। आप गूगल पर सर्च करेंगे तो आपको उनके बारे में कोई पुरानी जानकारी नहीं मिलेगी। न कोई लेख, न कोई किताब, न कोई उनका उल्लेख,कुछ नहीं। जब मैंने फातिमा शेख की कहानी छोड़ दी, तो 2022 के बाद उसमें रुचि खत्म हो गई। बस वो सोशल मीडिया पर पैदा हुई और खत्म हो गई, मुझसे यह मत पूछो कि मैंने यह सब क्यों किया। यह सिर्फ समय और परिस्थितियों का मामला है। किसी उद्देश्य के लिए एक पात्र बनाने की जरूरत थी और मैंने इसे बनाया। कई लोगों ने पहली बार उसका नाम मुझसे ही सुना था। मैं एक संरचना बना सकता हूँ और उसके चारों ओर एक (काल्पनिक) कथा रच सकता हूँ। मैं इसमें पूर्णत: विशेषज्ञ हूँ। फातिमा की कोई पुरानी तस्वीर

न होने के कारण एक काल्पनिक रेखाचित्र बनाया गया। मैंने उसके इर्द–गिर्द कई कहानियाँ बुनी और इस तरह फातिमा शेख अस्तित्व में आई। यह कहानी चारों ओर फैल गई। ज्योतिबा फूले और सावित्रीबाई फूले की सम्पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन फातिमा शेख का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। यहाँ तक कि बाबासाहेब अंबेडकर ने भी ऐसे किसी नाम का उल्लेख नहीं किया। यहाँ तक कि महात्मा फूले और सावित्री बाई फूले की जीवनी लिखने वालों ने भी फातिमा शेख का नाम कहीं नहीं लिखा। सबूत के तौर पर, कृपया मेरे पुराने ट्वीट, फेसबुक पोस्ट, लेख या वीडियो का इस्तेमाल न करे।''

इस स्वीकारोक्ति से भारतीय साहित्यक,अकादमिक और यहाँ तक कि राजनीतिक हलकों में भी विवाद छिड़ गया। फातिमा शेख के बारे में उसके दावों के पीछे सच्चाई क्या है? यह जानने के लिए फातिमा शेख के बारे में ऐतिहासिक सच्चाई जानने की खोज शुरू हुई।

दिलीप मंडल का मुख्य दावा यह है कि उसने फातिमा शेख नामक चरित्र का निर्माण किया था। इसका मतलब यह है कि इससे पहले किसी भी लेखन या दस्तावेज़ में फातिमा शेख का कोई संदर्भ नहीं मिलेगा। अगर ऐसा पाया गया तो दिलीप मंडल का दावा झूठा माना जाएगा। क्या 2010 से पहले फातिमा शेख का कोई संदर्भ नहीं है, जैसा कि दिलीप मंडल मानता हैं? इस संबंध में Alt News का सच जानने का प्रयास इस प्रकार है –

फातिमा शेख के बारे में जो पहला और सबसे अकादमिक संदर्भ मिला, वह 1991 में प्रकाशित पुस्तक 'वुमेन राइटिंग इन इंडिया' 600 ई.पू. 'टू द प्रेजेंट' में है। जिस का संपादन सूसी थारू और के. ललिता द्वारा किया गया है। उनकी पुस्तक में फूले जी के बारे में भी एक लेख है, जिसमें फातिमा शेख के बारे में स्पष्ट उल्लेख है। इस लेख में पृष्ठ 211 पर लिखा है, ''1848 में जब सावित्रीबाई फूले मात्र 17 वर्ष की थीं, उन्होंने पुणे और उसके आसपास पाँच स्कूल खोले और 1851 में विशेष रूप से मांग और महार जातियों की लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला। सावित्रीबाई और ज्योतिबा फूले अपनी एक अन्य सहयोगी फातिमा शेख के साथ इन स्कूलों में पढ़ाते थे। 1856 में जब सावित्रीबाई फूले बीमार पड़ी तो वे अपने बड़े भाई के साथ रहने के लिए अपने मायके नयेगांव (सतारा जिला) चली गई।'' इस पुस्तक में सावित्रीबाई का एक पत्र भी है, जो उन्होंने 10 अक्टूबर 1856 को अपने पति को लिखा था, जब वह बीमारी से उबर रही थीं। इस पत्र में सावित्री बाई लिखती हैं – ''जब मैं ठीक हो जाऊँगी तो पुणे आऊँगी। मेरी चिंता मत करो, इससे (मेरे यहाँ न होने से) फातिमा को आवश्य मुश्किल हो रही होगी। लेकिन मुझे यकीन है कि वो इस बात को समझती है और शिकायत नहीं करेगी।''

फूले और फातिमा शेख का एक साथ दूसरा संदर्भ एम.जी. माली की मराठी में लिखी सावित्रीबाई फूले की जीवनी क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फूले में मिलता है। 1980 में प्रकाशित इस जीवनी में माली ने फातिमा शेख का उल्लेख उन लोगों के साथ एक के रूप में किया है जिन्होंने सावित्रीबाई फूले के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया था : सावित्रीबाई फूले की तरह कई अन्य विचारकों ने भी महात्मा फूले के सामाजिक कार्यों में योगदान दिया है, जैसे सगुना बाई, काशीर सागर, विष्णुपंत थाटे, वामन राव खराटकर और फातिमा शेख। फातिमा शेख, जो फुले दम्पति द्वारा खोले गए साधारण स्कूल में पढ़ी थीं, उनकी पहली छात्रा और उसी स्कूल की पहली भारतीय मुस्लिम महिला शिक्षिका बनी। सावित्री बाई और फातिमा शेख निम्न और अछूत समुदायों की लड़कियों को पढ़ाती थीं, जबकि अन्य शिक्षिकाएं ब्राह्मणों और धनी परिवारों की लड़कियों को पढ़ाती थीं। सावित्रीबाई और फातिमा दोनों ही बहुत योग्य शिक्षिकाएं थीं।

एक शताब्दी पहले की सावित्री बाई के साथ फातिमा शेख की एक तस्वीर,फातिमा शेख की ऐतिहासिकता को पुष्ट करती है। यह फोटो एम. जी. माली की एक अन्य पुस्तक 'सावित्री बाई फुले – समग्र वांग्मय' (सावित्री बाई फुले – संपूर्ण लेखन) से ली गई है, जो पहली बार 1988 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के बाद के संस्करण महाराष्ट्र सरकार के साहित्य और संस्कृति बोर्ड द्वारा प्रकाशित किए गए थे। इस पुस्तक के पृष्ठ 54 पर तीन महिलाओं का चित्र है, जिनमें से दो बैठी हुई हैं, एक उनके पीछे खड़ी है, तथा दो अन्य लड़कियाँ उनके सामने बैठी हैं।

तस्वीर के नीचे लिखा है के सावित्रीबाई फुले और फातिमा शेख अपने स्कूल के दो छात्रों के साथ।



(लगभग 100 वर्ष पूर्व नेगेटिव से निर्मित एक दुर्लभ फोटो)

उपरोक्त उदाहरणों से दिलीप

मंडल का यह दावा कि उसके द्वारा लिखे जाने से पहले किसी भी ऐतिहासिक अभिलेख, पुस्तक या पत्र में फातिमा शेख का कोई उल्लेख नहीं है, खोखला साबित होता है। यह बात 1991 में थारू और ललिता द्वारा संपादित पुस्तक के लेख में फातिमा के उल्लख से सिद्ध होती है, तथा इसी प्रकार 1980 में माली द्वारा लिखी गई सावित्रीबाई फुले की जीवनी में भी इसका उल्लेख है।

यह बात आवश्य ठीक है कि फातिमा ही नहीं बहुत सारे ओर भी महान व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं के बारे में ऐतिहासिक संदर्भ या लिखित दस्तावेज बहुत दुर्लभ हैं। जो संदर्भ मिले हैं, वे ज्यादातर मराठी इतिहासकारों के हैं या कुछ मराठी पुस्तकों में पाए जाते हैं, और उन्हें भी ढूंढना आसान नहीं है। दरअसल, दिलीप मंडल ने ऐतिहासिक संदर्भों के अभाव का फायदा उठाया और फातिमा शेख के बारे में एक निराधार दावा किया। लेकिन फिर भी, दिलीप मंडल के लेखों से पहले के पर्याप्त रिकॉर्ड मौजूद रही हैं जो साबित करते हैं कि सावित्रीबाई फुले की करीबी सहयोगी फातिमा शेख इतिहास में मौजूद है।

अगस्त 2024 में दिलीप मंडल को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा मीडिया सलाहकार नियुक्त किया गया है। इसके बाद उनकी फेसबुक पोस्ट अगर अब देखेंगे तो पाते हैं कि उनकी इससे पूर्व की पोस्ट जहां दलित चिंतन से जुड़ी होती थी अब भिन्न होती हैं।

कभी उन्होंने 2019 में द प्रिंट पत्रिका के लिए लिखा, ''इतिहास फातिमा शेख को क्यों भूल गया?'' और अब अपनी बात पलटते हुए कहा, ''मैंने फातिमा शेख का चरित्र कुछ विशेष परिस्थितियों में रचा था, वह इतिहास में मौजूद नहीं थी।''

बाकी पाठक निर्णय करें कि सच्चाई क्या है?

पद्मश्री गुरदयाल सिंह



हमारी शिक्षा नीति मूलत: विद्यार्थियों को कुछ विषयों की जानकारी देने तक ही सीमित है। विज्ञान और उसके अनेक पहलुओं के बारे में जानकारी केवल विषयों के रूप में प्रदान की जाती है। निष्कर्ष यह है कि हमारे विद्यार्थी वैज्ञानिक विषयों के प्रति जागरूक तो हो जाते हैं, लेकिन उनकी सोच वैज्ञानिक नहीं बन पाती। यह हमारी शिक्षा नीति का सबसे ख़राब पहलू है। ज्ञान और वैज्ञानिक सोच के अभाव में आम आदमी अलौकिक शक्तियों का सहारा लेता है। अत: यह स्वाभाविक है कि जब तक तर्कसंगत ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आम आदमी की समझ में नहीं आ जाते, तब तक तथाकथित 'उच्च शिक्षित' लोग भी अंधविश्वासी बने रहेंगे और अंधविश्वासों व भ्रांतियों में फंसे रहेंगे। इससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता. कभी-कभी इस मामले में अशिक्षित लोगों को शिक्षित लोगों से अधिक बुद्धिमान देखा गया है, हालांकि ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है। यह इसलिए कम है क्योंकि सीमित ज्ञान के कारण उनकी जानकारी सीमित रहती है। समस्या कुछ विषयों के ज्ञान की नहीं है, बल्कि ज्ञान, तर्क, वैज्ञानिक सोच और विवेक की है जो पारंपरिक शिक्षा में मौजूद नहीं है।

सोशल मीडिया और किशोर

– मीना

आज के युग में सोशल मीडिया लोगों के हाथों में एक शक्तिशाली उपकरण है जिसके अनेक फायदे और नुकसान हैं। यह लोगों को जोड़ता है, जानकारी साझा करता है, और समुदाय बनाने में मदद करता है। सोशल मीडिया जहां सकारात्मक भूमिका अदा करता है वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते हैं। सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैलाकर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से कई बार भ्रामक और नकारात्मक जानकारी सांझा की जाती है जिससे कि जनमानस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके इलावा यह गोपनीयता संबंधी चिंताएँ, ब्लैकमेलिंग, अश्लीलता, साइबरबुलिंग और गलत सुचना का प्रसार जैसे जोखिम भी पैदा करता है। इस निबंध में पढेंगे कि हमारे किशोर सोशल मीडिया का प्रयोग करते समय किन बातों का ध्यान रखें।

हर माता-पिता को खुद से पूछना चाहिए कि क्या उनका बच्चा इंटरनेट की दुनिया में सुरक्षित है। उसे उसके बुरे प्रभावों से बचाना मां बाप का फर्ज है।

आजकल के माता-पिता की सबसे बड़ी चिंता यह है कि उनके बच्चे हर समय ऑनलाइन रहते हैं। लेकिन यह भी सच है कि बच्चा जो कुछ भी ऑनलाइन देख रहा है या कर रहा है, उस पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता। यदि आप अपने बच्चे को इंटरनेट के खतरों से बचाना चाहते हैं, तो उसके मित्र बनें। इस बात पर नज़र रखें कि उसके ऑनलाइन मित्र कौन हैं और वह किन सोशल साइट्स पर सबसे अधिक समय बिताता है। इस जोखिम से इनकार नहीं किया जा सकता कि इंटरनेट और सोशल मीडिया पर कोई बच्चा गलत हाथों में पड़ सकता है और धोखा खा सकता है। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से पहले ही उसे रोकना महत्वपूर्ण है।



हाल ही में ऑलिव पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित 'Is your child safe' ('क्या आपका बच्चा सुरक्षित है)' पुस्तक काफी चर्चा का विषय रही है। इसके लेखक संजय कुमार गुरुदीन ने इंटरनेट की दुनिया में कदम रखने वाले बच्चों के अभिभावकों को इसके खतरों के बारे में आगाह किया है। संजय कुमार केरल कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। ऐसे अधिकारी हैं जो इंटरनेट पर अपराध के शिकार बच्चों/किशोरों से मिलते रहते हैं। अपनी पुस्तक में उन्होंने इंटरनेट का उपयोग सावधानी से करने की आवश्यकता पर बल दिया है। यह पुस्तक उन माता-पिता के लिए है जो अपने बच्चे के द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग करने पर खुश होते हैं।

वे कहते हैं कि उनका बच्चा तकनीकी विशेषज्ञ है। लेकिन माता-पिता यह नहीं समझ पाते कि बच्चा साइबर स्पेस के जाल में कैसे फंस जाता है। वे बच्चे पर नज़र नहीं रखते।

जब तक सोशल मीडिया पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो जाता, तब तक बच्चों को इंटरनेट के संपर्क में आने से रोकना संभव नहीं है। इस संबंध में उनमें सही और गलत की समझ पैदा करने की जरूरत है। यदि वे ऐसी किसी मुसीबत में फंस जाएं तो उनमें इससे बाहर निकलने की क्षमता होनी चाहिए। जिस प्रकार शरीर अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा रोगों को पैदा नहीं होने देता, वैसे ही बच्चे के दिमाग़ में यह समझ पैदा करनी है ताकि वो इंटरनेट के गलत उपयोग का शिकार न हो सके। इंटरनेट ज्ञान के प्रति बच्चे का सकारात्मक दृष्टिकोण से मार्गदर्शन करना चाहिए। उनसे तीन बातों के बारे में बात करें – पहला, वे ऑनलाइन किसके साथ बातचीत करते हैं, दूसरा, वे ऑनलाइन किन साइट्स में जाते हैं, और तीसरा, वे ऑनलाइन किन लक्ष्यों का पीछा करते हैं? उन्हें आगे आने वाले खतरों के बारे में बताते रहें। अपने बच्चे के लिए नियम बनायें कि वे इसका अति प्रयोग न करें। बच्चे को बिना शर्त प्यार और समर्थन दें। हर मामले और परिस्थिति में बातचीत का विकल्प खुला रखें। यदि माता-पिता हर समय अपने स्मार्टफोन पर पोस्ट चेक करते रहेंगे, तो बच्चा भी ऐसा ही करेगा। जैसे-जैसे आपका बच्चा बड़ा होता जाए, अपने संवाद और नेतृत्व के तरीके में बदलाव लाएं।

बच्चों को सोशल नेटवर्किंग से सुरक्षित रखें :

1- बच्चे को चेतावनी दें कि वह केवल इतनी व्यक्तिगत जानकारी ही दे कि देखने वाले को केवल बुनियादी जानकारी ही मिल सके।

2- अपनी पहचान से संबंधित कोई भी बात उजागर न करें। कभी भी अपनी फोटो, ईमेल अकाउंट/व्यक्तिगत जानकारी अजनबियों के साथ साझा न करें।

3- यदि आप किसी व्यक्ति की पोस्ट से परेशान हैं, जिसमें आपके बारे में नकारात्मक बातें कही गई हैं, तो अपने दोस्तों, माता-पिता या शिक्षकों को इसके बारे में बताएं।

4- अपना पासवर्ड ऐसा रखें कि कोई दूसरा व्यक्ति उसका अनुमान न लगा सके। अपना पासवर्ड कभी किसी के साथ साझा न करें।

5- अपने दोस्तों को समझें। अपने ऑनलाइन दोस्तों पर आँख मूंदकर भरोसा न करें।

6- वेबसाइट और ऐप्स का उपयोग कैसे करना है यह अच्छे तरीके से सीखें। माता-पिता-बच्चे में यह विश्वास पैदा करें कि वो इंटरनेट से संबंधित किसी भी तरह के मुद्दे पर बात कर सकते हों। वे उनकी समस्याओं और चिंताओं को समझने के लिए सदैव मौजूद रहे।

गलत आदमी को पहचानें

माता-पिता को अपने बच्चों को यह बताना चाहिए कि वे अपने किसी भी अनजान मित्र के व्यवहार के प्रति सचेत रहें। अगर कोई आपकी तारीफों के बेवजह पुल बांध रहा है और आपकी फोटो को बेहद खूबसूरत और सेक्सी बता रहा है तो थोड़ा सावधान हो जाइए, वो आपके साथ कुछ अनुचित करने की कोशिश कर रहा है।

माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने बच्चों को बताएं कि यदि कोई आपको किसी की आपत्तिजनक तस्वीर भेजता है और आपसे अपनी भी वैसी ही तस्वीर भेजने के लिए कहता है, तो सावधान रहें, क्योंकि यदि आपने 'नहीं' कहा, तो वे आपकी तस्वीर/बात आपके मित्रों और रिश्तेदारों के साथ साझा करने की धमकी देकर आपको ब्लैकमेल कर सकते हैं।

ऐसी स्थिति में अपने माता-पिता से यह बात साझा करें।

धमकाने पर क्या करें

माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने बच्चों को बताएं कि इंटरनेट पर कितने गलत लोग झूठ बोलते हैं तथा दबाव और धमकियां देते हैं। यदि कोई आपको धमकाता है, यदि वह आपकी पहुँच में है, तो उससे सामाजिक रूप से बात करें और उसे सुधरने के लिए कहें। यदि ऐसा करना संभव न हो या उनका व्यवहार न बदले तो इसकी सूचना पुलिस को दें। यदि धमकाने वाला कहता है कि पुलिस उसे इंटरनेट पर कभी नहीं ढूंढ सकती, तो ऐसा बिल्कुल नहीं है। पुलिस उसे इंटरनेट के डिजिटल फुटप्रिंट के साथ ढूंढ निकालेगी। भले ही वह विदेश में ही क्यों न हो। यदि आपने किसी से कोई रहस्य साझा भी किया है, तो दबाव और ब्लैकमेल होने के बजाय, किसी विश्वसनीय व्यक्ति से बात साझा करें।

बच्चों के मित्र बनें

यदि कोई बच्चा इंटरनेट और सोशल मीडिया पर घंटों बिताता है और अचानक जब उसका मोबाइल इंटरनेट बंद हो जाता है तो वह घबरा जाता है, मानो उसकी जीवन रेखा ही कट गई हो, तो ये इस बात की चेतावनी संकेत हैं कि वह बहुत आगे निकल गया है। इस उम्र में बच्चे विपरीत लिंग के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं इसमें अधिकतर फर्जी प्रोफाइल होते हैं। उसे बताएं कि सोशल नेटवर्क की ऑनलाइन आभासी(Virtual) दुनिया में किया गया प्रोजेक्ट पूरी तरह सच नहीं है। बच्चे की इंटरनेट की लत को नियंत्रित करने के लिए अलार्म सिस्टम बनाएं, यानी तय समय अवधि में ही इंटरनेट का इस्तेमाल करें। जैसे ही घंटी बजे, बच्चे को इंटरनेट से कुछ समय के लिए मुक्त कर दें। जैसे ही समय समाप्त होने का अलार्म बजेगा, बच्चा अपने आप इंटरनेट से दूर हो जाएगा। माता-पिता को स्वयं को अच्छा रोल मॉडल बनाना चाहिए।

जब कोई बच्चा सोशल नेटवर्किंग का शिकार हो जाता है, तो यह बहुत नुकसानदायक हो सकता है। जब उसकी मासूम भावनाएं टूटती हैं तो वह अवसाद में चला जाता है। ऐसा लगता है कि वे पढ़ाई में पिछड़ रहा है और खाना-पीना छोड़ रहा हैं। माता-पिता उनके मित्र बनें, यदि वो अपने साथ हुए किसी धोखे के बारे में बता रहा हों तो उसकी बात शांति से सुनें। यदि उनकी तस्वीर का दुरुपयोग किया गया है तो पुलिस में शिकायत दर्ज कराएं। पुलिस मामले की गोपनीय रखेगी, डरो मत कि अगर लड़की के बारे शिकायत है और बदनामी होगी। बच्चों को इसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं से अवगत अवश्य करवाएं। यद्यपि आज के समय में ज्ञान प्राप्ति के लिए इंटरनेट/सोशल मीडिया मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि इसका दुरुपयोग भी विनाशकारी है। इसलिए बच्चों को इसका उपयोग करने से रोकना समाधान नहीं है, बल्कि उन्हें इसका उचित और सीमित उपयोग सिखाना आवश्यक है।



सख्त कानून

(बच्चों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग का मुद्दा)

– राजपाल सिंह

बच्चों को इंटरनेट पर सोशल साइट्स देखने से रोकने के लिए ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा लाया गया कानून दुनिया भर में चर्चा का विषय बना हुआ है। यह एक 'चलंत वैश्विक मुद्दा बन चुका है कि बच्चे सोशल मीडिया पर बहुत समय बर्बाद करते हैं। इससे भी आगे, वे इन साइट्स पर अश्लील दृश्य, हिंसक फिल्में देखते हैं और ऐसा कंटेंट देखते हैं जो उन्हें आत्महत्या और नशे की ओर प्रेरित करता है। इसके चलते उनकी मानसिकता पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं। उनमें किताबें पढ़ने की रुचि घट रही है। वे खेलने-कूदने की बजाय पूरा दिन मोबाइल लेकर बैठे रहते हैं।

ऐसे हानिकारक प्रभावों को देखते हुए अन्य देशों ने भी बच्चों को हानिकारक कंटेंट देखने से रोकने के लिए कुछ नियम बनाए हैं, लेकिन वे प्रभावी सिद्ध नहीं हो पाए हैं। अब ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा लाया गया कानून काफी सख्त है, जिस कारण इस पर वैश्विक स्तर पर बहस छिड़ गई है।

नया ऑस्ट्रेलियाई कानून क्या है ?

इस संबंध में ऑस्ट्रेलिया की संसद में एक बिल पेश किया गया। यह बिल 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को फेसबुक, स्नैपचैट, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) और टिकटॉक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के उपयोग पर रोक लगाता है। इस रोक को लागू करने की जिम्मेदारी सोशल मीडिया कंपनियों पर डाली गई है। यदि कोई कंपनी इस रोक को लागू करने में असफल रहती है, तो उस पर 5 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। कंपनियों को कहा गया है कि वे ऐसी तकनीकें लागू करें जिससे उपयोगकर्ता की उम्र की पुष्टि हो सके।

ऑस्ट्रेलिया की लोकसभा ने 27 नवंबर को इस बिल को भारी बहुमत से पास किया और अगले ही दिन ऑस्ट्रेलियाई सीनेट ने भी इसे बहुमत से पास कर दिया। इस तरह यह कानून बन गया, लेकिन सरकार ने इसके क्रियान्वयन के लिए एक वर्ष का समय दिया है ताकि सोशल मीडिया कंपनियां इसे सही ढंग से लागू करने की तैयारी कर सकें।

जनता की प्रतिक्रिया

इस बिल को आम जनता का समर्थन मिल रहा है। सरकार की विरोधी पार्टी ने भी इसका समर्थन किया है। ऑस्ट्रेलिया के सभी राज्यों के प्रमुख नेताओं ने भी इस पर सहमति जताई है। जिन कुछ सदस्यों ने इसके खिलाफ वोट दिया है, वे इस समस्या को नकार नहीं रहे, लेकिन उनका संदेह है कि इस कानून से सरकार आम लोगों की निजता में दखल देगी या इसे लागू करना कठिन होगा।

दूसरी ओर, सोशल मीडिया कंपनियां इसका विरोध कर रही हैं, जो कि स्वाभाविक है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' के मालिक और चर्चित अरबपति एलन मस्क ने इस बिल की आलोचना करते हुए कहा है कि ''यह पिछले दरवाजे से सभी ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों की इंटरनेट तक पहुँच को नियंत्रित करने का प्रयास लगता है।''

कुछ लोगों ने 16 वर्ष की आयु सीमा को अधिक माना है। उल्लेखनीय है कि फ्रांस ने सोशल मीडिया इस्तेमाल के लिए 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए माता-पिता की अनुमति का नियम बना रखा है। वहीं अमेरिका में 13 वर्ष की उम्र तक माता-पिता की अनुमति जरूरी है। लेकिन जिन देशों में ऐसे नियम हैं, वहाँ भी इनका खास पालन नहीं होता। बच्चे गलत उम्र दर्ज करके अपने खाते बना लेते हैं। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने कंपनियों की जिम्मेदारी तय करके और भारी जुर्माने की व्यवस्था करके सख्त कदम उठाया है, जिससे सोशल मीडिया कंपनियाँ परेशान हैं।

उम्र की जांच कैसे संभव

इस कानून को लागू करने में सबसे बड़ी समस्या सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की उम्र की पुष्टि करने की है। क्योंकि बच्चे अपनी उम्र के बारे में गलत जानकारी दे सकते हैं। उदाहरण के लिए इंस्टाग्राम पर 13 वर्ष से कम उम्र का बच्चचा खाता नहीं बना सकता, जिसके लिए उसे जन्म तिथि भरनी होती है। लेकिन वह सही जन्म तिथि भर रहा है या गलत, इसकी कोई जांच नहीं होती। ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने सोशल मीडिया कंपनियों को इसकी पुष्टि के इंतज़ाम करने को कहा है। इसके लिए या तो सरकार द्वारा जारी पहचान पत्र (जैसे भारत में आधार कार्ड) की जानकारी भरनी होगी या मोबाइल में चेहरा पहचानने वाला सॉफ्टवेयर अनिवार्य करना होगा। इस

जांच की व्यवस्था न करने पर कंपनियों पर भारी जुर्माना लगाया जा सकता है।

सोशल मीडिया के दुरुपयोग के दुष्परिणाम

सोशल मीडिया का उपयोग दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहा है। यह अन्य लोगों से जुड़ने और विचार साझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। लेकिन इसका अत्यधिक प्रयोग कई लोगों को इसकी लत लगा देता है। जब इन्हें इससे दूर किया जाता है, तो नशे की तरह इन्हें झटका लगता है, वे असली दुनिया से कटने लगते हैं, नींद कम लेते हैं और कई मानसिक विकार पैदा हो जाते हैं। खासकर बच्चे और किशोर उम्र के युवा इसके नुकसान से अनजान होते हैं, जिस कारण वे इन दुष्प्रभावों का ज्यादा शिकार बनते हैं।

इसके अलावा, सोशल मीडिया का उपयोग करके आपराधिक प्रवृत्ति के लोग बच्चों को नशे और अपराध की दुनिया की ओर ले जाते हैं। हजारों ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनमें चालाक लोग फर्जी आईडी बनाकर नाबालिग बच्चियों को गुमराह कर उनकी ज़िंदगी खराब कर चुके हैं।

अन्य पक्ष

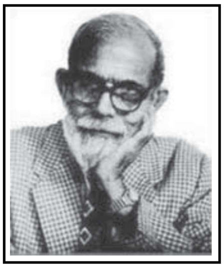
बिना शक इंटरनेट जानकारी का विशाल स्रोत है, जिसकी जानकारी को बच्चे अपनी पढ़ाई में इस्तेमाल कर सकते हैं और कर भी रहे हैं। इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि सख्त कानून की बजाय इसकी सही उपयोगिता के बारे में बच्चों और अभिभावकों को शिक्षित करने की ज़रूरत है। वे यह भी कहते हैं कि हम अपने बच्चों को आधुनिक तकनीकों से वंचित नहीं रख सकते। इसके अलावा हमारे जैसे देशों में ऐसा कोई कानून बनने की संभावना बहुत कम है और अगर बन भी जाए तो उसे सही रूप में लागू करना कठिन है, यह हम सभी जानते हैं। इसलिए इंटरनेट और सोशल मीडिया के दुरुपयोग से होने वाले नुकसान के बारे में जागरूकता फैलाना भी एक जरूरी कार्य है।

बहरहाल, इस समय पूरी दुनिया के जागरूक लोगों की नजरें ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा लाए गए इस कानून के लागू होने और उसके परिणामों पर टिकी हुई हैं। ऑस्ट्रेलिया के इस प्रयोग की रोशनी में इस समस्या के हल के लिए और भी रास्ते निकल सकते हैं। यह देखना भी दिलचस्प होगा कि क्या ऑस्ट्रेलियाई सरकार सोशल मीडिया और आईटी सेक्टर से जुड़ी कॉर्पोरेट लॉबी का दबाव झेल सकेगी।

अनुवाद : अजायब जलालाना

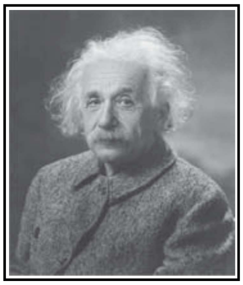
मो. : 98767-10809

डॉ. अब्राहम टी. कैवूर



अपना जीवन लोगों को अंधविश्वास के बजाय तार्किक ढंग से सोचना सिखाने में बिताने वाले डॉ. कावूर का जन्म 10 अप्रैल 1897 को केरल के थिरुवल्ला शहर में हुआ था। उन्होंने लगभग आधी शताब्दी तक सभी प्रकार की मानसिक और कथित दैवीय घटनाओं पर गहन शोध किया और यह स्पष्ट किया कि ऐसे चमत्कारी दावों में कोई सच्चाई नहीं है। उन्होंने दावा किया कि जो लोग 'आध्यात्मिक' या 'अलौकिक शक्तियों' का दिखावा करते हैं, वे या तो मानसिक विकार के शिकार हैं या फिर धोखेबाज हैं। उन्होंने चमत्कारी दावों की जांच करने और उनकी सच्चाई जनता के सामने लाने के लिए दूर-दूर तक यात्रा की। उन्होंने ऐसे मामलों की जांच और सच्चाई को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया, जिनमें से एक, 'बेगोन गॉडमेन' का पंजाबी अनुवाद 'ते देव-पुरुष हार गए' और हिन्दी में '... और देव पुरुष हार गए' शीर्षक से किया गया, जिसने पंजाब में बुद्धिवादी आंदोलन की नींव रखी। उन्होंने 1963 में पाखंडियों को चुनौती दी थी, जिसे सभी महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया, लेकिन एक भी व्यक्ति इस चुनौती की शर्त नहीं जीत सका। यह चुनौती रैशनल सोसाइटी पंजाब द्वारा जारी रखी जा रही है।

आइंस्टीन का तर्क



धर्म और विज्ञान में अंतर है। भक्तों की भीड़ धर्म के सही होने का प्रमाण मानी जाती है। विज्ञान में भीड़ नहीं तर्क की प्रधानता होती है। एक बार सौ से अधिक व्यक्ति आइंस्टीन के पास, यह कहने के लिए आए कि हमने आपका सापेक्षता का सिद्धांत गलत साबित कर दिया है। आइंस्टीन ने कहा, भीड़ लाने की क्या जरूरत थी यदि सिद्धांत गलत है, तो एक व्यक्ति ही उसे गलत साबित करने के लिए पर्याप्त है।

मानसिक तनाव

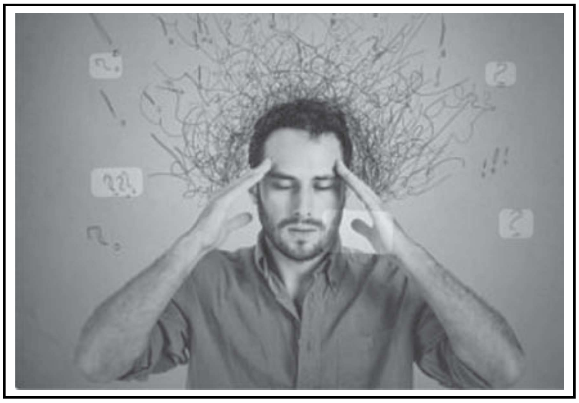


-डा. बलवंत सिंह सिद्धू

आजकल मानसिक तनाव के बढ़ते स्तर के बारे में अक्सर चर्चा होती रहती है। कई माता-पिता महसूस करते हैं कि उनके बच्चे को कई कारणों से परेशानी हो रही हैं; जैसे कि पढ़ाई चिंता, रोजगार की चिंता, शादी की चिंता आदि। बेशक, हर कोई अक्सर कहता है कि इन दिनों पूरी दुनिया में मानसिक तनाव बढ़ रहा है। क्या यह महज एक मिथक है या ऐसा सचमुच हो रहा है? आइये इस विषय पर बात करें।

तनाव किसे कहते हैं ?

तनाव एक मानसिक दबाव है जिसे हर व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी समय अनुभव करता है। यह एक व्यक्तिपरक अनुभूति है जो अप्रिय लगती है तथा परेशानी का कारण बनती है। समय के पैमाने के अनुसार तनाव दो प्रकार का हो सकता है। पहला प्रकार (तत्काल) तीव्र प्रकार है जिसमें तनाव केवल थोड़े समय के लिए होता है, जैसे कि जब किसी व्यक्ति को ऑपरेशन की आवश्यकता होती है, जैसे कि अपेंडिक्स या गुर्दे की पथरी का ऑपरेशन इत्यादि, जिसमें कठिन समय बीत जाने के बाद तनाव गायब हो जाता है। दूसरा प्रकार दीर्घकालिक तनाव (तीव्र स्थिति) है। यह तनाव काफी लंबे समय तक बना रहता है, जैसे गरीबी या दीर्घकालिक बीमारियों के कारण उत्पन्न तनाव लम्बे समय तक बना रहता है। इसके इलावा, तनाव को उसकी तीव्रता के अनुसार भी वर्गीकृत किया जाता है - हल्का तनाव, मध्यम तनाव और गंभीर तनाव।



स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य तनाव का अनुभव क्यों करता है। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि हर जीव इसे महसूस करता है, यह जीवन का अभिन्न अंग है, इसके बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। तनाव मनुष्य या किसी भी जीवित प्राणी के अस्तित्व या सुरक्षा के लिए एक आवश्यक और बुनियादी जरूरत है। यह हमें किसी भी खतरे के प्रति आगाह करता है और उससे निपटने के लिए प्रेरित करता है। यहां तक कि जंगली मनुष्य भी, जब वह किसी खतरे से डरता है, तो उससे बचने के लिए उससे लड़ता है (जैसे किसी खतरनाक जानवर से टकराव), लेकिन अगर उसे लगता है कि वह अपने सामने आए खतरे का सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सकता, तो वह खतरे से दूर भागकर बचने की कोशिश करता है। इस पुरे कार्य में तनाव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (भय, लड़ाई/संघर्ष या पलायन)। निःसंदेह, आधुनिक मनुष्य की परिस्थितियाँ बहुत बदल गयी हैं। लेकिन आज भी किसी भी खतरे से निपटने के बुनियादी नियम वही हैं और तनाव इसमें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तनाव खतरे या संघर्ष के समय व्यक्ति के प्रदर्शन को काफी हद तक बढ़ा देता है, तथा दबाव को झेलने की क्षमता भी काफी बढ़ जाती है। इसलिए तनाव, मानव सफलता में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए किसी भी परीक्षा या किसी प्रतियोगिता जैसे खेल या मैच आदि से पहले भी व्यक्ति तनाव महसूस करने लगता है इससे उसका प्रदर्शन बढ़िया हो जाता है, जो व्यक्ति ऐसे अवसरों पर बिल्कुल भी तनाव महसूस नहीं करते, अर्थात बेफिक्र रहते हैं, वे स्वाभाविक रूप से अपनी क्षमता से

कम प्रदर्शन करेंगे। अत: ऐसे आवश्यक और लाभकारी तनाव को सकारात्मक तनाव भी कहा जाता है। लेकिन जब यह तनाव अत्यधिक हो जाता है तो इसका प्रभाव सकारात्मक की बजाय नकारात्मक होने लगता है और व्यक्ति के लिए परेशानी का कारण बन जाता है। ऐसे तनाव को नकारात्मक तनाव भी कहा जाता है। इसका एक उदाहरण यह है कि कई लोग किसी भी प्रतियोगिता से पहले बहुत घबरा जाते हैं और उनका आत्मविश्वास भी खो देतें हैं और इसके कारण उनकी वास्तविक क्षमता की तुलना में उनका प्रदर्शन भी काफी कम हो जाता है। कई लोग इतने घबरा जाते हैं या डर जाते हैं कि वे मैदान छोड़कर भाग जाते हैं। सकारात्मक तनाव थोड़े समय तक या केवल आवश्यक समय तक ही रहता है। इससे शक्ति और सफलता मिलती है, प्रेरणा बढ़ती है। यह व्यक्तिगत क्षमता और मानसिकता पर निर्भर करता है। इससे हमें अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए अपनी क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करने और उनका बेहतर तरीके से उपयोग करने का साहस मिलता है। इसके विपरीत, नकारात्मक तनाव अत्यधिक चिंता और परेशानी का कारण बनता है। इसमें तनाव, व्यक्ति की क्षमता और मानसिकता से परे हो जाता है। इससे ध्यान केन्द्रित करने और कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है। लंबे समय तक तनाव में रहने के कारण व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं।

दुनिया भर में यह देखा गया है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक तनाव का अनुभव करती हैं। इसके कई कारण हैं, लेकिन स्वाभाविक रूप से सबसे बड़ा कारण लिंग भेदभाव है। कुछ वर्ष पहले, दुनिया भर के आँकड़ों के अनुसार, महिलाओं की संख्या विश्व की जनसंख्या के लगभग 50 प्रतिशत हैं, लेकिन वे विश्व का लगभग 2/3 कार्य करतीं हैं, लेकिन उन्हें 10 प्रतिशत वेतन मिलता है तथा विश्व की सम्पत्ति का केवल 1 प्रतिशत ही उनके पास है। इसे उलटाकर कहें तो इसका अर्थ यह है कि विश्व के सभी पुरुष (50 प्रतिशत, जो महिलाओं के बराबर है) केवल 1/3 काम करते हैं, लेकिन 90 प्रतिशत मजदूरी कमाते हैं तथा विश्व की कुल संपत्ति का 99 प्रतिशत उनके पास है।

अधिकांश वैज्ञानिकों का मानना है कि दुनिया में तनाव पहले की तुलना में बढ़ रहा है। एक अध्ययन के अनुसार, पिछले पांच दशकों में तनाव लगभग 50 प्रतिशत बढ़ गया है। आजकल किसी भी सामान्य अस्पताल में लगभग 25 से 40 प्रतिशत मरीज तनाव से संबंधित बीमारियों से पीड़ित हैं।

तनाव के लक्षण : अलग-अलग व्यक्तियों में तनाव के लक्षण भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। ये लक्षण शारीरिक और मानसिक दोनों हो सकते हैं। कुछ लोगों में केवल मानसिक लक्षण हो सकते हैं और कुछ में केवल शारीरिक लक्षण हो सकते हैं, लेकिन अधिकांश लोगों में दोनों लक्षण एक साथ होते हैं।

1. मानसिक लक्षण : मानसिक दबाव या तनाव, बेचैनी, बेचैनी, बार-बार तनावपूर्ण विचार आना, मानसिक एकाग्रता में कमी, चिड़चिड़ापन, नींद में कमी (नींद न आना, देर तक जागना, सुबह जल्दी उठना या नींद में खलल पड़ना आदि), याददाश्त में कमी महसूस होना, आसानी से ध्यान भटक जाना, असमंजस की स्थिति में रहना, आत्मविश्वास में कमी, अपनी रुचि वाली चीजों में रुचि कम होना, सेक्स में रुचि न होना आदि। इसके बिना ड्रग्स, शराब, अफीम, चरस, गांजा, सड़क पर बिकने वाली या अन्य प्रकार की नशीली दवाओं आदि की लत, अवसाद या अन्य मानसिक बीमारी (अभिघातजन्य तनाव विकार, द्विध्रुवी विकार आदि, या आत्महत्या का प्रयास)। ये शारीरिक लक्षणों के साथ या अकेले भी हो सकते हैं।

2. शारीरिक लक्षण : शरीर या हाथों का सुन्न होना, कंपन, शरीर या सिर में तनाव महसूस होना, दिल की धड़कन तेज होना, दिल की धड़कन तेज होना, मुंह सूखना, जी मिचलाना, बिना दस्त के बार-बार मल त्याग होना, पेट भरा हुआ महसूस होना, सिर में भारीपन या जकड़न महसूस होना, दांत पीसना, सांस फूलना, घुटन होना, बंद जगह में सांस फूलना, कंपकंपी होना, बिना किसी त्वचा रोग के बार-बार खुजली होना आदि। यह याद रखना जरूरी है कि ये सभी शारीरिक लक्षण अन्य बीमारियों के कारण भी हो सकते हैं, इसलिए शारीरिक लक्षणों को तनाव के लक्षण कहने से पहले डॉक्टरी सलाह जरूरी है।

मनोदैहिक तनाव विकार : इसमें तनाव के कारण शारीरिक रोगों के लक्षण बढ़ जाते हैं। इसका मतलब यह है कि

ये सामान्य बीमारियाँ नहीं हैं; श्वास संबंधी रोग - दमा आदि, हृदय संबंधी अनेक रोग, मुंह के छाले, पेट के अनेक रोग, एलर्जी संबंधी रोग, मस्से इत्यादि।

उपरोक्त सभी या अन्य समान लक्षण तनाव के कारण उत्पन्न हो सकते हैं। लेकिन यह याद रखने योग्य बात है कि किसी भी शारीरिक लक्षण को तनाव का परिणाम मानने से पहले, उस लक्षण से जुड़ी शारीरिक बीमारियों के बारे में किसी अच्छे डॉक्टर से सलाह ले लेनी चाहिए तथा उससे संबंधित किसी भी बीमारी के बारे में किसी भी तरह की शंका को दूर कर लेना चाहिए। थायरॉइड विकार जैसी कई बीमारियां भी ऐसे लक्षण पैदा कर सकती हैं।

पैनिक अटैक या घबराहट का दौरा :

कभी-कभी व्यक्ति को अचानक इतनी घबराहट महसूस होती है कि वह बहुत बेचैन/चिंतित हो जाता है और उसे लगता है कि उसे कुछ हो जाएगा या वह मर जाएगा।

बच्चों में तनाव के लक्षण : यद्यपि बच्चों में वयस्कों वाला उपरोक्त में से कोई भी लक्षण हो सकता है, परन्तु उनमें कुछ विशेष लक्षण भी हो सकते हैं, जैसे- स्कूल या कॉलेज जाने से डरना, पढ़ाई में होशियार होने के बावजूद पढ़ाई में मन न लगना या पढ़ाई छोड़ देना, व्यवहार में अचानक परिवर्तन आना, चुप-चुप रहना, हर समय उदास रहना, बार-बार बुरे सपने आना, नींद न आना या बहुत अधिक सोना, भूख न लगना या बहुत अधिक लगना, ध्यान न लगना या खोया-खोया रहना, खाना न खाना, चिड़चिड़ा होना, मन ही मन बातें करना, बार-बार इधर-उधर घूमना, बार-बार गुस्सा आना, बहुत अधिक गुस्सा आना, डरना, लगातार रोना, सुस्त रहना, लोगों से मिलने से डरना या घबराना, माता-पिता को नजरों से ओझल न होने देना, बड़े बच्चों का बिस्तर पर पेशाब निकलना, बाल नोचना, जोखिम उठाना, नशीले पदार्थों का सेवन करना, आत्महत्या का प्रयास करना या स्वयं को नुकसान पहुंचाना।

(अगले अंक में तनाव के कारण, प्रभाव और रोकथाम के बारे में बताया जाएगा।)

पूर्व प्रिंसिपल/प्रोफेसर और प्रमुख,
मनोचिकित्सा/नशा मुक्ति विभाग,
राजिन्द्रा अस्पताल, पटियाला

पुस्तक 'मंत्र'



किताबें पढ़ने की आदत से पापा की दिनचर्या पूरी तरह बदल गई। सहजता उनके स्वभाव में आ गई। उन्होंने अपना गुस्सा त्याग दिया और विनम्रता से बात करना शुरू कर दिया। घर में लड़ाई-झगड़े और संघर्ष की जगह मित्रता और स्नेह ने ले ली। मेरी माँ की खुशी का ठिकाना नहीं है। वे कहते, ''तुम्हारे पिता को सही रास्ते पर लाने के लिए मैंने क्या नहीं किया? मैं हर मंदिर, तांत्रिक, ज्योतिषी और तंत्र-मंत्र करने वालों के पास गया।'' मैं धार्मिक स्थलों पर गया, मन्नतें मांगीं, प्रार्थनाएं कीं, लेकिन मुझे कहीं से कोई मदद नहीं मिली। किसी के द्वारा दिया गया धागा, ताबीज या मंत्र किसी काम का नहीं था। मुझे आपकी विधि समझ में नहीं आ रही है, जिसने आपके पिता को बदल दिया। मेरा जवाब था, माँ, यह पुस्तक एक 'मंत्र' है। जो जीवन का सत्य सिखाता है और मार्ग दर्शन करता है।

निराशा क्यों!

''अगर मैं इस विकलांगता के बावजूद सफल हो सकता हूँ, अगर मैं मेडिकल साइंस को हरा सकता हूँ, अगर मैं मौत के रास्ते को रोक सकता हूँ, तो आप लोग जिनके सारे अंग ठीक हैं, जो चल सकते हैं, जो दोनों हाथों से काम कर सकते हैं, जो खा-पी सकते हैं, जो बात कर सकते हैं और जो अपनी सारी बातें दूसरे लोगों तक पहुँचा सकते हैं, वे निराश क्यों हैं?''

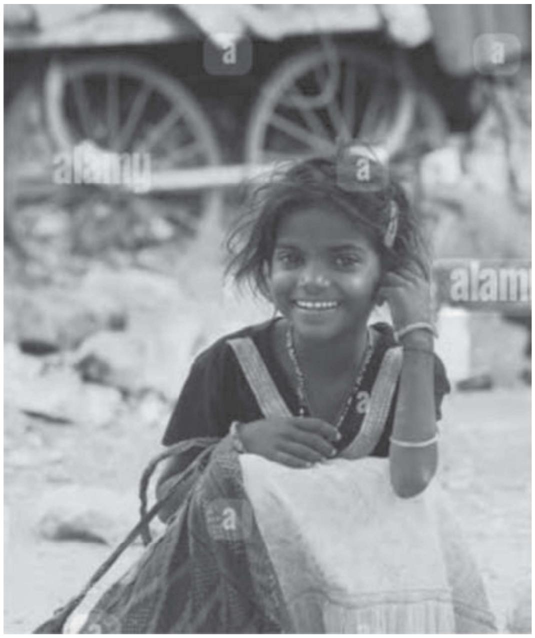
- स्टीफन हॉकिंग

अनन्या की उड़ान



प्रस्तुतकर्ता : राम स्वर्ण लाखेवाली

उत्तर प्रदेश में कानून का पालन करने की आड़ में दुकानों और मकानों को बुलडोजर से ध्वस्त करने की घटना आम बात है। यह सरकारी बुलडोजर लोगों के घरों को तोड़ रहा है और उन्हें बेघर बना रहा है। इससे बच्चों के जीने और आगे बढ़ने के सपने भी चकनाचूर हो जाते हैं। पिछले दिनों अंबेडकरनगर जिले के जलालपुर क्षेत्र के अजीतपुर गांव की घटना सोशल मीडिया के जरिए देश-दुनिया में वायरल हुई थी। जिसमें पहली कक्षा में पढ़ने वाली लड़की अनन्या की अंबर को छूने की मंशा उजागर हुई ।



गांव के एक गरीब मोहल्ले में लंबे समय से रह रहे मजदूरों को उनकी झोपड़ियों और घरों का मालिकाना हक न होने के कारण बुलडोजर से गिरा दिया गया। एक दौर ऐसा भी आया जब लोगों को उनके घरों से बाहर निकाल दिया गया, उनकी झोपड़ियों को तोड़ दिया गया और आग लगा दी गई। गरीब और असहाय लोग अपनी आंखों के सामने अपने घरों को ढहते और जलते देखने को मजबूर हैं। बस्ती में पहली कक्षा की छात्रा अनन्या ने अपनी मां से अपने स्कूल बैग के बारे में पूछा। मां ने कहा कि पुलिस ने उनकी बस्ती नष्ट कर दी है। सभी लोगों को उनके घरों से निकाल दिया गया है। तुम्हारा बैग भी घर के सामान के बीच वहीं छूट गया है। अनन्या कहने लगी, ''अब मैं पढ़ाई कैसे करूंगी, मेरा बैग और किताबें भी जल जाएंगी।''

हताश और असहाय मां ने कहा कि वह आपका बैग नहीं ला सकी, क्योंकि बस्ती पर पुलिस का नियंत्रण है। अनन्या तुरंत उठी और नंगे पाँव अपनी बस्ती की ओर दौड़ पड़ी। अपनी झोपड़ी में पहुंचकर वह बिना किसी डर या आशंका के अंदर गई और अपना बैग उठाया। अनन्या अपना बैग लेकर दौड़ रही थी। वीडियो वायरल हो गया। देश-दुनिया ने उनके सपने की उड़ान देखी और उसकी सराहना की। मीडिया उस बेघर लड़की के घर पहुंची। उन्होंने मीडिया को बताया कि वो बड़ी होकर आई.ए.एस. अधिकारी बनना चाहती हैं और गरीबों की सेवा करना चाहती हैं। घर की इच्छा व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, ''मैं चाहती हूँ कि मेरे पिता किसी बड़े शहर में काम करें और वहीं रहें, हमारा अपना खुद का घर हो।''

बेटी का वीडियो वायरल होने पर अनन्या के मजदूर पिता ने कहा कि वह अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। मां ने बताया कि अनन्या को पढ़ाई में बहुत रुचि है। अंग्रेजी उसका पसंदीदा विषय है। वह लगन से पढ़ाई करती है। जब वीडियो वायरल हुआ तो कई लोग और सामाजिक और राजनीतिक संगठन अनन्या की उच्च शिक्षा के लिए समर्थन देने के लिए आगे आए। झोपड़ी में जन्मी और पली-बढ़ी इस लड़की ने अपनी इच्छा और आगे बढ़ने की चाहत सभी छात्रों तक अप्रत्यक्ष रूप मे पहुँचा दी।

किसी को प्रयास करना कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए। सफल हुआ प्रयास संकल्प को मजबूत करता है। कड़ी मेहनत और लगन से हालात बदले जा सकते हैं। मन में इच्छा हो तो रास्ते निकल ही आते हैं। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने या हतोत्साहित महसूस करने से लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत, समर्पण और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

स्त्रोत: इंटरनेट (बीबीसी पंजाबी पर आधारित: नीटू सिंह तारिक खान की रिपोर्ट)

शंका निवारण



प्रश्न 1-ब्लैकआउट क्या है?

युद्धकालीन ब्लैकआउट बाहरी प्रकाश व्यवस्था को कम करने या समाप्त करने की एक प्रथा है, जिससे दुश्मन सेना, विशेष रूप से विमानों के लिए लक्ष्यों की पहचान करना कठिन हो जाता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से 20वीं शताब्दी में, विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, शहरों के बुनियादी ढांचे और जहाजों को हवाई और नौसैनिक हमलों से बचाने के लिए किया गया था। ब्लैकआउट के दौरान बल्ब, टार्च, चुल्ले में आग जलाना इत्यादि की सख्त मनाही होती है।

ऐतिहासिक संदर्भ :

प्रथम विश्व युद्ध :

ब्लैकआउट की अवधारणा 1914 में सामने आई जब यूनाइटेड किंगडम ने जर्मन ज़ेपेलिंस से लक्ष्यों को छिपाने के लिए तटीय शहरों में उपाय लागू किए।

द्वितीय विश्व युद्ध :

युद्ध की औपचारिक घोषणा से पहले 1 सितम्बर 1939 को ब्रिटेन में ब्लैकआउट नियम लागू किये गये थे, जिसके तहत नागरिकों को प्रकाश के रिसाव को रोकने के लिए खिड़कियों और दरवाजों को ढकना अनिवार्य कर दिया गया था।

प्रश्न 2-राडार (RADAR) सिस्टम क्या होता है और इसका उपयोग कहाँ होता है?

रडार सिस्टम रेडियो तरंगों का उपयोग करके वस्तुओं का पता लगाता हैं। इसमें रेडियो तरंगों को संचारित करते हैं, जो वस्तुओं द्वारा परावर्तित होकर वापस आती हैं, जिससे सिस्टम को लौटने वाले सिग्नल का विश्लेषण करने और वस्तु के स्थान और गति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। रडार सिस्टम में हवाई यातायात नियंत्रण, मौसम निगरानी और सैन्य रक्षा सहित कई तरह के कार्यों में प्रयोग में लाया जाता है।

उपयोग :

सैन्य : विमान, मिसाइलों और अन्य लक्ष्यों का पता लगाना और उन पर नज़र रखना।

वायु यातायात नियंत्रण : हवा में विमान का मार्गदर्शन और निगरानी करना।

मौसम निगरानी : वर्षा, तूफान और अन्य मौसमी घटनाओं का अवलोकन करना।

मार्गदर्शन : जहाजों और विमानों को मार्गनिर्देशन में सहायता करना, विशेष रूप से खराब दृश्यता की स्थिति में।

ऑटोमोटिव : अनुकूली क्रूज नियंत्रण, टक्कर से बचाव और स्वचालित ब्रेकिंग जैसी सुविधाओं को सक्षम करना।

अन्य : इसका उपयोग विभिन्न औद्योगिक अनुप्रयोगों में किया जाता है, जैसे सामग्री परीक्षण, तथा पर्यावरण के सुदूर संवेदन में।

प्रश्न-3 सप्ताह के दिनों के नाम कैसे बने ?

सप्ताह के दिनों का नाम आकाशीय पिंडों (सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों) और उनसे जुड़े रोमन देवी-देवताओं के नाम पर रखा गया था। रोमनों ने इस प्रणाली को बेबीलोनियों से अपनाया, जिन्होंने सात आकाशीय पिंडों का अवलोकन किया और उन्हें अपने देवताओं के साथ जोड़ा।

यहाँ अधिक विस्तृत विवरण दिया गया है :

रविवार :

इसका नाम सूर्य के नाम पर रखा गया है, जिसे लैटिन में सोल के नाम से भी जाना जाता है, जो रोमन धर्म में सूर्य से जुड़ा एक देवता है।

सोमवार :

इसका नाम चंद्रमा के नाम पर रखा गया है, जिसे लैटिन

में लूना के नाम से भी जाना जाता है, जो रोमन धर्म में चंद्रमा से जुड़ा एक देवता है।

मंगलवार :

इसका नाम रोमन युद्ध के देवता मार्स के नाम पर रखा गया है, जो मंगल ग्रह से भी जुड़े थे।

बुधवार :

इसका नाम रोमन दूत देवता मर्करी के नाम पर रखा गया है, जो बुध ग्रह से भी जुड़े थे।

गुरुवार :

इसका नाम आकाश के रोमन देवता जुपिटर के नाम पर रखा गया है, जो बृहस्पति ग्रह से भी जुड़े थे।

शुक्रवार :

इसका नाम प्रेम की रोमन देवी वीनस के नाम पर रखा गया है, जो शुक्र ग्रह से भी जुड़ी हुई थीं।

शनिवार :

इसका नाम कृषि के रोमन देवता सैटर्न के नाम पर रखा गया है, जो शनि ग्रह से भी जुड़े थे।

जर्मनिक भाषाओं में, सप्ताह के दिनों का नाम भी उनके देवताओं के नाम पर रखा गया था :

मंगलवार : इसका नाम युद्ध और आकाश के देवता, टिव (Tuesday) के नाम पर रखा गया है।

बुधवार : इसका नाम नॉर्स पौराणिक कथाओं के मुख्य देवता वोडेन (Wednesday) के नाम पर रखा गया है।

गुरुवार : इसका नाम नॉर्स भाषा के वज्र देवता थोर (Thursday) के नाम पर रखा गया है।

शुक्रवार : इसका नाम प्रेम और सौंदर्य की नॉर्स देवी फ्रेया (Friday) के नाम पर रखा गया है।

सप्ताह के दिनों के नाम विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में अलग-अलग प्रचलित रहे हैं, तथा इनका संबंध आकाशीय पिंडों और प्राचीन सभ्यताओं के देवताओं से बना हुआ है।

प्रश्न 4-कोई काला रंग है ?

प्रकृति में सूर्य के प्रकाश में केवल सात रंग होते हैं। कोई वस्तु हमें उसी रंग की दिखाई देती है जिस रंग को वह परावर्तित करती है। लेकिन जब कोई वस्तु प्रकाश के सभी सात रंगों को अवशोषित कर लेती है, तो वह हमें काली दिखाई देती है। इसलिए, काला अपने आप में कोई रंग नहीं है। आइये वर्षा बादलों का उदाहरण लें। वे प्राय: काले होते हैं। इनमें पानी की बूंदें या कण अधिक होते हैं। जो सूर्य के प्रकाश को अपने अंदर अवशोषित कर लेते हैं। प्रकाश के सात रंगों में से कोई भी रंग परावर्तित नहीं होता। इसीलिए बारिश के बादल हमें काले दिखाई देते हैं। लेकिन कभी-कभी बादल सफेद भी दिखते हैं - क्या आप जानते हैं क्यों ? उनमें पानी की बूंदों ने बर्फ का रूप ले लिया होता है। बर्फ पारदर्शी होती है, जिससे प्रकाश हम तक पहुँचता है और ये दूधिया सफेद दिखाई देती हैं। यही घटना दुनिया की अन्य वस्तुओं के रंगों के साथ भी घटित होती है। सात रंगों में से, जो रंग कोई वस्तु अवशोषित करती है वो हमें दिखाई नहीं देता, लेकिन जो रंग उस वस्तु से टकराकर हमारी आंखों तक पहुंचता है, वही रंग उस वस्तु का हमें दिखाई पडता है। ये सातों रंग आकाश में इंद्रधनुषी बादलों से स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह इंद्रधनुष आमतौर पर बारिश के बाद धूप के कारण बनती हैं। इसे आम लोग बूढ़ी माई का झूला कहते हैं। वह कौन थी, कहां से थी और कैसे आकाश में पहुंची? किसी को मालूम नहीं।

युद्ध समझौता रहित है।

शुरूआत हमारी अंत तुमारा
सुनिति करने के लिए
अभी भी मंथन जारी है
समुद्र अमृत के लिए।
कटी हुए उँगलियाँ वाले लोग
पहुँचे गे आपके दरबार में
लेकिन निशाना मछली नहीं
तेरी आँख में लगाने के लिए
ड्रैगन, सांप, नेवले
सब आपकी आस्तीन में तेरे
फिर भी जेड प्लस सुरक्षा
रखते हैं किस लिए?
हार जीत के मायने नहीं
है युद्ध समझौता रहित
है, हार में भी जीत होती
आगामी शिक्षा के लिए।

-हरमेश मालड़ी

बच्चों के लिए अर्थशास्त्र

क्या कागज ने, सोने को हटाकर पैसे की जगह ले ली है?

– रंगनायकम्मा

जब 'कागज के नोट' आये, तो क्या सोने ने कागज को अपना पैसे का दर्जा सौंप दिया? नहीं। सोना अब भी 'पैसे' के रूप में ही कायम रहता है। किसी वस्तु के विनिमय के लिए कागज के नोट देने पर भी गणना सारी सोने के मूल्य से ही तय होती है। बिक्री के बाद हम पूरा पैसा जमा करके रख सकते हैं पूरा नहीं तो कुछ पैसे तो रख ही सकते हैं। यह संभव होने के कारण ही समाज में पैसे संचित करने की नई प्रथा चल पड़ती है। कुछ व्यक्ति पैसों को संचित करने वाले हो सकते हैं, जबकि दूसरे व्यक्ति कुछ भी संचित न करने वाले हो सकते हैं।



ऐसी स्थिति जहाँ बेचना और खरीदना अलग-अलग होता हो, बिक्री और खरीद के बीच तालमेल बिगड़ जाने की समस्या को जन्म दे सकती है। यह हम देखेंगे संकट वाले पाठ में।

शुरुआत में 'पैसा क्या होता है?' इस सवाल से हमने जो चर्चा आरंभ की थी वह अब पूरी हो चुकी है पैसा समस्त माल के मूल्य का एकमात्र रूप है।

सवाल और जवाब

1-एक रूपये के सोने के सिक्के के स्थान पर कागज का नोट परिचालन में आ चुका है अब पैसे कौन से होंगे सोने वाले या कागज वाले ?

जवाब : पैसे अभी भी सोना ही हैं, न कि कागज लेकिन सोने के सिक्के परिचालन के दौरान घिस जाते हैं, इसलिए यह काम सोने के सिक्के कि बजाय कागज का टुकड़ा कर रहा होता है। बात इतनी ही है कि प्रचलन का कार्य जारी रखने के लिए कागज के नोटों के स्थान पर कोई और प्रणाली आ जाए तो भी सोना ही पैसों का काम करता रहेगा। पैसों की गणना सोने के मूल्य से होती है।

2-सोने के पैसों का अपना मूल्य होता है कागज की पैसों का अपना कोई मूल्य नहीं होता फिर भी कागज के पैसे कैसे काम आ पाते हैं ?

जवाब: कागज के पैसे परिचालित होते हैं सोने के पैसे के मूल्य के आधार पर। जब कोई कुम्हार अपना घड़ा बेचकर एक कागज का रुपया प्राप्त करता हो, तो यह उसे कागज के टुकड़े का नहीं बल्कि सोने का मूल्य होता है। कुम्हार के पास कागज का टुकड़ा आए तो भी इसका मतलब यही होता है कि सोने का सिक्का आया है।

3-सार्वभौमिक पैसा क्या होता है?

जवाब : वह पैसा जो पूरी दुनिया में चलता हो सार्वभौमिक पैसा होता है जो सभी देशों में पैसे का काम करें, यानी सोना। एक देश दूसरे देश से कुछ माल खरीदना है और अपना माल दूसरे देश को बेजता है फिर दोनों देश अपना हिसाब मिलाते हैं। अगर प्राप्त किया जाने वाला पैसा और भुगतान किया जाने वाला पैसा बराबर-बराबर हो, तो किसी भी देश को दूसरे को कोई पैसे देने नहीं होते, मगर एक देश को दूसरे देश को कुछ पैसे देने होते हैं तो एक देश के कागज के नोट दूसरे देश में मान्य नहीं होते। बकाया मूल्य के बराबर सोने की ईंटें देनी पड़ती है। सोने के सिक्के दिए जाएं तो भी दूसरे देश में काम नहीं आते। उस देश के लोग इन सिक्कों की ईंटें बना सकते हैं। सभी देशों में सोना ही वास्तविक पैसा होता है। इसीलिए तो यह सार्वभौमिक पैसा है।

4-सभी देशों में क्या अभी कागज के पैसे ही चलते हैं? क्या किसी-किसी देश में अभी सोने के सिक्के परिचालन में है?

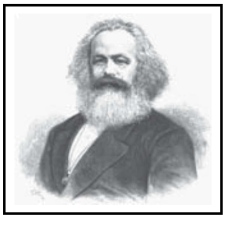
जवाब : आज हम किसी भी देश में सोने के सिक्के परिचालन में नहीं देखते। सभी देशों में कागज के ही पैसे होते हैं। मगर देश विशेष के कागज के नोट उसी देश में ही परिचालित हो पाते हैं। एक देश के कागज के नोटों का दूसरे देश में प्रचलन की अनुमति नहीं होती।

5-घड़ा = 1 रूपये का सिक्का। पर मान ले एक रुपए के सिक्के के एवज में चार कागज के रुपए परिचालन में हो। अब एक घड़ा बेचने पर हमें कितने कागज के रुपए मिलने चाहिए ? और क्यों ?

जवाब: एक सोने के रुपए की एवज में चार कागज के रुपए होने के कारण एक सिक्के का मूल्य चार कागज के रुपए हो जाता है। इसीलिए घड़े की एवज में चार कागज के रूपये मिलने चाहिए।

6-तमाम देशों के बैंकों में जो टनों-टन सोना रखा होता है, उसका अंत क्या होगा ?

जवाब : समाज में अगर पैसों वाली विनियम प्रणाली चलती रहे, तो सोने के जमावड़े जैसे के तैसे रह जाएंगे। पैसे कागज के रूप में हो या किसी और रूप में उनका वास्तविक आधार सोना ही होता है। इसका कोई अंत नहीं। जब विनियम की प्रणाली विलुप्त हो जाएगी तो हम उस सोने को बाहर निकाल कर दीवारें बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।



विज्ञान तक पहुंचने का कोई शाह मार्ग नहीं है, और केवल वे लोग ही इसकी चमकदार चोटियों तक पहुँचने में सफल होते हैं, जो इसके तीखे खड़े पहाड़ी रास्तों की कठिन चढ़ाई से डरते नहीं हैं।

केवल अपने लिए कार्य करने से कोई प्रसिद्ध विद्वान, महान संत या अच्छा लेखक तो बन सकता है, लेकिन पूर्ण और सच्चा इंसान नहीं बन सकता।

-कार्ल मार्क्स

न्यूटन की दृढ़ता



विश्व प्रसिद्ध आविष्कारक न्यूटन ने अपनी लगन, जिज्ञासा और कड़ी मेहनत से अपना लक्ष्य हासिल किया। 1666 में एक घटना ने न्यूटन के दिलो- दिमाग को प्रभावित किया। जब वह सेब के पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। एक सेब शाखा से टूटकर ज़मीन पर गिर गया। न्यूटन के जिज्ञासु मन को आश्चर्य हुआ कि सेब ऊपर क्यों नहीं गया। यह पृथ्वी पर क्यों गिरा ? यही विचार 'पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल' की अवधारणा के साथ दुनिया के सामने आया। पृथ्वी का यह खिंचाव चंद्रमा का पथ निर्धारित करता है। ब्रह्माण्ड अलग अलग आकाशी पिंडों के पारस्परिक गुरुत्वाकर्षण के कारण ही अपने पथ पर आगे बढ़ रहा है। न्यूटन ने गिरते सेब के विचार द्वारा ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने में आसानी पैदा कर दी।

न्यूटन ने केप्लर के ग्रहीय गति के नियमों के आधार पर गुरुत्वाकर्षण आकर्षण के नियमों की खोज की। उन्होंने 23 वर्ष की आयु तक विश्व प्रसिद्ध गणितीय खोजें कर ली थी। अपने शोध कार्य में वे खाना-पीना और यहां तक कि कपड़े पहनना भी भूल जाते थे। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के नियम को कागज पर लिखकर सुरक्षित रख लिया। उनके पास इस ऐतिहासिक शोध को प्रकाशित करने के लिए पैसे नहीं थे। उनके एक मित्र हैली ने खर्च का प्रबंध किया और न्यूटन के शोध कार्य 'प्रिंसिपिया मैथमेटिका' को 1687 में प्रकाशित कराया। आज के भौतिक विज्ञान का आधार न्युटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम बने।

बाल कोना

पीपल के नीचे भूत

- टिकेश कुमार -

जब मैं लगभग 6-7 वर्ष का छोटा सा बच्चा था। उस समय गांव में बिजली की कमी के कारण अंधेरा रहता था। गलियों में लाईट नहीं थी। गांव के कई घरों में बिजली नहीं थी और थी भी तो एक बल्ब, जो घर के अंदर ही जल्लता था। घर के द्वार पर कोई लाईट नहीं होती थी, इसलिए गली में चलने वाले लोगों को अंधेरे का सामना करना पड़ता था।

एक दिन की बात है, शाम के समय हम कुछ दोस्त तालाब के पास घूमने के लिए निकले और तालाब के पार बैठकर, हम सब आपस में बातें कर रहे थे। हमें समय का पता ही नहीं चला। रात होने लगी, तभी अचानक हमारी दृष्टि पीपल के पेड़ के नीचे बुंग बुंग (झिलमिलाती) रोशनी पड़ती नजर आई। हम लोग वहाँ से झट से उठ खड़े हुए, उनमें से किसी एक दोस्त ने कहा टोनही (डायन) है भागों, किसी ने कहा भूत, तो किसी ने प्रेतात्मा और हम सब कुछ सोचना समझना छोड़कर भागने लगे। भागते-भागते गांव की एक दुकान के पास आ गए, वहाँ कुछ बुजुर्गों के साथ मेरे दादा जी भी बैठे थे। हम सब को हांफते देखकर मेरे दादा जी ने पूछा क्या बात है बेटा? हम सब ने एक आवाज में बोला, ''तालाब पार के पीपल के नीचे भूत है......'' और पूरी बात बताई।

तब दादा जी ने हमें बताया कि कोई भूत प्रेत, टोनही (डायन) या प्रेतात्मा नहीं हैं और न ही होता है। वो हमें इस भूत की वास्तविकता दिखाने के लिए अपने साथ ले कर पीपल की ओर चल पड़े। हम सब यह मंजर देख कर हैरान रह गए,वहां तालाब के पास पीपल पेड़ के नीचे दीया (दीपक) जल रहा था। उस तालाब के पास मृत व्यक्ति के परिवार वालो ने पीपल पर मटकी बांधकर उसके नीचे शाम को दीया जलाइया हुआ था और धीरे-धीरे हवा चलने के कारण दीया टिमटिमा रहा था।

हम सब बच्चों ने दीये को भूत प्रेत, टोनही या प्रेतात्मा समझ लिया था और उससे बुरे तरीके से डर गए थे। वास्तव में वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था। इस घटना के बाद मेरा भूतों-प्रेतों से डर हमेशा के लिये खत्म हो गया।

अपने विचारों के बीज बोते रहें।

-हरचरण सिंह प्रहार-

यदि कोई आपकी बात सुनना नहीं चाहता या आपको समझ नहीं सकता तो आप उसे अपनी बात सुनने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। आपको बीज की शक्ति पर विश्वास करना चाहिए कि यदि आप इसे बोएंगे तो यह अवश्य ही अंकुरित होकर वृक्ष बनेगा।

आपके विचार भी बीज की तरह हैं। अगर आपके पास अच्छे विचार हैं, समाज की भलाई का सपना है, तो अपने विचारों को बोते रहिए, बिना इस बात की चिंता किए कि कोई आपकी बात सुनेगा या समझेगा। यदि उनमें कोई दम है, तो आपके विचार एक दिन अवश्य फलित होंगे।

आपको यह समझना होगा कि अधिकांश लोग अतीत में जीते हैं या अतीत में जीना चाहते हैं। इसलिए, उनमें भविष्य देखने की दूरदर्शिता नहीं होती।

इसलिए दूरदर्शी लोगों के विचार इतने प्रगतिशील होते हुए भी आम लोगों को देर से समझ में आते हैं। आपका दृष्टिकोण जितना बड़ा होगा, लोगों को आपकी बात समझने में उतना ही अधिक समय लगेगा। कई महान लोगों के विचारों को समझने में सदियाँ लग जाती हैं। इसलिए जल्दबाजी मत करो।

मिन्नी कहानी

रोशनी

छठी कक्षा में पहले पीरियड में ही काफी चीख-पुकार मच गई। एक लड़की बेहोश हो गई। सब बच्चे घबरा गए । वे कहने लगे, ''जरूर कोई भूत होगा, किसी भूत-प्रेत की कारवाई है।'' बगल के श्मशान घाट से यहाँ कोई बदरूह का झोंका आया है। अधिकांश शिक्षक सहमत थे। एक शिक्षक का तर्क था, ''बिना सोचे-समझे चीजों और घटनाओं पर विश्वास करना बुद्धिमत्ता नहीं, बल्कि मूर्खता है।'' उसने तुरंत लड़की की देखभाल की। चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई गई। लड़की के घर पहुंचे और माता-पिता से संपर्क किया। जब लड़की ठीक होकर स्कूल लौटी तो उस प्रतिभाशाली शिक्षक ने सच्चाई बताई। मुझे इसका कारण पता चल गया है। घर में समस्या थी, माता-पिता के सहयोग से उसका समाधान हो गया। स्कूल स्टाफ के कहने पर उन्होंने ''**... और देव पुरुष हार गए**'' पुस्तक सभी के समक्ष रख दी। उन्होंने कहा, ''घटनाओं के कारणों को समझने और समाधान खोजने के लिए ऐसी पुस्तकों की रोशनी हर घर में पहुंचाने की जरूरत है।''

कहानी की तलाश : कार्ल सगन और एलियंस की कल्पना

–धर्मेन्द्र आज़ाद

यह किस्सा महान वैज्ञानिक कार्ल सगन (Carl Sagan) से जुड़ा हुआ है। कार्ल सगन (1934–1996) एक अमेरिकी खगोलशास्त्री, खगोल-भौतिकीविद, लेखक और वैज्ञानिक विचारक थे। सगन का उद्देश्य विज्ञान और ब्रह्मांड के रहस्यों को आम लोगों तक पहुंचाना था, और वह विज्ञान के क्षेत्र में तर्कशीलता और तथ्यों के प्रति अपने समर्पण के लिए जाने जाते थे। उनके कार्यों ने विज्ञान को लोकप्रिय बनाया और उन्हें अनगिनत लोगों का आदर्श बनाया।

यह घटना तब की है, जब कार्ल सगन अपने एक दोस्त के साथ किसी रेस्टोरेंट में रात का भोजन कर रहे थे। माहौल शांत और सामान्य था, तभी बाहर अचानक शोर मचने लगा। सगन ने खिड़की से झांक कर देखा कि रेस्टोरेंट के बाहर भीड़ जमा हो रही थी। लोग आसमान की ओर इशारा कर रहे थे और एक अजीब सी चमकती रोशनी को देख उत्साह में शोर मचा रहे थे। लोग इस रहस्यमय रोशनी को ''एलियंस का स्पेसशिप'' समझ रहे थे, मानो किसी दूसरे ग्रह से धरती पर संपर्क साधने की कोशिश की जा रही हो।

कार्ल सगन अपनी वैज्ञानिक सोच और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे, उन्होंने बिना देर किए अपनी गाड़ी से दूरबीन निकाली और उस रोशनी की ओर देखने लगे। कुछ ही क्षणों में, उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई। उन्होंने भीड़ की ओर मुखातिब होकर कहा, ''घबराने की जरूरत नहीं है। यह कोई एलियन स्पेसशिप नहीं है, बल्कि एक नया मिलिट्री एयरक्राफ्ट है, जिसे परीक्षण के लिए उड़ाया गया है।''

सगन की यह बात सुनते ही लोगों का उत्साह अचानक फीका पड़ गया। लोगों के चेहरे की चमक जैसे बुझ गई, मानो उनकी दिलचस्प कहानी का अंत हो गया हो।

कार्ल ने यह देखकर एक व्यक्ति से सवाल किया, ''आप सब इतने निराश क्यों हो गए? आपको तो खुश होना चाहिये कि आप ग़लतफ़हमी में पड़ने से बच गये, आपको उस चमकती आकृति की सच्चाई जो पता लग गयी है।'' उस व्यक्ति ने कार्ल की ओर एक गहरी नज़र डाली और थोड़े नाखुश और गुस्साये स्वर में जवाब दिया, ''डिनर टेबल पर बैठकर अपने बच्चों को यह बताना कि हमने 'नए तरह का मिलिट्री जेट' देखा, भला इसमें क्या मज़ा है? हम सभी लोग ख़ुद को यह सोचकर विशेष समझने लगे थे कि हमने एलियंस के स्पेसशिप के दर्शन कर लिये हैं। अब हम अपने बच्चों को, अपने परिचितों को प्रभावित करने के लिये कौन सी कहानी सुनायेंगे?

यह सुनकर कार्ल ने महसूस किया कि लोगों के भीतर किस हद तक पहचान के संकट और रोमांच की प्यास होती है। सच कहें तो वे इसलिए मायूस थे क्योंकि कार्ल ने उनसे एक ''जादुई कहानी'' छीन ली थी। एक कहानी जो उनके रोजमर्रा की नीरसता में एक जादुई रंग भर सकती थी, एक ऐसा अनुभव जो उन्हें खास महसूस करा सकता था।

सच तो यह है कि किसी बड़े उद्देश्य के बिना जी रहे लोगों को किसी खास मकसद या रोमांचक कहानी की तलाश होती है। उन्हें अपनी भूमिका किसी बड़ी कहानी में चाहिए, उन्हें यह आश्वासन चाहिए कि वो इस ब्रह्मांड में महत्वपूर्ण है। वो चाहते हैं कि ब्रह्मांड का हर रहस्य उन्हें पुकारे, हर अनजान चीज उनके लिए एक कहानी बन जाए। चाहे वह ईश्वर में विश्वास हो, पुनर्जन्म की धारणा हो, स्वर्ग-नर्क के किस्से हों या फिर एलियंस की कहानियां–इन सभी में इंसान को अपनी जगह दिखती है, उसे खास होने का अहसास होता है।

कल्पना कीजिए, अगर उद्देश्यहीन जीवन जी रहे इंसान को यह पता चल जाए कि इस विराट ब्रह्मांड में उसकी कोई खास जगह नहीं है, कि उसके बनाए किस्सों का कोई मूल्य नहीं है, और मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं है–सिवाय अनंत अंधकार के–तो शायद उसका अस्तित्व ही डगमगा जाए। इसलिए, ऐसे लोगों को जिंदा रहने के लिए कहानियां चाहिए, वो किस्से चाहिए जो उसे रोजाना जीने का एक नया अर्थ दें।

असल में, ऐसी कहानियों के बिना इस तरह के इंसानों का स्वअस्तित्व ही ख़तरे में आ जाता है।

नई कलम

अंधविश्वास पर कैसे काबू पाएं



- अंग्रेज सिंह फाज़िलका

आज के विकासशील युग में जहाँ मनुष्य चाँद तक पहुँच गया है, वहीं कई लोग आज भी अंधविश्वास, अंधश्रद्धा और भ्रम के जाल में फंसे हुए हैं। अंधविश्वास कोई नई बात नहीं है। यह एक पुरानी समस्या है जो समाज को अंदर से खाए जा रही है। यह एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति वास्तविकता को नजरअंदाज कर कल्पना और भय के आधार पर निर्णय लेने लगता है। यह व्यक्ति की सोचने की क्षमता को प्रभावित करता है और अंततः उसके जीवन में बाधाएं उत्पन्न करता है।

अंधविश्वास क्या है?

अंधविश्वास और भ्रम दोनों ही मानव मन की ऐसी अवस्थाएं हैं जो वास्तविकता से बहुत दूर होतीं हैं। अंधविश्वास प्राय: किसी वस्तु या घटना के बारे में गलत धारणा होती है जो बिना किसी तर्क या प्रमाण के मन में बन जाती है। उदाहरण के लिए, यह एक अंधविश्वास है कि यदि कोई काली बिल्ली किसी का रास्ता काट दे तो यह अपशकुन है।

भ्रम का अर्थ है कि कोई व्यक्ति किसी चीज़ को ऐसी तरह देखता या समझता है, जैसी वो वास्तव में नहीं होती। ऐसा अक्सर दृश्य मतिभ्रम या मनोवैज्ञानिक विकर्षणों के कारण होता है। उदाहरण के लिए, रात में रस्सी को साँप समझ लेना एक भ्रम है।

ये शारीरिक अवस्थाएं मानव मन के अचेतन भय, अधूरी जानकारी, पृष्ठभूमि और कभी-कभी सामाजिक और धार्मिक प्रभावों से उत्पन्न होतीं हैं। जब कोई व्यक्ति विज्ञान, तर्क और सत्य से दूर जीवन जीता है तो वह अंधविश्वास के चक्र में फंस जाता है।

अंधविश्वास के कारण

अंधविश्वास उत्पन्न होने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे :

(1) निरक्षरता और अज्ञानता :

सही शिक्षा के अभाव के कारण लोगों में वैज्ञानिक सोच पैदा नहीं होती। वे जो कुछ सुनते हैं उसे सत्य मान लेते हैं।

(2) परँपराएँ और रीति-रिवाज :

कई अंधविश्वास सदियों से प्रचलित हैं। जैसे कि शनिवार को बाल न धोना या रात में पेड़ों के नीचे न जाना इत्यादि, परंपरा के नाम पर पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं।

(3) भय और असुरक्षा की भावना :

कभी-कभी अज्ञात चीजों का भय लोगों को ऐसी बातों पर विश्वास करने पर मजबूर कर देता है जो वास्तव में कभी सच्चा नहीं होता। जैसे कि भूत-प्रेत का डर।

(4) धार्मिक भ्रम और गलत व्याख्याएं :

कभी-कभी लोग धार्मिक ग्रंथों की गलत व्याख्या के कारण आधे-अधूरे विश्वासों में फंस जाते हैं।

(5) समाजिक दबाव :

कभी-कभी लोग खुद न चाहते हुए भी समाज के दबाव के कारण अंधविश्वासों पर विश्वास करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि सभी लोग किसी विशेष विश्वास में विश्वास करते हैं, तो आस-पास के व्यक्ति भी उनको देखा-देखी वही विश्वास करने लगते हैं।

समाज में अंधविश्वास की भूमिका

व्यक्ति समाज का मूलभूत हिस्सा होतें है। यहीं पर मनुष्य नये अनुभव प्राप्त करते हैं, सीखते हैं और अपनी सोच को आकार देते हैं। लेकिन जब समाज स्वयं अंधविश्वासों और भ्रांतियों में उलझा होता है, तो वह उनको नए विचारों को धारण करने से रोकता है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में, विशेषकर भारत जैसे देशों में, समाज ने ऐसे रीति-रिवाज और अनुष्ठान बना दिए हैं जो लोगों के मन में डर पैदा करते हैं और उन्हें अंधविश्वास में फंसा देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई स्त्री करवा चौथ पर व्रत नहीं रखती तो उसके पति को हानि हो सकती है - यह एक सामाजिक कुरीति है। लड़कियों को 'मासिक धर्म' के समय दैनिक गतिविधियों से रोकना एक अन्य धार्मिक अवधारणा है। सामाजिक स्तर पर ये भ्रम इतने बड़े हो जाते हैं कि लोग अपनी स्वतंत्रता, अधिकार और प्रगति को भी पीछे छोड़ देते हैं। कुछ लोग तो अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय भी अंधविश्वास पर आधारित कर लेते हैं - जैसे शादी की तिथि, कारोबार का प्रारंभ, परीक्षा देने का समय आदि। सामाजिक संरचना ऐसी हो गई है कि यदि कोई व्यक्ति

ऐसे अंधविश्वासों पर विश्वास नहीं करता तो उसे तिरस्कार या निंदा का सामना करना पड़ता है।

अंधविश्वासों के नुकसान

अंधविश्वास न केवल व्यक्ति की सोच को प्रभावित करते हैं, बल्कि उनके जीवन के हर पहलू को नुकसान पहुँचाते हैं। ये अदृश्य घाव हैं जो व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की प्रगति में बाधा बनते हैं। आइये देखें कि अंधविश्वास के कुछ मुख्य नुकसान क्या हैं:-

1-व्यक्तिगत विकास में रुकावट :

जब कोई व्यक्ति किसी अलौकिक या बेतुकी बात पर विश्वास करने लगता है, तो वह अपनी तर्कशील बुद्धि का उपयोग करना बंद कर देता है। नई सोच, ज्ञान और अनुभव अपनाने के बजाय वह पुरानी गलत धारणाओं के साथ जीता है तो उसके व्यक्तिगत विकास में रुकावट पैदा होती है।

(2) आर्थिक नुकसान :

कई बार लोग अंधविश्वासों के जाल में फंसकर पंडितों, ज्योतिषियों और तंत्र-मंत्र करने वालों पर अपनी परेशानियों के समाधान के लिए हजारों रुपए खर्च कर देते हैं। वे लाभ की आशा करते हैं लेकिन वास्तव में धोखा खाते हैं।

(3) सामाजिक व्यवस्था में गड़बड़ी :

जब पूरा समाज अंधविश्वासों में फंस जाता है, तो वह नए विचारों, विकास और विज्ञान के प्रति शत्रुतापूर्ण सोच धारण कर लेता है। परिणामस्वरूप, समाज विकास कि बजाय पीछे रह जाता है।

(4) महिलाओं के खिलाफ हिंसा :

अंधविश्वासों का महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई पाखंडी बाबा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार को उचित ठहराते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी घर में अचानक कुछ गलत हो जाए, तो ऐसा माना जाता है कि यह किसी डायन के कारण हुआ है और हमारे देश में अनगिनत औरतों को डायन बता कर मार दिया गया है। वास्तव में डायन जैसी कोई चीज नहीं होती।

(5) आत्मविश्वास की कमी :

जब तक कोई व्यक्ति अपने आप पर भरोसा नहीं करता, तब तक वह कोई महान उपलब्धि हासिल नहीं कर सकता। अंधविश्वास व्यक्ति के मन में संदेह, भय और लाचारी पैदा करते हैं, जिससे आत्मविश्वास कमजोर होता है।

(6) स्वास्थ्य संबंधी खतरे :

कई बार लोग अपनी बीमारी का उचित इलाज कराने के बजाय तंत्र-मंत्र या पीर-फकीरों के पास जाने लगते हैं। परिणामस्वरूप, उनका स्वास्थ्य और भी ख़राब हो जाता है।

अंधविश्वास से उत्पन्न समस्याएँ:

जैसा कि पिछले अनुभाग में बताया गया है, अंधविश्वास किस प्रकार मानव जीवन को नुकसान पहुँचाते हैं। साथ ही ये कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देते हैं। ये समस्याएँ केवल व्यक्तिगत स्तर तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि समग्र रूप से समाज, संस्कृति और विकास को भी प्रभावित करतीं हैं, आओ देखें कैसे:-

(1) भय और चिंता:

अंधविश्वास से ग्रस्त लोग प्रायः भय, अपराधबोध, चिंता और भ्रम की स्थिति में रहते हैं। वे अपने आस-पास की वास्तविकता को स्वीकार नहीं करते और एक काल्पनिक दुनिया में जीते हैं। इससे वे चिंता, अवसाद, भय जैसी मनोवैज्ञानिक बीमारियों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

(2) रिश्तों में दरार:

जब कोई व्यक्ति अंधविश्वास में फंस जाता है, तो वह अपने परिवार या दोस्तों की बातों पर विश्वास करने से इंकार कर देता है। इससे रिश्तों में विश्वास की कमी और तनाव पैदा होता है। कभी-कभी तो यह रिश्तों के टूटने का कारण भी बन जाता है।

(3) युवा पीढ़ी में संकीर्णता :

यदि युवाओं में अंधविश्वास और पारंपरिक गलत धारणाएँ भर दी जाएँ तो वे तर्कशील विचारों को स्वीकार नहीं करेंगे। वे विज्ञान, तकनीक और नई सोच की ओर बढ़ने से डरते हैं और पिछड़ी सोच में ही अटके रहते हैं।

(4) सामाजिक अन्याय और हिंसा :

कभी-कभी अंधविश्वास के आधार पर किसी निर्दोष व्यक्ति को गलती से डायन, जादूगर या टोना-टोटका करने वाला समझ लिया जाता है। इस वजह से उन्हें हिंसक हमलों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी घटनाएं विशेषकर गांवों में आम होती हैं।

(5) झूठे धार्मिक नेताओं और चालबाजों की चालें-

जहां लोग अंधविश्वासी होते हैं, वहां झूठे चिकित्सक, ज्योतिषी और धोखेबाज लोग उनकी भावनाओं से खेलते हैं और उनसे धन बटोरते हैं।

Type text here

(6) अंधविश्वास के ऐतिहासिक और धार्मिक पहलू

करुणा और भ्रम मानव इतिहास के ऐसे हिस्से हैं जो सदियों से मानव यात्रा, रीति-रिवाजों और व्यवहार का हिस्सा रहे हैं। जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास नहीं हुआ था, तो लोग हर अज्ञात घटना का श्रेय अलौकिक शक्तियों को देते थे। यह सांस्कृतिक अज्ञानता मिथकों के जन्म का मूल कारण बन गयी।

अंधविश्वास पर काबू पाने के उपाय

हमने यह जानते है कि अंधविश्वास व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण से किस प्रकार हानिकारक हैं। अब महत्वपूर्ण बात यह जानना है कि हम इन पर काबू पाने के लिए क्या कर सकते हैं। नीचे कुछ तार्किक एवं वैज्ञानिक तरीके दिए गए हैं :

(1) शिक्षा का प्रसार :

शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है जो मनुष्य के भीतर से अज्ञानता और भय को खत्म कर सकता है। यहाँ भी आवश्यक हो, वैज्ञानिक शिक्षा आम जनता को उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि वे तार्किक रूप से सोच सकें।

(2) वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना :

विज्ञान हमें हर चीज़ का सार समझाता है। यदि हम हर घटना को तर्क और विवेक की दृष्टि से देखने की आदत डाल लें तो धीरे-धीरे अंधविश्वास खत्म होने लगते हैं।

(3) अनुभव और प्रमाण पर भरोसा :

किसी भी बात को आधे-अधूरे विश्वास के साथ स्वीकार न करें। जब तक कोई बात अनुभव या पूर्णतः सिद्ध न हो जाए, उसे सत्य नहीं मानना चाहिए।

(4) बच्चों का शैक्षिक मार्गदर्शन :

नई पीढ़ी को छोटी उम्र से ही तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से सोचने की आदत डालनी चाहिए। वैज्ञानिक कहानियों के माध्यम से उन्हें समझाएं कि आम लोग किस प्रकार झूठे भ्रमों में फंसे हुए थे और हम उनसे कैसे बच सकते हैं।

(5) सामाजिक चर्चा और जागरूकता अभियान

अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता अभियान ग्राम पंचायतों, स्कूलों और अन्य संस्थाओं के माध्यम से चलाए जाने चाहिए। रंगमंच, नाटक, लेख, टेलीविजन और सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों की सोच बदली जा सकती है।

(6) झूठे संतों और धोखेबाजों को बेनकाब करना:

अगर कोई लोगों को धोखा देने के इरादे से अंधविश्वास फैला रहा है, तो उसे बेनकाब करना समाज की जिम्मेदारी है। यह कानूनी कार्रवाई के माध्यम से किया जा सकता है।

(8) विवेकशील एवं ज्ञानवान लोगों को आगे लाना:

समाज में वैज्ञानिक और तर्कसंगत सोच रखने वाले लोगों को जनता तक पहुंच दी जानी चाहिए ताकि वे दूसरों को भी प्रभावित कर सकें।

जैसा कि हमने पूरे लेख में देखा है, अंधविश्वास एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और धार्मिक बाधा है जो मानव प्रगति में एक बड़ी बाधा बन जाती है। यह न केवल व्यक्ति की अपनी सोच को फंसाता है, बल्कि पूरे समाज को अज्ञानता की जंजीरों में जकड़ देता है।

जब तक कोई व्यक्ति अपना जीवन तर्क, ज्ञान और शिक्षा के प्रकाश में नहीं जीता, तब तक वह अर्ध-विश्वासों से मुक्त नहीं हो सकता। आइये हम अपने दिमाग़, परिवार और समाज को भ्रम से मुक्त करें। हम शिक्षा, तर्क, विज्ञान की शिक्षाओं के माध्यम से आगे बढ़ें और समृद्ध बने।

धर्म

- कुलदीप -



आंखों पर बंदी हुई पट्टी
तर्क के दरवाजे पर लगा हुआ ताला
वैज्ञानिक विचारों के प्रवाह को रोकने वाला बांध
प्रकाश और अंधकार के भविष्य में बीच की दीवार
विज्ञान की रोशनी से डरता एक उल्लू
गहरे गड्ढों में जीता मिथक
श्रम को लूटने का जनून
समाज की जड़ों में समाया अभिशाप
'चोपड़ी' खाने वालों के लिए वरदान
मानवता को तोड़ता हथौड़ा
कुएं का मेंढक धर्म।

नई कलम

रंग बदलती झील



- संदीप कुमार किरोड़ीवाल

पहाड़ों के दृश्य हमेशा व्यक्ति को रोमांचित करते हैं। इस बार मेरा मन भी इन पहाड़ो की यात्रा करने को कर रहा था, इसके दो कारण थे पहला कुदरत की गोद का आनंद लेना और दूसरा मैने सुना था कि हिमाचल की लाहौल घाटी में स्थित एक चंद्रताल झील है जो रंग बदलती है उसको देखना और उसके रंग बदलने के रहस्य को जानना। मैंने अपनी यात्रा हिमाचल के मनाली शहर से शुरू की । मनाली से अटल सुरंग तक जाने वाली सड़क के किनारे बहती ब्यास नदी की कल-कल ध्वनि और ऊँचे देवदार के पेड़ एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इस सड़क के निर्माण और रखरखाव की पूरी जिम्मेदारी बीआरओ(बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन) की है। यही कारण है कि इस सड़क का स्वरूप और दिखावट देश की बाकी सड़कों की तुलना में काफी साफ-सुथरी है। अटल सुरंग मनाली से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित है। इस सुरंग की लम्बाई 9.2 कि.मी. है, जो समुद्र तल से 10,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह सुरंग कुल्लू घाटी को लाहौल और स्पीति घाटी से जोड़ती है और इससे 50 किलोमीटर की दूरी की 4-5 घंटे की यात्रा केवल 1 घंटे की रह गई है। सुरंग का दक्षिणी छोर कुल्लू घाटी की ओर और उत्तरी छोर लाहौल और स्पीति घाटी की ओर खुलता है। टी प्वाइंट से दो सड़कें अपने-अपने गंतव्य तक जाती हैं, जो उत्तरी छोर पर चंद्रा नदी के पुल को पार करती हैं। टी प्वाइंट से बायीं ओर जाने वाली सड़क केलोंग शहर, जिस्पा घाटी और बारालाचा ला से गुजरते हुए लेह-लद्दाख की ओर जाती है। चंद्रताल झील की वास्तविक यात्रा टी-प्यूट से दायीं ओर जाने वाली सड़क से शुरू होती है, जो लगभग 70-75 किमी दूर स्थित है। चंद्रा नदी सड़क के दाहिनी ओर विपरीत दिशा में बहती है। इस मार्ग पर लगभग 10 किलोमीटर आगे कोकसर नामक स्थान पर एक चेक पवाँइट है, जो लाहौल और स्पीति घाटी से शुरू होकर रोहतांग घाटी की यात्रा के लिए परमिट की जांच करता है। इस चेक पवाँइंट से आगे बढ़ने पर सड़क की स्थिति धीरे-धीरे खराब होने लगती है, जिसका अंदाजा मोटरसाइकिल या कार को लगने वाले झटकों से लगाया जा सकता है। धीरे-धीरे आगे बढ़ते रास्ते पर हरे-भरे पहाड़, नदियाँ और झरने दिखाई देते हैं।



कोकसर से 5-7 किलोमीटर बाद ही पक्की सड़क समाप्त हो जाती है। ।इस पते के बाद पूरे मार्ग पर मोबाइल नेटवर्क भी गायब हो जाता है। लगभग 20 किलोमीटर के बाद ये हरे-भरे पहाड़ वनस्पति रहित हो जाते हैं और बहते पानी के झरने भी कम होकर गायब हो जाते हैं। वर्ष के बाकी समय भारी बर्फबारी के कारण यह मार्ग केवल मई-जून से सितम्बर-अक्टूबर तक ही यातायात के लिए खुला रहता है। इन महीनों के दौरान यात्रा करते समय, बर्फ केवल आसपास की पहाड़ियों की चोटियों पर ही देखी जा सकती है। कभी-कभी भारी बर्फबारी के कारण इस सड़क के खुले रहने का समय और भी कम हो जाता है। यह यात्रा लगभग दो घंटे की है, जिसमें मोड़, घुमावदार रास्ते, अस्थायी पुल और पानी से भरी सड़कें शामिल हैं, जो छतड़ू नामक स्थान तक जाती है। यह एक साधारण और अस्थायी ठिकाना है जहां खाने-पीने की चीजें और रात भर रुकने के लिए टेंटनुमा घर भी उपलब्ध हैं। ऊंचाई बढ़ाने के कारण छतड़ू के बाद किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं देखी जा सकती। ऐसे ही रास्तों पर चलते हुए

और आगे बढ़ते हुए प्रकृति की कलात्मकता का आनंद लिया जा सकता है। जिसमें एक नदी बिना किसी निश्चित किनारे के साँप की तरह आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है, बर्फ से ढकी पर्वत चोटियाँ दिखाई देती हैं, तथा नदी के कटाव और उसके मार्ग बदलने से बने मैदान दिखाई देते हैं। यात्रा का अगला चरण बाटल से चार किलोमीटर दूर चंद्रताल झील के प्रवेश बिंदु से शुरू होता है। यह यात्रा लगभग पंद्रह किलोमीटर लंबी है और इसके बाद दाईं ओर विपरीत दिशा में बहने वाली चंद्रा नदी बाईं ओर मुड़ जाती है। सड़क की हालत जस की तस बनी हुई है, गड्ढे और धूल भरे पहाड़, पहाड़ों से बहता पानी सड़क को पार कर रहा है, कभी-कभी बड़े-बड़े गड्ढों में पानी भर जाता है जिससे दोपहिया वाहनों का सड़क पार करना बहुत मुश्किल हो जाता है। चन्द्रताल झील तक जाते समय घाटी की चौड़ाई बढ़ती जाती है, जिसके कारण यह स्थान एक बड़े मैदान का रूप ले लेता है, जो बहुत ही मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। यात्रा का अंतिम चरण तब शुरू होता है जब सड़क समाप्त हो जाती है। चंद्रताल झील तक पहुंचने के लिए अंतिम 2-3 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करनी पड़ती है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए अस्थायी टेंट की व्यवस्था है, जहाँ रात्रि विश्राम व खाने-पीने की पूरी व्यवस्था है, जिसे मनाली शहर से भी बुक/आरक्षित किया जा सकता है। पैदल यात्रा एक बड़े मैदान से शुरू होती है जिसके दाहिनी ओर चंद्रा नदी बहती है। जैसे ही कोई झील के पास पहुँचता है, उसे महसूस होता है कि प्रकृति की शिल्पकला की तुलना में मनुष्य बहुत छोटी चीज है। ठंडी हवा वातावरण में उत्साह भरती प्रतीत होती है। झील के किनारे पहुँचने पर, जहाँ किनारे पर पानी बिल्कुल साफ है और जैसे ही आँख किनारे से झील के बीच की ओर जाती है, इसके पानी का रंग हल्के नीले से गहरे नीले और जब दुसरी तरफ से देखतें हैं तो हरे रंग में बदल जाता है। इस झील के पानी का रंग आसपास के पहाड़ों की चोटियों से अलग दिखाई देता है। इस झील का बदलता हुआ रंग प्रत्येक व्यक्ति को आकर्षित करता है और मनमोहक लगता है।

इस झील के बारे में कई मिथक और लोककथाएं प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं :

1. महाभारत से जुड़ा मिथक (युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण) : स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, चंद्रताल झील वह स्थान है जहाँ महाभारत के युधिष्ठिर को इंद्र देवता ने अपने रथ में बैठाकर स्वर्ग ले गया था। कहा जाता है कि जब पांडव स्वर्ग की ओर यात्रा कर रहे थे, तब यही वह स्थान था जहां युधिष्ठिर ने धर्म की परीक्षा पास की और इंद्र उन्हें लेने आए।

2. चंद्रमा और अप्सरा की कथा : एक लोककथा के अनुसार, चंद्रमा ने एक बार एक अप्सरा से प्रेम किया और वे दोनों चंद्रताल झील के किनारे मिला करते थे। उनकी प्रेमकथा इस झील के पानी की शांति और सौंदर्य में आज भी प्रतिबिंबित होती है। इसीलिए इसे ''चंद्रमा की झील'' भी कहा जाता है। वास्तव में इस झील का आकार अर्धचांद की शक्ल का होने के कारण इसको चंद्रताल कहा जाता है।

3. परियों की झील : स्थानीय लोगों का विश्वास है कि रात के समय परियाँ इस झील के पास आकर नृत्य करती हैं। इसलिए कई बार लोग रात में वहाँ रुकने से डरते हैं

4. झील का अभिशाप और रहस्यमयी गायबियाँ : कुछ यात्रियों और ट्रेकर्स ने यह कहा है कि उन्होंने झील के पास अजीब घटनाएँ देखी हैं - जैसे रहस्यमयी रोशनी, अचानक मौसम बदल जाना, या लोगों का गायब हो जाना। इन घटनाओं ने झील को एक रहस्यमय स्थान बना दिया है।

आज के वैज्ञानिक युग में चंद्रताल झील के रंग बदलने की इन मिथकों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। आओ इस झील के रंग बदलने के वैज्ञानिठ कारणों को जाने।

रंग बदलने का वैज्ञानिक कारण

चंद्रताल झील के रंग बदलने के कई वैज्ञानिक कारण हैं, जिनमें प्रकाश की तरंगदैर्घ्य (wave length)और अवशोषण, देखने का कोण और झील की अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग गहराई, प्रकाश का परावर्तन और पानी में पाए जाने वाले कार्बनिक और अकार्बनिक कणों की उपस्थिति शामिल हैं।

हमें कुदरत में घटने वाली प्रत्येक घटना का विश्लेषण वैज्ञानिक आधार पर करके वास्तविक सच्चाई जानी चाहिए न कि बिना सोचे समझे मिथकों पर यकीन करना चाहिए।

***

विज्ञान का उदय अवश्य होगा

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति एक ऐसा संगठन है जो भारत में खासकर महाराष्ट्र में, अंधविश्वास और जादू-टोने के खिलाफ कार्य करता है। इसकी स्थापना 1989 में नरेन्द्र दाभोलकर ने की थी। इस समिति का मुख्य उद्देश्य लोगों को अंधविश्वासों से मुक्त करना और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना है। यह संगठन 5,000 कार्यकर्ताओं के साथ 200 शाखाओं के माध्यम से वैज्ञानिक जागरूकता फैलाने का काम करता है।

– प्रो. आर्डे



आप कब से 'अंध श्रद्धा निर्मूलन वार्ता' समाचार पत्र के संपादक हैं ?

मैं जनवरी 2003 से संपादक के रूप में कार्यरत हूँ, इससे पहले 1995 से उप संपादक के रूप में काम कर चुका हूँ।

आपका 'वार्ता पत्र' को मुद्रित करने का क्या उद्देश्य है?

हमारी पत्रिका अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति की मुख्य प्रवक्ता है। हमारे संगठन की गतिविधियाँ जारी रहतीं हैं। संगठन का उद्देश्य समाज से अंधविश्वास को मिटाना और वैज्ञानिक सोच का प्रसार करना है। हमारा संगठन उन चालाक लोगों को भी बेनकाब करने का लक्ष्य रखता है जो धर्म और देवताओं के नाम पर लोगों की अज्ञानता का फायदा उठा कर उन्हें लूटते हैं। हम लोगों को सभी प्रकार के भ्रमों से मुक्त करने और उन्हें ज्ञान और विज्ञान से जोड़ने के लिए समाचार वार्ता पत्रिका प्रकाशित करते हैं।

आप प्रकाशन में किन विषयों को कवर करते हैं?

शुरुआती दौर में हम सिर्फ तथाकथित बाबाओं द्वारा किए गए काले कारनामों की रिपोर्टिंग पर ही ध्यान केंद्रित करते थे। मैं अंधविश्वास से संबंधित विषयों पर लेख भी प्रकाशित करता था। लेकिन अब हम अपना दायरा बढ़ाकर ज्योतिष धोखाधड़ी, चमत्कारों की वास्तविकता, कथित भूत-प्रेत और देवी-देवताओं के बारे में भी लेख प्रकाशित कर रहे हैं। हम धर्म पर अपने दृष्टिकोण के बारे में भी लेख उपलब्ध कराते हैं। पिछले दो वर्षों से हम पर्यावरण और प्रदूषण, जल संरक्षण, शरीर और मन का ज्ञान, तथाकथित बाबाओं के झूठे प्रचार से बचकर भ्रम मुक्त समाज बनाने जैसे विषयों पर भी चर्चा कर रहे हैं। हम पत्रिका में वास्तु शास्त्र और फेंगशुई के दर्शन के झूठ पर भी लगातार लेख प्रकाशित कर रहे हैं।

वार्ता पत्रिका की सामग्री एकत्रित करने के लिए आप क्या प्रयास करते हैं ?

हमारे संवाददाता पूरे राज्य में हमारे संगठन द्वारा की गई गतिविधियों की रिपोर्ट पत्रिका के कार्यालय तक पहुंचाते हैं। हमें बुद्धिजीवियों से अन्य विषयों पर भी लेख मिलते हैं। तीन उप-संपादक इस समस्त सामग्री को एकत्रित करने, चयन करने तथा उसकी गुणवत्ता जांचने का कार्य करते हैं। हम राज्य और देश भर में प्रकाशित लोकप्रिय पत्रिकाओं के विशेष लेखों का अनुवाद और प्रकाशन भी करते हैं। हमारी संस्था ने अंध विश्वास से संबंधित विभिन्न विषयों पर अच्छी पुस्तकों का एक पुस्तकालय भी स्थापित किया है। इस पुस्तकालय से भी कुछ सामग्री उपलब्ध होती है।

पाठकों से आपको किस प्रकार का सहयोग मिलता है ?

पाठक अक्सर पत्रिका में प्रकाशित विषयों पर अपनी राय भेजते हैं। हम इसे पत्रिका में छापते हैं। हम आलोचनात्मक टिप्पणियों पर भी ध्यान देते हैं।

पत्रिका को हर स्तर तक पहुंचाने के लिए आप क्या प्रयास करते हैं ?

यह पत्रिका हमारे संगठन की सभी इकाइयों द्वारा वितरित की जाती है। गांवों में पाठक सम्मेलन भी आयोजित किए जाते हैं जहां पत्रिका में प्रकाशित विषयों पर विचार-विमर्श किया जाता है। हम राज्य भर में विवाह और जन्मदिन जैसे अवसरों पर पत्रिका की एक प्रति उपहार के रूप में देने की योजना भी क्रियान्वित कर रहे हैं। इससे न केवल पत्रिका की बिक्री बढ़ी बल्कि इसकी लोकप्रियता भी बढ़ी है।

आपको किसी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

कुछ पाठक हमें सरल स्तर के लेख भेजते हैं। मानकों को देखते हुए, यदि हम इस लेख को प्रकाशित नहीं करते हैं, तो पाठकों का नाराज होना स्वाभाविक है। दूसरी समस्या यह है कि अधिकांश पाठक पत्रिका की सदस्यता समाप्त होने के बाद पुनः सदस्यता लेना भूल जाते हैं। इससे पत्रिका के मुद्रण में समस्या आती है और कभी-कभी संस्था को आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। लेकिन इन सब कठिनाइयों के बावजूद यह पत्रिका दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रही है।

क्या आपको कभी कानूनी समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं ?

4 हाँ, वे अक्सर आती रहतीं हैं। लेकिन हमारा संगठन निस्वार्थ भाव से समाज के कल्याण में लगा हुआ है। इसीलिए हमें ऐसे वकील मित्र भी मिलते हैं जो बिना किसी फीस के अदालती मामलों में हमारी पूरी मदद करते हैं।

क्या आप कोई विशेष घटना बताना चाहेंगे?

> बौद्धिक विकास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विरोध करने वाले कुछ संगठन हमारे राज्य में भी सक्रिय हैं। जो लोग धर्म और जाति के नाम पर लोगों को लड़ाते हैं और हिंदू राष्ट्र की स्थापना का दावा करते हैं, वे हमारा विरोध भी करते हैं। एक बार जब हमने एक पत्रिका में ऐसे संगठनों के कार्यों और उद्देश्यों पर टिप्पणी करते हुए एक लेख प्रकाशित किया, तो उन्होंने हमारे खिलाफ अदालत में मामला दायर कर दिया। हमारे एक वकील मित्र ने यह केस लड़ा और जीत गये। हमें इस मुद्दे पर बहुत जोखिम उठाना होगा। लेकिन हम अदालती मुकदमों से नहीं डरते, क्योंकि जनहित में किए गए कार्यों के लिए हम कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार हैं। महाराष्ट्र में नरेंद्र महाराज नाम का एक फर्जी बाबा है, जिसके काले कारनामों की कहानियां हम अक्सर प्रकाशित करते रहते हैं। उसने हमें धमकियाँ मिलती रहती है मगर उसकी चिंता नहीं करते और लोगों को जाग्रृत करने का कार्य निरंतर कर रहे हैं।

> ''जो धार्मिक या अध्यात्मिक लोग इस संसार को माया बताते हैं, विज्ञान और प्रोद्योगिकी की पैदा की हुई हर सहूलियत का फ़ायदा उठाते नज़र आते हैं।''
>
> **-गौहर रज़ा**

युद्ध का चाव

कृष्ण कायत

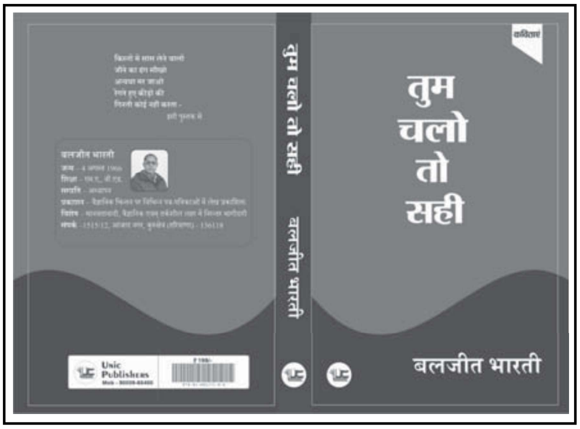
चाव होगा तुम्हें युद्धों का
मैं तो हर रोज ही
युद्ध करता हूँ .....
भूख, गरीबी, लाचारी से।
बढ़ती कीमतें, घटती आमदनी
कभी हुक्मरानों की मक्कारी से।।
मैं ही करता हूँ
तुम्हारे कारखानों में मजदूरी ,
खेतों में अन्न, फल बागानों में
मैं ही उपजाता हूँ।
रोजी की खातिर
सुरक्षा को तुम्हारी
सीमा पर भी
मैं ही मर जाता हूँ।।
ठगते हो मुझे ही तुम
धर्म का खौफ दिखाकर।
बहका जाते हो कभी
मुझे मेरी कौम बताकर।।
फंस कर चालों में तुम्हारी
दंगे भी मैं ही करता हूँ
चाव होगा तुम्हें..........
मक्कारी का खेल खेलकर
मत बहकाओ
मुझ जैसे नादानों को ।।
युद्ध का इतना चाव है तो
सीमा पर भेजो
तुम अपनी संतानों को ।।
झांसों में आकर
हर बार तुम्हारे
'कायत' मैं ही
राजा चुनता हूँ
चाव होगा तुम्हें युद्धों का
मैं तो हर रोज ही
युद्ध करता हूँ........।।

पुस्तक समीक्षा

तुम चलो तो सही (काव्य संग्रह)

-जयपाल

'तुम चलो तो सही' बलजीत भारती का दूसरा काव्य संग्रह है । इस काव्य संग्रह को यूनिक पब्लिशर्स-कुरुक्षेत्र ने बहुत ही आकर्षक डिजाइन के साथ प्रकाशित किया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉक्टर कर्मजीत सिंह इस काव्य संग्रह की भूमिका में लिखते हैं-'बलजीत यथार्थ की बड़े सख्त शब्दों में चीर फाड़ करता है । ...वह व्यंग्य के पैने हथियार को बड़ी मजबूती से प्रयोग में लाता है'। बलजीत भारती एक शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, सर्व कर्मचारी संघ से जुड़ा हुआ,तर्कशील कार्यकर्ता चिंतनशील लेखक/कवि और वैज्ञानिक आन्दोलन से जुड़े हुए एक जुझारू व्यक्ति हैं।



कवि का यह उदघोष कवि की प्रगतिशील-जनवादी तथा प्रतिबद्ध विचारधारा की ओर संकेत करता है। संग्रह की अधिकतर कविताएं प्रतिरोधात्मक/परिवर्तनकामी कविताएं हैं। जो समाज की वर्तमान स्थितियों को स्वीकार नहीं करती । यह एक ऐसा समय है जिसमें गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार, शिक्षा, स्वास्थ्य आ-जयपालद मुद्दे बड़े नहीं है बल्कि बड़े मुद्दे हैं-- राष्ट्रवाद,महान संस्कृति और धार्मिक पाखण्डवाद है।

चिथड़ों वाले	मलबे के मालिक
अस्थि पिंजर	भारत का भविष्य
नंगे पैर	राष्ट्र की आन
धूल के फूल	देश की शान

कवि एक जिम्मेदार नागरिक भी है, इसलिए वह अपने कर्तव्यों को भली-भांति जानता है। अपने आत्मकथ्य में वे कहते हैं-जैसा कि मैंने अपनी कविता में कहा है- 'मैं कवि नहीं हूँ,यह बात काफी हद तक सही है। मैं तो केवल अपनी बात कहना चाहता था। अपने विचार आम लोगों तक पहुँचाना चाहता था। मैंने अपने विचार इन कविताओं के माध्यम से प्रकट किये है। कवि का उद्देश्य है अपने विचारों को कविता के माध्यम से समाज के उन हिस्सों तक पहुंचना जो दलन का शिकार हैं और जहां तक संभव हो समाज में बदलाव के लिए संघर्ष करना। यथास्थिति को तोड़ने के लिए प्रयास करते रहना। कवि की ये कविताएं पाठक को अपने रंग में रंग लेने में समर्थ हैं और एक सामाजिक विमर्श के लिए प्रेरित करती हैं ताकि हर किसी के सपने को साकार किया जा सके।

कवि प्रेम, रिश्ते-नाते, मानवीय मूल्य, संवेदनशीलता आदि के बिखराव लेकिन भ्रष्टाचार , छल-कपट -प्रपंच, साम्प्रदायिकता, बाजारवाद, अंधराष्ट्रवाद आदि के प्रचार-प्रसार से बहुत दुखी हैं।

आप गलत जगह आए
हो वो पुराने जमाने की बात है
प्यार और वफादारी
ये चीजें यहाँ नहीं मिलती
जानवरों के बाड़े में जाओ

इन कविताओं पर सटीक टिप्पणी करते हुए आलोचक भूपेन्द्र भटनागर कहते हैं--आम इंसान के आसपास की विषमता, असामान्य स्थितियों, विद्रूपताओं, और अवास्तविक जीवन जी रहे तथाकथित स्वयंभू महिमामंडित संतजनों की वास्तविकता को निकट से देखने और दिखाने का सफल प्रयास किया है।'

'तुम चल सको तो चलो'-- का यही संदेश है कि चलो, रुको मत..जीत तुम्हारा इंतजार कर रही हैं।

संग्रह की कविताएं बहुत ही सरल/सहज और स्वत:स्फूर्त है, कोई काट-छांट या तराश नहीं है। गहरे व्यंग्य के साथ व्यवस्था पर तीखा प्रहार है। यह काव्य संग्रह कवि बलजीत भारती में व्यापक संभावनाओं को भी उभारता है। आशा है कवि के इस साहित्यिक प्रयास का स्वागत किया जाएगा।

पुस्तक–तुम चल सको तो चलो (कविता-संग्रह)

लेखक–बलजीत भारती

कीमत-199/- (पृष्ठ 112- पेपर-बैक)

प्रकाशक यूनिक *पब्लिशर्स-कुरुक्षेत्र

मोबाइल : 90009-68400

डायबिटीज और उसके खोजी वैज्ञानिक

-डा. नवनीत

डायबिटीज और मानव जाति का रिश्ता बहुत पुराना है। 20वीं सदी की शुरुआत तक यह एक गंभीर और जानलेवा बीमारी मानी जाती थी, जिसका कोई प्रभावी इलाज नहीं था। खासतौर पर टाइप 1 डायबिटीज, जिसका अक्सर किशोरावस्था में पता चलता है। इस स्थिति में शरीर में इंसुलिन बनता ही नहीं है, जिसकी वजह से रक्त में शुगर हमेशा उच्च स्तर पर बनी रहती है। रक्त में उच्च शर्करा का होना मतलब शरीर के अंदर की तमाम चयापचयी (मेटाबोलिक) प्रणालियों का अस्त-व्यस्त हो जाना और अंततः मृत्यु।

सबसे पहले यह समझते हैं कि डायबिटीज है क्या? डायबिटीज मेलिटस ''चयापचयी विकारों'' (Metabolic Disorders) का एक समूह है, जिसमें रोगी के रक्त में शर्करा की मात्रा लंबे समय तक बढ़ी रहती है। यह शरीर में इंसुलिन नामक हार्मोन की कमी के कारण होता है। इंसुलिन हमारे शरीर में मौजूद पैंक्रियाज नामक एक ग्रंथि द्वारा उत्पन्न किया जाता है। यह ग्रंथि हमारे पेट में, आमाशय के ठीक नीचे स्थित होती है और इसमें उपस्थित बीटा कोशिकाएं इंसुलिन का निर्माण करती हैं।

इंसुलिन क्या करता है? इंसुलिन रक्त में ग्लूकोज यानी शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करता है। ग्लूकोज हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और यह हमें भोजन से, विशेष रूप से कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन से प्राप्त होता है। ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, गैलैक्टोज आदि कार्बोहाइड्रेट की सबसे छोटी इकाइयाँ होती हैं। जब हम भोजन करते हैं, तो पाचन क्रिया के दौरान बड़े कार्बोहाइड्रेट्स जैसे स्टार्च टूटकर ग्लूकोज में बदल जाते हैं, और यह ग्लूकोज रक्त में पहुँच जाता है। यही ग्लूकोज हमारे शरीर को ऊर्जा देता है। जब रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ती है, तो पैंक्रियाज सक्रिय होकर इंसुलिन का स्राव शुरू करता है।

इंसुलिन के आधार पर डायबिटीज को दो प्रकारों में बांटा जाता है :

इंसुलिन-निर्भर डायबिटीज (टाइप 1)

गैर-इंसुलिन-निर्भर डायबिटीज (टाइप 2)

टाइप 1 डायबिटीज वह होती है, जिसमें शरीर में इंसुलिन का निर्माण बिल्कुल नहीं होता। यह मुख्यतः बचपन या किशोरावस्था में होती है। इसमें रोगी को जीवनभर इंसुलिन के इंजेक्शन लेने पड़ते हैं।

टाइप 2 डायबिटीज में इंसुलिन का निर्माण तो होता है, लेकिन यह या तो अपर्याप्त होता है या फिर शरीर की कोशिकाएं उस पर प्रतिक्रिया नहीं करतीं। यह स्थिति अधिकतर अधेड़ आयु में विकसित होती है। इसमें मुंह से दी जाने वाली दवाएं दी जाती हैं और आवश्यक होने पर इंसुलिन भी दिया जाता है।

अब आप समझ सकते हैं कि इंसुलिन इस बीमारी के नियंत्रण में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन 20वीं सदी की शुरुआत तक हमारे पास इंसुलिन की कमी को दूर करने का कोई उपाय नहीं था।

यह वर्ष 1921 की बात है। टोरंटो यूनिवर्सिटी में शोधकर्ताओं की एक टीम ने एक ऐसी खोज की, जिसने डायबिटीज के इलाज को सदा के लिए बदल दिया। इस दल में कनाडाई चिकित्सक फ्रेडरिक बैंटिंग, मेडिकल छात्र चार्ल्स बेस्ट, बायोकैमिस्ट जेम्स कॉलिप और फिजियोलॉजिस्ट जे. जे. आर. मैकलियॉड शामिल थे।

चूंकि बैंटिंग एक फिजिशियन थे, उन्हें डायबिटीज के रोगियों का इलाज करते समय उन्हें तिल-तिल कर मरते देखना पड़ता था। उन्होंने एक सिद्धांत दिया कि अगर पैंक्रियाज को अलग करके उसके स्राव निकाले जाएं, तो उनमें वह तत्व मौजूद हो सकता है जो डायबिटीज के लक्षणों को नियंत्रित करे।

बैंटिंग और बेस्ट ने कुत्तों पर प्रयोग की श्रृंखला शुरू की। मई 1921 में उन्होंने एक कुत्ते के शरीर से पैंक्रियाज निकाल दिया, जिससे उसे डायबिटीज हो गई। फिर उसी पैंक्रियाज से निकाले गए स्राव उस कुत्ते को इंजेक्ट किए गए। परिणामस्वरूप, कुत्ते के रक्त में शुगर की मात्रा में उल्लेखनीय कमी आई।

जे. जे. आर. मैकलियॉड द्वारा उपलब्ध करवाई गई लैब में शोध चलता रहा। कुछ समय बाद जेम्स कॉलिप भी इस दल में शामिल हो गए और उन्होंने पैंक्रियाज स्राव को शुद्ध कर इंसानों पर प्रयोग योग्य बनाया।

23 जनवरी 1922 का वह ऐतिहासिक दिन आया, जब

लियोनार्ड थॉमसन नामक टाइप 1 डायबिटीज से पीड़ित बच्चे को पहला इंसुलिन इंजेक्शन दिया गया। वह बच्चा मृत्युशैया पर था, लेकिन इंजेक्शन के बाद उसका ब्लड शुगर सामान्य हुआ और स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आने लगा।

बैंटिंग और बेस्ट ने इंसुलिन का पेटेंट टोरंटो यूनिवर्सिटी को केवल एक-एक डॉलर में बेच दिया। बैंटिंग का मानना था कि यह खोज मानवता के लिए इतनी महत्वपूर्ण है कि इसका व्यवसायीकरण करना नैतिक नहीं होगा। वे चाहते थे कि हर जरूरतमंद को इंसुलिन सस्ती कीमत पर उपलब्ध हो।

इस खोज के लिए फ्रेडरिक बैंटिंग और जे. जे. आर. मैकलियॉड को 1923 का नोबेल पुरस्कार मिला। बैंटिंग ने अपनी पुरस्कार राशि चार्ल्स बेस्ट के साथ साझा की।

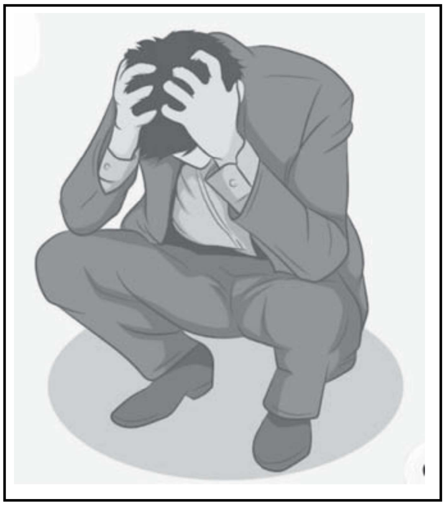
इंसुलिन की खोज ने चिकित्सा विज्ञान को हमेशा के लिए बदल दिया। डायबिटीज अब एक जानलेवा बीमारी नहीं रही, बल्कि एक नियंत्रित की जा सकने वाली स्थिति बन गई। टाइप 1 डायबिटीज से पीड़ित बच्चे जो पहले शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे, अब लंबा और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

यह खोज अब तक करोड़ों जानें बचा चुकी है – और आज भी बचा रही है।

तो, आपको यह कहानी कैसी लगी? कमेंट सेक्शन में जरूर बताएं और इसे बच्चों के साथ साझा करें – ताकि वे जान सकें कि मानवता के सच्चे नायक कौन होते हैं।

डिमेंशिया (दिमागी कमजोरी) का जोखिम बढ़ा सकता है अवसाद दोनों के जटिल संबंध

एक अध्ययन से पता चला है कि अवसाद आगे चलकर डिमेंशिया का जोखिम बढ़ा सकता है। डिमेंशिया से दुनिया भर में 5.7 करोड़ से अधिक लोग पीड़ित हैं। वर्तमान में इसका कोई इलाज नहीं है, इसलिए जोखिम को कम करने के लिए उन कारकों की पहचान और इलाज बेहद जरूरी है।अवसाद और डिमेंशिया के बीच संबंध जटिल है। पिछले अध्ययनों से पता चला है कि अवसाद से ग्रस्त लोगों में जीवन में आगे चलकर डिमेंशिया विकसित होने की अधिक संभावना होती है। नया शोध सभी मौजूद साक्ष्यों को साथ लाकर विस्तृत विश्लेषण पेश करता है।



शोध से जुड़े जैकब ब्रेन ने कहा है कि निष्कर्षों से यह संभावना बढ़ती है कि जीवन के अंतिम वर्षों में अवसाद न केवल एक जोखिम कारक हो सकता है, बल्कि डिमेंशिया के विकसित होने का प्रारंभिक संकेत भी हो सकता है। टीम ने एक व्यापक मेटा- विश्लेषण किया। मेटा विश्लेषण एक सांख्यकीय पद्धति है,जो कई अध्ययनों के परिणामों को मिलाकर एक अधिक विश्वसनीय समग्र अनुमान प्रदान करती है। उन्होंने उन समीक्षाओं में शामिल अलग अलग अध्ययनों से डाटा लेकर पुन: विश्लेषण किया जो पहले के कार्य में छूट गए थे ब्रेन ने कहा कि हमने अपना ध्यान से शुरू से उसे समय पर केंद्रित किया जब अवसाद का पता चला। चाहे 40 की उम्र में हो या आगे 60 की उम्र में।इससे शोधकर्ता को अधिक सटीक जानकारी देने में मदद मिली कि जीवन में विभिन्न चरणों में अवसाद किस प्रकार डिमेंशिया के जोखिम से जुड़ा है।

(अखबार दैनिक जागरण, आइ. ए. एन. एस.)

ज्योतिष और इतिहास

पानीपत की पहली लड़ाई में बाबर की सेना लगातार सफल रही थी। जबकि भारतीय शासक और सेनापति आक्रमण करने के लिए ज्योतिषियों से शुभ समय पूछ रहे थे। ज्योतिषियों ने तीन दिन बाद जवाबी हमले के लिए शुभ मुहूर्त निकाला और इन तीन दिनों में बाबर की सेना ने भारतीयों को नींबू की तरह निचोड़ दिया और भारत का इतिहास बदल दिया।

–नरेंद्र सिंह कपूर

धार्मिक अन्धविश्वासों के चलते हंसता खेलता पूरा परिवार खत्म...

-पेशकश : मा. अजायब जलालआना

बुराड़ी (दिल्ली) में एक ही परिवार के 11 सदस्यों द्वारा अन्धविश्वास के चलते एक साथ सामूहिक आत्महत्या करना विज्ञान की इस 21वीं शताब्दी में मानव सभ्यता पर एक बहुत बड़ा कलंक है। यह अलग बात है कि अन्धविश्वासों के कारण ऐसी सामूहिक आत्महत्याएं अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी होती रही है। ऐसा लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का न होना है।

मौजूदा व्यवस्था पूंजीवाद है जिसमें एक तरफ चन्द ऐसे कॉरपोरेट घराने हैं जिनके पास कुल संपति का मेहनतकश आबादी का खून चूसकर जमा किया गया बड़ा हिस्सा है और दूसरी तरफ मेहनतकश आबादी को मूलभूत सुविधाएं भी मुहैया नही हैं। चंद लोग पुलिस-फौज इत्यादि के माध्यम से बहुसंख्यक मेहनतकश आबादी का शोषण ज्यादा समय करते रहें, ऐसा संभव नही। पूंजीपति वर्ग का उत्पादन के तमाम साधनों पर कब्जा होता है, जाहिर है शैक्षणिक स्थानों से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर पूंजीपति वर्ग का ही कब्जा होता है।

ऐसे में पूंजीपति वर्ग द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए विभिन्न माध्यमों द्वारा धार्मिक अंधविश्वास, मध्ययुगीन रूढ़ियाँ-परम्पराएं, गैर-वैज्ञानिक दृष्टिकोणआदि का प्रचार-प्रसार कर मेहनतकश आबादी को विचारधारात्मक रूप से गुमराह करता है।ताकि शोषित तबका अपने असली शोषक को न पहचान सके और वो उसी में उलझा रहे। कर्मकांड, तंत्र-मंत्र, बलि देना, ज्योतिष-विद्या, राशिफल इत्यादि के जरिये अंधविश्वास फैलाने के साथ-साथ उन्हें अमीर होने के लिए विभिन्न प्रकार के सब्ज़बाग दिखाकर गुमराह किया जाता है।

खैर इसी संदर्भ में बुराड़ी कांड की कहानी में पता चला कि परिवार की बजुर्ग मुखीया नारायणी के दो बेटे भूपिंदर और ललित अपनी पत्नियों सहित पांच बच्चों के साथ एक ही घर में संयुक्त परिवार के रूप में रहते थे। उनकी विधवा बहन भी उनके साथ ही रहती थी।इस परिवार के दो सदस्य विद्यार्थियों को टीयूशन भी पढ़ाते थे, और एक बेटी मल्टिनैशनल कम्पनी में कर्मचारी थीं।

ये बात सामने आई है कि 45 वर्षीय ललित को आकाशबाणी हुई थी, उसके 10 वर्ष पहले मर चुके पिता की आत्मा उसके अंदर प्रवेश कर उसे विशेष आदेश दे रही थी।इन्हीं आदेशों के अधीन परिवार के सभी सदस्य उनका कहना मानते थे, और कोई भी सदस्य उन्हें किन्तु-परन्तु, प्रश्न नहीं करता था। वो कहता पिता जी ने बताया है, कि अगर आपने इस जीवन में मोक्ष प्राप्त करना है,तो घर की छतों में लगी कुंडियों में रस्से डालकर अपने गलों से बांधकर लटक जाना और पिता जी सही समय पर आकर हमें बचा लेंगे! जिससे हमें सदा के लिए मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी,और हम पुनः जिन्दा हो उठेंगे! सच में ऐसा ही एक जुलाई 2018 की रात को हुआ।

जब कोई धार्मिक अन्धविश्वासों के चलते जरूरत से ज्यादा धार्मिक हो जाये,तो उसे वह नशे के सामान लगने लग जाता है। उसके मस्तिष्क में अनेकों काल्पनिक विचार पनपने लगते हैं, ऐसे ही जैसे कोई नशे की ओवरडोज़ ख़ुराक ले लेने से हो जाता है। फिर वह आदमी मनोविज्ञान के रहस्यों में उलझता जाता है। वह अवचेतन और अर्धचेतन की कल्पनाओं को चेतन अवस्था में सत्य मानने लग जाता है।और घटनाओं को अंजाम देने लग जाता है।

हमारी धार्मिक पुस्तकों में पशु बलि, नरबलि से इच्छाओं की प्राप्ति होने का गुणगान गाया गया है।उन्हीं बातों का पालन करने वाले कुछ अंध-धार्मिक जुनूनी पैरोकार उन्हें दोहराते हैं, जैसे एक वर्ष पहले पंजाब के बठिंडा जिला के गांव कोट फतेह सिंह में बाबाओं, तांत्रिकों के तंत्र-मंत्रों में फंसी एक बूढी औरत ने अपनी बेटी के पुत्र होने की लालसा में अपने ही दो मॉसूम छोटे पौत्रों की बलि तक दे डाली...

कुछ वर्ष पूर्व हरियाणा के सिरसा जिला के गांव कालांवाली में एक औरत द्वारा अपने ही मासूम बच्चे की बलि

ले ली और उसके बाद किसी पूजा-आराधना, तंत्र-मंत्र के लिए उसका कलेजा तक निकालने की कोशिश हुई...ये ऐसी खौफ़नाक घटनाएं अंधविश्वासों से ग्रस्त इंसानी मानसिकता की देन और इस पूंजीवादी व्यवस्था में बड़ी मछली छोटी को हड़प रही है। तथा मध्यवर्ग इसका ज्यादा शिकार होता है।क्योंकि वह वैज्ञानी विचारों से अनजान अपनी समस्याओं का हल धार्मिक कर्मकांडों में से ढूंढता है।

इसी प्रकार इस परिवार के सदस्य ललित में जब उसके पिता की आत्मा आने लगी वह उसे अवचेतन, अर्धचेतन मन में आदेश देती रहती थी। परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार ललित अब मानसिक रोगी बन चुका था। क्योंकि वह पिछले 10 वर्षों से लगातार ऐसी ऊलजलूल हरकतें करने की आदत पड़ गई थी।

बाकी सभी परिवार के सदस्य धार्मिक अन्धविश्वास के कारण पिछलग्गू मानसिकता से ग्रस्त हो चुके थे। सम्मोहन सरीखे फांसी लेने के लिए रस्से, स्टूल व हाथ-मुँह बांधने तक की ड्यूटियों का निर्वाह सभी सदस्य कर रहे थे, और आखिर वो सभी एक साथ फांसी पर लटक गये!

ऐसी अंधविश्वासी घटनाओं के बाद अक्सर एक बात बाहर निकलकर सामने आती है, वो है वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी। क्योंकि स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली विज्ञान को विद्यार्थियों के व्यवहारिक जीवन में अपनाने की शिक्षा नहीं दी जाती। जिस कारण वो गैर-वैज्ञानिक बातों का खंडन करने में अक्षम रहते हैं।

अनेकों टीवी चैनलों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो,सोशल मीडिया द्वारा सुबह उठते ही आपके सामने ढेरों अंधविश्वासी बातों को परोसा जाता है। जिससे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग जल्दी शिकार हो जाते हैं।यहां मौजूदा राजनैतिक व्यवस्था और सांप्रदायक ताकतों द्वारा शिक्षण संस्थानों में गैरवैज्ञानिक विचारों का प्रचार-प्रसार कर रही है।

वहीं इस विज्ञान की शताब्दी में जरूरत है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों के अंदर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा किया जाए ताकि ऐसी घटनाओं, समस्याओं की पुनरावृत्ति न हो।

9416724331

मृतक शरीर का निस्तारण

गुरमीत अंबालवी

मृतक शरीर मेडिकल कालेज को प्रदान करने का उद्देश्य क्या है? क्या बस चिकित्सीय उपयोग या मानवता के हित में किए जाना वाला कार्य भर है?

तर्कशील सोसायटी मृतक शरीर चिकित्सीय उपयोग के लिए प्रदान करने के लिए व्यापक विचार रखती है यह अपने समस्त मानवीय कार्यों के साथ ही अंधविश्वासों से मुक्ति के विभिन्न टूल के साथ ही एक टूल भी है। अब तो बहुत से धार्मिक संगठन भी बॉडी डोनेशन करने लग गए हैं।उनमें और तर्कशील सोसायटी के बॉडी डोनेशन में सबसे बड़ा अंतर ये ही है कि मृतक शरीर को चिकित्सीय उपयोग के साथ ही ,मृतक से जुड़े जितने अन्धविश्वास हैं वो समाप्त हों। मृत्यु के बाद बहुत से धार्मिक पाखंड हर समाज में किए जाते हैं लोग उनसे मुक्त हों, वैज्ञानिक चिंतन को अपनाएं। कोई भी धार्मिक पाखंड न हो,परिवार को सूतक घर न समझा जाए,वह कर्मकाण्ड के नाम पर बेवजह के खर्चे से बचे,मौत के बाद भूत प्रेत की धारणा समाप्त हो। अगर सभी धार्मिक पाखंड ज्यों के त्यों रखते हुए केवल शरीर प्रदान करते रहने की परम्परा बनी रहेगी, तो ऐसे किसी कथित दान का कोई औचित्य नहीं होगा,समाज को आगे बढ़ने में कोई योगदान नहीं होगा।यह सिर्फ एक परम्परा बनेगा जैसे मृतक को दफनाना,जलाना, बहते पानी में बहाना या अन्य किसी भी तरीके से मृतक शरीर ठिकाने लगाना जैसा ही होगा। इसका कोई सामाजिक मूल्य नहीं होगा।

जातिवाद

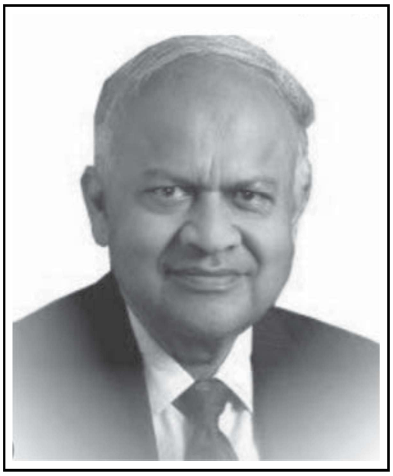
जातिवाद से बढ़कर मानवता का अपमान करने वाली कोई अन्य घटना नहीं हो सकती। जातिवाद एक विचार है, एक मनोस्थिति है। जातिवाद के उन्मूलन का अर्थ केवल कुछ लोगों की भौतिक बाधाओं को दूर करना नहीं है, इसका अर्थ मानसिक परिवर्तन भी है।

डॉ. बी. आर. अंबेडकर

(जाती विभाजन का उन्मूलन नामक लेख से)

डॉ. जयंत नार्लीकर को अंतिम सलाम!

ब्रह्मांड की उत्पत्ति से संबंधित विषयों में शोध करने वाले, वैश्विक स्तर के खगोलशास्त्री, विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जनसामान्य तक पहुँचाने वाले कार्यकर्ता, विज्ञान आधारित साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों को विज्ञान साहित्य की ओर आकर्षित कर मराठी में विज्ञान साहित्य को प्रतिष्ठा दिलाने वाले साहित्यिक व्यक्ति, शोध क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ाने वाले, आयु के उत्तरार्ध में भी सक्रिय रहने वाले प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डॉ. जयंत नार्लीकर का 75 वर्ष की आयु में 21 मई 2025 को निधन हो गया।कई भारतीय शास्त्रों की अंधविश्वास विरोधी भूमिका को नकारने वाले डॉ. नार्लीकर ने विज्ञान, तर्क, बुद्धिमत्ता और फैले हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जनमानस तक पहुँचाने के लिए 'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति' के साथ सक्रिय रूप से सहयोग किया है। डॉ. नरेंद्र दाभोलकर के साथ उन्होंने ग्रह-नक्षत्रों के फलादेश (फ़लित ज्योतिष)का खंडन किया। फलित ज्योतिष विरुद्ध प्रसार में लगे अंधविश्वास निर्मूलन समिति को उन्होंने बहुत बल प्रदान किया है।



विश्वविद्यालय में फलज्योतिष शिक्षण के विरोध में मुहिम में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया था। उनका स्पष्ट मत था कि अंधविश्वास से लड़ते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को खोना नहीं चाहिए, बल्कि सतत प्रयासों से उसे समृद्ध किया जाना चाहिए। विज्ञान केवल प्रयोगशाला में सीमित नहीं होता, वह सुदूर गाँवों तक पहुँचना चाहिए। उसके ज्ञान, उसके लाभ, उस पर किसी का एकाधिकार नहीं, ऐसा विज्ञान बाजारू नहीं होता - ऐसा उनका मत था। उन्होंने इसके लिए काफी प्रयास किए। उन्होंने विज्ञान की कहानियाँ, लेख, खगोल विज्ञान की जानकारी देने वाले लेख, विभिन्न समाचार पत्रों, मासिक पत्रिकाओं में लेख लिखे। विभिन्न जगहों पर व्याख्यान देकर वैज्ञानिक सिद्धांतों से सर्वसामान्यों की जिज्ञासा जागृत करते हुए विज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। इस कार्य के लिए अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति, मराठी विज्ञान परिषद जैसे संगठनों के साथ सक्रिय सहयोग किया। 1988 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने डॉ. नार्लीकर को पुणे विश्वविद्यालय (अब सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय) में अंतर विश्वविद्यालय केंद्र और खगोलशास्त्र केंद्र की स्थापना हेतु आमंत्रित किया। भौतिकी केंद्र ने उन्हें व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया था फिर इसके लिए उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता, प्रतिभा और रचनात्मकता समर्पित कर दी। वह न केवल विदेशों के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए बल्कि आम लोगों के लिए भी उन्होंने अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विज्ञान का व्यापक और व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कराया, जिससे सभी लोगों का विज्ञान से संबंध बने। डॉ. नार्लीकर के नेतृत्व में पुणे में शुरू की गई 'आयुका' संस्था ने भारत में विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. नार्लीकर ने ऐसा उत्कृष्ट कार्य किया है कि इस संस्था ने विज्ञान में शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। डॉ. नार्लीकर के नेतृत्व में आज भी देश-विदेश के विद्यार्थी और शोधकर्ता इसमें कार्यरत हैं।

डॉ. जयंत नार्लीकर हमेशा समाज के विकास में रुकावट बन चुकी परंपरा के विरोध में खड़े रहे हैं। चाहे वह फलित ज्योतिष हो, वास्तुशास्त्र का विरोध हो या अंधश्रद्धा के विरुद्ध संघर्ष हो, उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। अंधश्रद्धा और असामाजिकता से भरे हुए वातावरण में यदि वैज्ञानिक परंपरा, तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बनाए रखना है, तो यह बहुत आवश्यक है कि हम डॉ. नार्लीकर जैसे वैज्ञानिकों के विचारों और कार्यों का अनुकरण करें। तर्कशील सोसाइटी पंजाब और हरियाणा की ओर से डॉ. जयंत नार्लीकर को आदरांजलि अर्पित की जाती है।

द्वितीय प्रांतीय छात्र वैज्ञानिक जागरूकता शिविर ने अमिट छाप छोड़ी

- सुमीत अमृतसर

तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सर्वांगीण विकास करने तथा उनके व्यक्तित्व गुणों को विकसित करने के उद्देश्य से 7 से 9 जून तक तर्कशील भवन बरनाला में तीन दिवसीय दूसरा राज्यव्यापी विद्यार्थी वैज्ञानिक जागरूकता कैंप लगाया गया। इस कैंप में पंजाब भर से विभिन्न स्कूलों के 73 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रथम सत्र में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों और साथ उपस्थित विद्यालयों के अध्यापकों, अभिभावकों तथा तर्कशील नेताओं ने भी अपना परिचय दिया।

दूसरे सत्र में सोसायटी के राज्य संगठनात्मक प्रमुख मास्टर राजिंदर भदौड़ ने तर्कशील सोसायटी पंजाब की संरचना और कार्य योजना के बारे में पूरी जानकारी सांझा करते हुए कहा कि इस विद्यार्थी जागरूकता शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने जागरूकता शिविर के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों, स्कूल प्रमुखों और तर्कशील कार्यकर्ताओं की प्रेरणा और उत्साह की प्रशंसा की शिविर में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को ग़दरी गुलाब कौर, चार्ल्स डार्विन, ब्रूनो,डॉ दाभोलकर, डॉ. कावूर और कृष्ण बरगाड़ी छह अलग-अलग समूहों में विभाजित किया गया और उन्हें समूह नेता के मार्गदर्शन में एक-दूसरे के साथ चर्चा करने, विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछने और मंच से अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

तीसरे सत्र की विशेष वक्ता प्रिंसिपल हरिंदर कौर ने विद्यार्थियों को 'खेल-खेल में विज्ञान' के माध्यम से भौतिक एवं रासायनिक क्रियाओं तथा छोटे-छोटे खेलों के माध्यम से रोचक ढंग से विज्ञान एवं वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी दी। चौथे सत्र में साइबर क्राइम विशेषज्ञ मनदीप सिंह मल्ली ने 'साइबर क्राइम' पर अपने विचार सांझा किए तथा विद्यार्थियों को नशे, अश्लीलता, पबजी और फ्री फायर गेम तथा साइबर क्राइम से संबंधित गतिविधियों से दूर रहने तथा सोशल मीडिया पर केवल रचनात्मक पोस्ट ही डालने और देखने के लिए प्रेरित किया।

शाम के सत्र में तर्कशील नेता राम कुमार पटियाला व बिंदर धनौला ने विद्यार्थियों को हाथ की सफाई के ट्रिक बताए तथा पाखंडी बाबाओं, साधकों व ज्योतिषियों के झांसे से बचने के लिए प्रेरित किया।

शिविर के दूसरे दिन 8 जून के प्रथम सत्र में पंजाबी तर्कशील पत्रिका के प्रधान संपादक राजपाल बठिंडा ने प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन के जैविक विकास के सिद्धांत को समझाते हुए कहा कि इस धरती पर जीवन का विकास लाखों वर्षों की वैज्ञानिक और प्राकृतिक प्रक्रिया का परिणाम है और सभी जीव-जंतु, जानवर, पौधे और यहाँ तक कि स्वयं मनुष्य भी इसी विकास प्रक्रिया से विकसित हुए हैं।

दूसरे सत्र में प्रसिद्ध कला विशेषज्ञ गुरप्रीत आर्टिस्ट बठिंडा ने जीवन में कला के महत्व को समझाते हुए कहा कि विद्यार्थियों को जीवन में कुछ नई रचनात्मकता, संवेदनशीलता, नैतिकता और मानवतावादी मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए गायन, नाटक, चित्रकला, नृत्य, साहित्य पढ़ने, लेखन आदि कलाओं में रुचि विकसित करने की बहुत आवश्यकता है।

तीसरे सत्र में वरिष्ठ तर्कशील नेता चन्नण वांदर और मास्टर राजिंदर भदौड़ ने विद्यार्थियों को सम्मोहन की व्यावहारिक प्रक्रिया से अवगत करवाया और बताया कि इस मनोविज्ञानिक विधी के माध्यम से भय, भय, मानसिक तनाव और बुराइयों पर काबू पाया जा सकता है। चौथे सत्र में प्रसिद्ध लेखक और तर्कशील नेता दीप दिलबर ने विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर रचनाएं लिखने के रोचक टिप्स बताए, जबकि युवा नेता रविंदर कौर और अमीश बागपुर ने 'क्या पढ़ें, कैसे पढ़ें' विषय पर बोलते हुए उन्हें वैज्ञानिक, क्रांतिकारी और अन्य गुणवत्तापूर्ण साहित्य का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

पांचवें सत्र में सिकंदर सिंह ढुडीके ने अपने जीवन के कड़वे अनुभवों के आधार पर कहा कि नशे की लत के मुख्य कारण मुख्य रूप से प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारक हैं और विद्यार्थियों को नशे से बचने के लिए अच्छे दोस्तों की संगति करने, अपने माता-पिता की सलाह का पालन करने के लिए कहा। छठे सत्र में राष्ट्रीय अवार्डी मास्टर करमजीत सिंह ललतों ने विद्यार्थियों को महिला विरोधी, हथियारों वाले, नशे और अश्लीलता से भरपूर गीतों को सुनने के बजाय सभ्य और क्रांतिकारी गीतों और संगीत से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

शिविर के दूसरे व तीसरे दिन प्रातः 6 बजे प्रांतीय तर्कशील नेता सुरजीत टिब्बा के नेतृत्व में विद्यार्थियों को खुले

मैदान में शारीरिक व्यायाम करवाया गया तथा उन्हें अच्छे स्वास्थ्य व आहार के बारे में विशेष रूप से शिक्षित किया गया।

शिविर के तीसरे व अंतिम दिन 9 जून को प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता व प्रख्यात विद्वान डा. राजिंदर पाल सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ अवसरवादी व सांप्रदायिक ताकतों ने सोची-समझी साजिश के तहत शहीद भगत सिंह के व्यक्तित्व व क्रांतिकारी विचारों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है। कभी उन्हें टोपी, पगड़ी व आतंकी युवक के विवाद से जोड़ा जाता है तो कभी उन्हें किसी धर्म विशेष से जोड़कर आस्तिक साबित करने की कोशिश की जाती है, लेकिन सच्चाई यह है कि शहीद भगत सिंह का किसी धर्म, आत्मा, ईश्वर, जाति, धार्मिक पूजा-पाठ व नियति में कोई विश्वास नहीं था और उन्होंने अपनी महान कृति 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' में इस बात को बखूबी उजागर किया है। शहीदे आजम कहा करते थे कि पिस्तौल व बम कभी क्रांति नहीं लाते बल्कि क्रांति की तलवार विचारों की धार पर तेज होती है।

दूसरे सत्र में मास्टर राजिंदर भदौड़ ने समाज में तथाकथित भूत-प्रेत व मानसिक बीमारियों के प्रभावों पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि भूत-प्रेत व आत्माओं का अस्तित्व नहीं होता, बल्कि सामाजिक असमानता व अन्याय पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली मानसिक बीमारियां हमारे पूरे समाज, स्वास्थ्य व कार्य प्रणाली को कमजोर व नष्ट कर देती हैं। इसलिए हमें पाखंडी पंडितों व ज्योतिषियों के बहकावे में आकर लूटने की बजाय अपनी सोच को वैज्ञानिक व मजबूत बनाने की जरूरत है।

तीसरे सत्र में विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई तथा विजेता टीमों को मेडल व तर्कशील पुस्तकें देकर सम्मानित किया गया।

चौथे और अंतिम सत्र में छह समूहों के छात्र नेताओं प्रिंस, अजय शर्मा, प्रितपाल सिंह, साहिल, बरिंदर सिंह और एकमप्रीत सिंह के अलावा विद्यार्थी अमानतप्रीत सिंह, गुरप्रीत, अमीश बागपुर और ओम प्रकाश ने मंच से अपने विचार साझा करते हुए कहा कि इस जागरूकता शिविर में विभिन्न विषयों पर जानकारी प्राप्त करने से उनकी वैज्ञानिक सोच और आत्मविश्वास बढ़ा है और उन्होंने बहुत कुछ नया सीखा है। उन्होंने तर्कशील सोसायटी द्वारा किए गए प्रबंधों पर संतोष व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इस तरह के वैज्ञानिक जागरूकता शिविरों में पूरे उत्साह के साथ भाग लेने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर तर्कशील सोसायटी की राज्य कमेटी ने जागरूकता शिविर के मुख्य वक्ताओं को पुस्तकों का सेट देकर सम्मानित किया तथा भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रशंसा पत्र दिए गए। इस अवसर पर संगठनात्मक प्रमुख मास्टर राजिंदर भदौड़ ने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों, स्कूल प्रमुखों तथा तर्कशील कार्यकर्ताओं का इस शिविर को सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया। शिविर में तीन दिनों तक चाय, पानी, भोजन सहित सभी प्रबंधों की जिम्मेदारी तर्कशील कार्यकर्ता बिंदर धनौला, कुलदीप नेनेवाल, गुरप्रीत शैहणा व राजेश अकलिया ने संभाली, जबकि विभिन्न सत्रों के दौरान मंच संचालन की जिम्मेदारी राज्य कमेटी के नेता जसवंत मोहाली, सुखविंदर बागपुर, राम स्वर्ण लक्खेवाली, गुरप्रीत शैहणा, सुरजीत टिब्बा व मोहन बडला ने संभाली।

इस अवसर पर राज्य कमेटी नेता हेम राज स्टैनन, राजेश अकलिया, सुमीत अमृतसर, कुलजीत डंगरखेड़ा के अलावा सहयोगी केवल कृष्ण जीदा, जोन नेता संदीप धारीवाल भोजा, अजीत परदेसी, राम कुमार पटियाला, कुलवंत कौर पटियाला, बूटा सिंह वाक्फ, अशोक कुमार रोपड़, ज्ञान सिंह बठिंडा, मास्टर लक्खा सिंह मानसा, भीम राज,रणधीर गिलपत्ती, खुशवंत बरगाड़ी, विनोद बरेका, विश्व कांत, पाल बरगाड़ी, जिंदर बरगाड़ी, हरप्रीत सिंह बठिंडा शामिल थे।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की मीटिंग 18 मई 2025 को सम्पन्न

तर्कशील सोसाइटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक और वार्षिक सम्मेलन सरदार प्रीतम सिंह मेमोरियल स्कूल बढ़ सुई, गुहला चीका, जिला कैथल में आयोजित हुईं। सम्मेलन की अध्यक्षता उप प्रधान फरियाद सानियाना व संचालन महासचिव बलजीत भारती ने किया। उपरोक्त के साथ साथ राज्य कमेटी सदस्यों परविंदर सिंह, कामरेड कृष्ण गर्ग, अनुपम सिंह, कृष्ण राजौंद, ईश्वर सिंह, व वरिष्ठ तर्कशील साथी चंद्र सैनी ने सांगठनिक मुद्दों पर चर्चा की। सभी इकाइयों के प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया। फरियाद सानियाना व रामप्रसाद ने रासायनिक प्रक्रिया संबंधी ट्रिक्स दिखाए। कार्यक्रम के आयोजन में गुहला चीका इकाई के प्रधान गुरविंदर सिंह व उनकी टीम ने अहम भूमिका निभाई। जुलाई मीटिंग उकलाना में करने बारे व भवन निर्माण बारे राज्य कार्यकारिणी की बैठक शीघ्र बुलाने बारे सहमति बनी। यह भी निर्णय लिया गया कि सर्दियों में किसी स्थान पर तर्कशील मेले का आयोजन किया जाएगा।

-रिपोर्ट बलजीत भारती

अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर साइंस समर कैंप के तहत नेचर वॉक का आयोजन

22 मई, अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर टीटीपीए लाइब्रेरी, जमशेदपुर (झारखंड) द्वारा आयोजित साइंस समर कैंप के तहत प्रतिभागी बच्चों को सिदगोड़ा स्थित नेचर ट्रेल में नेचर वॉक पर ले जाया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य बच्चों को प्रकृति के प्रति जागरूक बनाना और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को वैज्ञानिक नजरिए से देखने के लिए प्रोत्साहित करना था।

नेचर वॉक के दौरान बच्चों ने पार्क में मौजूद विविध जैव-विविधता जैसे विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े और उनके घर, तितलियां, पक्षी, चट्टानें, पत्तियां और मशरूम आदि का बारीकी से अवलोकन किया। बच्चों को प्रोत्साहित किया गया कि वे इन जीवों व प्राकृतिक तत्वों के व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखें, जिज्ञासा के साथ सवाल पूछे।

इस अनुभव को और रोचक बनाने के लिए बच्चों ने पार्क में गिरी हुई विभिन्न प्रकार की पत्तियां, पत्थर, फूल, बीज और फल आदि का संग्रह भी किया। वॉक के बाद उन्हें निर्देश दिया गया कि वे इन एकत्र की गई वस्तुओं को चार्ट पेपर पर सजा कर एक पोस्टर के रूप में प्रस्तुत करें। बच्चों ने समूहों में बैठकर रचनात्मकता का परिचय देते हुए सुंदर और आकर्षक पोस्टर बनाया। इस नेचर वॉक को सफल बनाने में स्वाति कुमारी, प्रेम शर्मा, शशांक शेखर, अंकुर शाश्वत और विकास कुमार का विशेष योगदान रहा।

पलासबनी गांव, पूर्वी सिंहभूम, झारखंड में पांच दिवसीय Science Summer Camp

इस कैंप में लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया। बिदु चंदन ट्रस्ट द्वारा आयोजित कैंप का मुख्य उद्देश्य विभिन्न रोचक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में वैज्ञानिक चेतना एवं तर्कशील सोच विकसित करना है। इसके अलावा आसपास की जैवविविधता के प्रति जागरूक भी करना है। पहले दिन की शुरुआत में राष्ट्रीय युवा तीरंदाज स्वाति कुमारी ने बच्चों को उपयोगी व्यायाम करवाए। इसके बाद मस्तीभरे खेल और आइस-ब्रेकर गतिविधियाँ कराई गईं, जिनसे बच्चों में अत्यंत उत्साह देखने को मिला। इसके बाद बच्चों के साथ एक चर्चा सत्र आयोजित किया गया, जिसमें उनके दैनिक जीवन से जुड़े अंधविश्वासों, विश्वासों और मान्यताओं को समझने का प्रयास किया गया। विशेष रूप से भूत-प्रेत से जुड़ी उनकी सोच और उन्हें मानने के कारणों को जानने की कोशिश की गई। सभी बच्चों ने बताया कि वे भूत में विश्वास रखते हैं। दो बच्चों ने यह भी कहा कि उन्होंने भूत को देखा है, जबकि अन्य बच्चों ने स्वीकारा कि भूत को उन्होंने कभी नहीं देखा फिर भी वे उसमें विश्वास करते हैं। एक बच्ची ने कहा कि रात में पेड़ों में भूत नहीं होते, बल्कि वे रात में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। सत्र के अंत में विज्ञान और विश्वास के बीच अंतर को लेकर बच्चों को बताया गया कि विज्ञान अनुभव और प्रमाणों पर आधारित होता है, जबकि विश्वास अक्सर परंपरा या सुनी सुनाई बातों पर आधारित होता है। विज्ञान समर कैंप के फैसिलिटेटर के तौर पर स्वाति, अंकुर, विकास, विनय मौजूद रहे । इसके अलावा बिदू चंदन ट्रस्ट से जुड़े पदाधिकारी, शिक्षक, ग्राम वासी शामिल थे।

पाश और कविता

पाश हमारे समय के महान कवि हैं। उन्हें युग कवि कहा जाता है। देश-दुनिया में शायरी की बुलंद आवाज़ के लिए जाने जाते हैं। वो कविता हो गए और कविता हमेशा के लिए उनकी हो गई। एक प्रशासनिक अधिकारी अपने प्रशिक्षण के दौरान बीते पलों को याद करते हुए कहते हैं कि दुनिया के 10 अग्रणी विश्वविद्यालय में से एक जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी दिल्ली के मुख्य गेट पर युग कवि पाश की लिखी कविता हर पंजाबी प्रेमी के लिए गर्व की बात है। राजधानी के प्रमुख विचारक प्राचार्य आनंद अपूर्वर्पानंद ने कहा है कि इस विश्वविद्यालय के हर विभाग की द्वार पर पाश की कविताओं के अंशों से भरी पड़ी हैं। उनके अनुसार पाश को पढने वाला हिंदी में भी बहुत बड़ा पाठ वर्ग है, जोकि पाश को अपना कवि मानते हैं। एशिया के प्रतिष्ठ पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध निर्भीक पत्रकार रवीश कुमार पाश की प्रसिद्ध कविता सबसे खतरनाक को सी.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम से हटा देने पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि सरकार पाश की कविता से डरती है, क्योंकि वो जगाती है और रास्ता दिखाती है। पाश की कविता में सपने हैं, उड़ान है, ऊपर उठने की प्रेरणा है और जीवन /समाज को बदलने वाली चेतना की रोशनी है, यही कल का धर्म है।



आज की सच्चाई

- अवतार पाश



आज के समय में पाए जाने वाले अंधविश्वास अतीत की परंपराएं हैं, लेकिन यह ऐसा विश्वास है जिसकी जांच नहीं की गई है। ऐसे अपुष्ट ज्ञान को विज्ञान के युग में बने रहने का कोई औचित्य नहीं है। यदि यह अभी भी बने हुए हैं तो इसके दो कारण हो सकते हैं- एक तो ज्यादातर लोगों की अज्ञानता, और दूसरा कुछ लोगों की चालाकी जिनसे वे लोग लाभ उठाते हैं, जिनका उद्देश्य ही अंधविश्वास फैलाना है।लोग धर्म पर सिर्फ इसलिए विश्वास करते हैं ताकि उनका परिवार खुश रहे और उनकी आर्थिक स्थिति सुधरे। इसलिए नहीं कि उनमें ब्रह्माण्ड, सृष्टि और जीवन के मूलभूत आधारों और कारणों को जानने की कोई दार्शनिक जिज्ञासा है। लोगों के मन में गुरु, पीर और भगवान की अवधारणा दरअसल एक अच्छे डॉक्टर, बैंक या पुलिस थाने की तरह है और वे उनसे अपनी वही जरूरतें पूरी करवाना चाहते हैं,जो इन सब से होती हैं।अन्य भ्रमों की तरह शिक्षित होना भी वास्तव में एक भ्रम है।यह गलत धारणा है कि शिक्षित होने का मतलब ज्ञानवान होना है।आज जो हमारी शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था है

उसके अनुसार मैट्रिकुलेशन, बी.ए., ऐम.ए., बी.ऐस.सी. या ऐम.ऐस.सी. करने का मौलिक विचार या रचनात्मक ज्ञान से कोई संबंध नहीं। परीक्षाएँ तो बस स्मरण शक्ति का प्रदर्शन ही होती हैं ,उनसे ज्ञान को नही जाँचा जाता । जिन्होंने कला विषयों के साथ बी.ए.या एम.ए. किया है उन्होंने घटनाओं की बारीकीयों को समझना ही क्या , यहाँ तक कि विज्ञान के विषय को पढने वाले भी केवल प्रकृति के नियमों की यांत्रिक जानकारी ही प्राप्त करतें हैं, ज्ञान नाम की चीज उनमें भी नहीं आती। सबसे बड़ी आवश्यकता वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाज से संबंधित महान उद्देश्य की होती है। जोकि आम लोगों के पास होते ही नहीं । अधिक से अधिक कमाई करने की इच्छा हर जगह है। आर्थिक समग्रता का बौद्धिकता से कोई संबंध नहीं है।

युवा और राजनीति



लगभग सभी लोग इस बात से सहमत हैं कि हमें ऐसे प्रतिबद्ध युवाओं की आवश्यकता है जो स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन देने के लिए उत्सुक हों। क्या हम बुजुर्गों में ऐसे लोग ले सकते हैं? क्या हम अपने बीच से ऐसे लोगों को ले सकते हैं जो अपने परिवारिक और सांसारिक मामलों में वयस्त हों? हम युवाओं में से ऐसे लोगों को चुन सकते हैं, हम जिस भी समाज में रहते हैं, वहां विवादों को निपटाने के लिए दो रेफरी होते हैं, एक सरकार और दूसरी अदालतें। यदि किसी समाज में एक पीढ़ी को बहुत कुछ मिल रहा है तो यह रेफरी की रियायतों के कारण नहीं है, बल्कि पिछली पीढ़ियों के संघर्ष का फल है। यह प्राप्त किया हुआ उपहार तब खो जाता है जब युवा पीढ़ी लापरवाह हो जाती है। भारतीय सार्वजनिक संस्थाओं के एक-एक करके निजीकरण की कहानी इसका ताजा उदाहरण है। ऐसी चीजें तब होती हैं जब विकास की दिशा के लिए बनाई जा रही नीतियों या लिए जा रहे निर्णयों की लगातार निगरानी नहीं की जाती।

जो लोग अभी तक इस कीचड़ में नहीं फंसे हैं। केवल वे छात्र या युवा ही इस दिशा की ओर रुख करेंगे जिन्हें थोड़ा व्यावहारिक ज्ञान है। परीक्षा में पास होने के लिए गणित या भूगोल के प्रश्नों को रटने से काम नहीं चलेगा। आज जो भी देश स्वतंत्र हैं, वहां युवाओं ने स्वतंत्रता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्या युवा स्वतंत्रता संग्राम से बचकर देश और अपना अस्तित्व बचा पाएंगे?

बेशक, उन्हें अध्ययन करना चाहिए। लेकिन इसके साथ ही उनमें राजनीतिक सूझबूझ भी होनी चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे मैदान में कूद सकें और इस मुद्दे के लिए बलिदान दे सकें। इस स्थिति से बचने का कोई और रास्ता नहीं है।

(शहीद भगत सिंह द्वारा 1928 में 'किरती' पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में से)

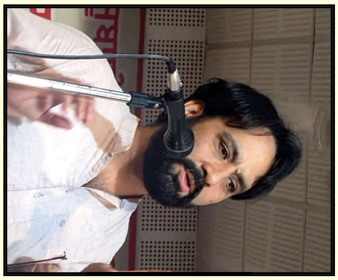
जुलाई-अगस्त 2025 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 12 अंक 4

द्वितीय प्रांतीय छात्र वैज्ञानिक जागरूकता कैंप–2025

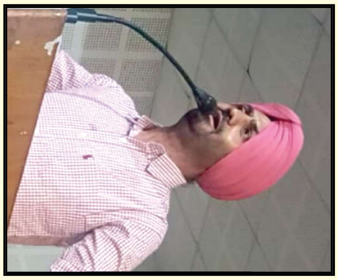


जागरूकता कैंप में शामिल विद्यार्थी व सूबाई कार्यकारिणी

विद्यार्थियों को संबोधित करते अतिथि वक्ता



गुरप्रीत आर्टिस्ट



करमजीत ललतों



रविंदर कौर



डा. राजिंदरपाल

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....